परिच्छेद–(एक)

तैयारी–ए–मकानात–अनुभाग–(1)

पेशः–ए–खेमः व छतरी साज़ी

अ़जाइबी (स्त्री) रावटी की क़िस्म का नौ दर्जे का शाही खेमा जिसमें 5–चहार गोशा और चार मख़रूती[1] शक्ल की रावटियाँ होती हैं। देखें रावटी।
([1]गाजर की शक्ल की)

एक चोबाछोलदारी (स्त्री) देखें सराचा

कलाँ बार (पु0) मंडल मामूल से बड़ा दरबारी शामियाना देखें तस्वीर मंडल पे0

क़लन्दरी (स्त्री) देखें छोलदारी।

कमरबल्ला (पु0) देखें बलेंडा।

कम्बल (पु0) देखें खोई।

क़नात (स्त्री) कपड़े का तैयार किया हुआ पर्दा जो खेमें या रावटी के अतराफ[1] बतौर दीवार खड़ा किया जाये है। **तानना, खड़ा करना, लगाना**
([1]चारों तरफ)

कलालबार (पु0) देखें कलाँ बार।

ख़रगाह (पु0) दो चोबा छोलदारी की क़िस्म का मगर इससे किसी क़दर बेहतर वज़अ[1] का एक दरा और दो दरा डेरा देखें तस्वीर
([1]आकार)

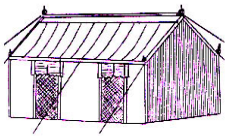
ख़रगाह दो दरी

ख़ल्लासी (पु0) खेमा खड़ा करने वाला पेशेवर मज़दूर।

खलीता (ख़लीतः) (पु0) शलीतः ख़ेमा व लवाज़मात[1]–ए–खेमा रखने का थैला। सही ख़रीता।
([1]अतिरिक्त सामग्री)

ख़ेमा (ख़ेमः) (पु0) कपड़े की मोटी और मज़बूत चादर या चमड़े का आ़ज़ी [1] क़याम[2] के लिये बनाया हुआ मकान एक या दो थम होते है जो इस्तिलाहन् चोब कहलाते हैं। जो रावटी या खेमा एक चोब पर ताना जाता है उसको एक चोबा और जो दो चोब पर खड़ा किया जाता है दो चोबा कहलाता है। **तानना, खड़ा करना, लगाना** देखें तस्वीर
([1]अस्थाई), ([2]निवास)

खेमगी (पु0) खेमों की हिफ़ाज़त[1], दुरूस्ती और मरम्मत करने वाला शख़्स। 2) वह बड़ा सुवा जिससे ख़ेमा सिया जाता है।
([1]सुरक्षा)

खेमागाह (खेमःगाह) (पु0) खेमे लगाने का मैदान, मुक़ाम या जगह।

खोई (स्त्री) बोरिया या इसी क़िस्म की किसी चीज़ का समोसानुमा यानी तिकोनी शक्ल का बना हुआ आस्रा जो चरवाहे और दीगर[1] ज़राअ़त[2] पेशा मज़दूर बारिश और धूप से बचाव के लिए सरीर ओड़ लेते हैं।
([1]दूसरे), ([2]काश्तकार)

और जिस की मुफ़लिसी ने शर्म–ओ–हया खोई
है उसके सिर पर सिरकी या बोरियों की खोई।

गुर्सी (स्त्री) देखें खोई।

गुलू (पु0) चोब के सिरे में डाला जाने वाला, खेमे का वस्ती[1] सुराख़ जिसके गिर्द मज़बूती के लिये चमड़े की गोट सिली होती है।
([1]बीचका)

घोंगी (स्त्री) देखें गुरसी।

चोब (स्त्री) (सराचा का बांस) छोलदारी या रावटी (खेमे) को ऊपर उभारे रखने वाला ख़म्बा जो छोटे खेमे में एक और बड़े में दो होते है। देखें तस्वीर

छोलदारी (स्त्री) अद्ना[1] मुलाज़िम और चौकीदार वगैरा के आ़र्ज़ी[2] क़याम गाह का एक चोबा और दो चोबा डेरा। देखें तस्वीर

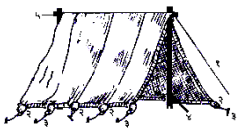
दो चोबा छोलदारी

जमकोड़ा (पु0) देखें खोई।

टोपी (स्त्री) देखें गुलू।

ड़ेरा (पु0) पंजाबी में ड़ेरा मकान को कहते हैं। इस्तिलाह–ए–आम[1] में यह लफ़्ज़[2] खेमे के लिये इस्तेमाल किया जाता है। देखें खेमा।
([1]आम भाषा), ([2]शब्द)

तम्बू (पु0) देखें ख़ेमा।

तीरा (पु0) देखें बलेंडा।

तनाब (तनाब) (स्त्री) ख़ेमा या शामियाना वग़ैरा को तानने की रस्सी, देखें दो चोबा छोलदारी।

दरबारी शामियाना (पु0) मामूल से ज़्यादा बड़ा शामियाना, देखें शामियाना।

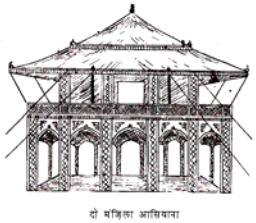
दो मंज़िला आशियाना

दो आशियाना (पु0) दो मंजिला खेमा

दो चोबा ख़ेमा (चोबःखेमः) (पु0) देखें छोलदारी

नमगीरा (नमगीरः) (पु0) देखें शबनमी।

पाल (स्त्री) चारों त़रफ क़नात से बन्द एक या दो दरवाजे वाला छोटा शामियाना, देखें शामियाना।

बादरीसा (बादरीसः) (पु0) ख़ेमे की चोब के सिरे पर लगा हुआ चोबी[1] लट्टू या गिरवा जिस पर खेमे का मियाना[2] टिका रहता है।–देखें तस्वीर मंडल।

([1]लकड़ी का), ([2]मध्य का बाँस)

बाला (पु0) तनाबो के सिरे बांधनें को शामियाना या ख़ेमे की सरगाह के किनारे–किनारे मिले हुए रस्सी के फंदो में का हर एक फंदा। देखें तस्वीर छोलदारी पे0 1

बेचोबा (पु0) देखें शामियाना

बलैंडा (पु0) दो चोबा छोलदारी के अर्ज़ को उठाए रहने वाली दोनों चोबों के दरम्यान सिरे पर लगी हुई मियाल (बल्ली) देखें तस्वीर–छोलदारी पे0 4

मंड़ल (पु0) देखें शामियाना 4

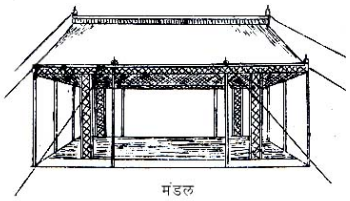
मंडल

मेख़चू (पु0) ख़ेमें की मेंखे[1] ठोंकने का चोबी हथौड़ा।

([1]कीला)

मोगरी (पु0) देखें मेखचू।

मोमजामा (पु0) देखें खोई।

रावटी (स्त्री) बरामदेदार एक चोबा दो चोबा तम्बू–गालिबान् हिन्दी लफ़्ज[1] रावत बमानी[2] रावत, बहादुर या सिपाही से रावटी यानी सिपाही की क़याम गाह[3] बन गया है।

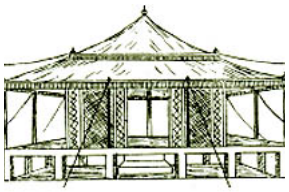
खेमा (रावटी)

([1]शब्द), ([2]जिसका अर्थ), ([3]बैरक)

शामियाना (शामियानः) (पु0) बेचोबा चारों तरफ से खुला हुआ बारादरी की वज़अ[1] पर कपड़े का बना हुआ साइबान जो अमूमन[2] मरब्बअ[3] शक्ल का और चारो तरफ सुतूनों पर तना होता है। मामूल से ज़्यादा बड़ा और बरामदेदार शाही शामियाना मंडल या कलालबार कहलाता है। (तानना, खड़ा करना लगाना के साथ बोला जाता है) देखें तस्वीर मंडल।

शामियाना

([1]आकार), ([2]प्रायः), ([3]चौकोर)

शबनमी (स्त्री) ओस (शबनम) से बचाव का कपड़े का छोटा सा साइबान शामियाना की वज़अ[1] देखें तस्वीर शामियाना।

([1]आकार)

सरा पर्दा (पर्दाः) (पु0)– शाही खेमे के दरवाजे के सामने का बड़ा पर्दा मज़ाजन्[1] शाही खेमा।

([1]लक्षितार्थ)

सराचा (सराचः) (पु0) खाँचा। एक चोबा मामूली छोटा खेमा।

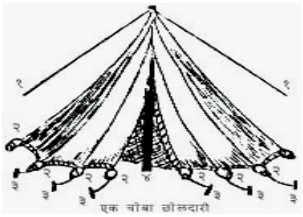
एक चोबा छोलदारी

अनुभाग–(2) पेशः–ए–छतरी साज़ी

आफ़ताबी (स्त्री)–तफ़रीह गाहों और चमनों[1] में पु0ख़्ता[2] बनी हुई बहुत बड़ी छतरी। शाही सवारी के साथ का साइबान। देखें साइबान ।

([1]उद्यानों), ([2]पक्की)

ग़िलाफ़ (पु0) छतरी की कपड़े की पोशिश। **उतारना, चढ़ाना** के साथ बोला जाता है।

घारा (पु0) छतरी के खटके का घर या सुराख़। तान के मुठ्ठे का खाँचा या खाँचे।

चतर या छतर (पु0) बड़ी छतरी–यह लफ़्ज[1] मख़सूस[2] शाही तख़्त के ऊपर साया रखने वाली छतरी के लिये है।

([1]शब्द), ([2]विशेष रूप से)

चतर तौक़ (पु0) देखें साइबान।

छाता (पु0) बड़ी छतरी।

छतरी (स्त्री) रास्ता चलने में धूप और बारिश से बचाव के लिये कपड़े का कुब्बा नुमा बना हुआ आसरा जो आहनी[1] तानों पर तैयार किया जाता है।

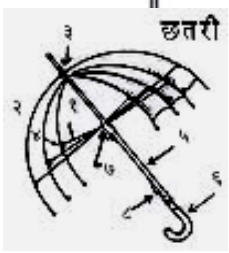

बच्चा छतरी की छोटी तान जो बड़ी तान की आड़ होती है। **तान** छतरी की आहनी कमान या कमानें जिस पर कपड़ा मढ़ा जाता है। **टिकट** छतरी के कपड़े के दरमियान[2] सुराख़ की गोट जो सुराख़ के अतराफ़[3] ग़िलाफ़ की हिफाज़त[4] के लिए लगायी जाती है। **टिकली** (थगली) छोटी तान और बड़ी तान के जोड़ पर लगी हुई कपड़े की कतरन। **डंडी** छतरी की छड़ जो खेमे की चोब के

मानिंद[5] वस्त[6] में होती है और जिस पर छतरी की ठाट कायम रहता है। **खटका** छतरी को खुला रखने वाली कमानी यानी जिस पर खुली हुई छतरी का मुठ्ठा रुका रहता है। **मुठ्ठा** छतरी की तानों के सिरे फँसा कर बंदिश करने की शाम (आहनी हल्क़ा)[7]। **मूठ** छतरी की छड़ (डंडी का दस्ती)। **डालना, लगानाए भरना, जड़ना, बाँधना** के साथ बोला जाता है।

([1]लोहे का), ([2]मध्य), ([3]चारों तरफ), ([4]सुरक्षा), ([5]समान), ([6]मध्य), ([7]तीलियों का घेरा)

छतरी साज़ (पु0) छतरी बनाने वाला कारीगर।

टिकट (पु0) देखें छतरी। प्रयोग–3

टिकली (स्त्री) देखें छतरी। प्रयोग–4

डंडी (स्त्री) देखें छतरी। फ़िक़रा–5

ढाँच (पु0) छतरी का ठाठ पिंजर। **बनाना, बाँधना**

तान (स्त्री) देखें छतरी। प्रयोग 2

बच्चा (बच्चः) (पु0) देखें छतरी। प्रयोग 1

मुट्ठा (पु0) देखें छतरी। प्रयोग 7

मन तौक़ (पु0) देखें साइबान।

मूठ (स्त्री) देखें छतरी। प्रयोग 8

सर बाँधना– छतरी के तानों के आहनी हल्क़े यानी मुठ्ठे में कसना।

साइबान

साइबान (पु0) घोड़े की सवारी के वक़्त उमरा[1] के सिर पर साया करने की एक क़िस्म की ओट। इसको आफ़ताबी, चतरतौक़ और मनतौक भी कहते हैं।

([1]अमीरों)

अनुभाग–(3) पेशा–ए–छप्पर बंदी व खपरैली

अरौनी (स्त्री) छप्पर या खपरैल की ओलती के नीचे जड़ी हुई चोबी[1] झालर जो अद्ना[2] क़िस्म के काम में, तख्ते की और आलाकामों में खुशनुमा[3] कटाव और मुनब्बत[4] कारी के काम की होती है। ([1]लकड़ी का), ([2]मामूली), ([3]सुन्दर), ([4]बेलबूटे)

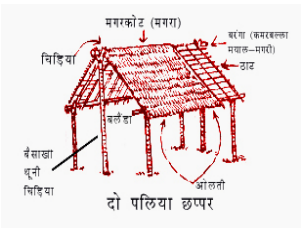

दो पलिया छप्पर

आड़तला (पु0) देखें घरन। पे0 5

आसठी (स्त्री) छप्पर या खपरैल के ठाठ की बग़लियों को संभालने वाली लकड़ी या दीवार का ढालवां पाखा। **बनाना, भरना** के साथ बोला जाता है।

आवरी (स्त्री) बिहारी ज़बान में ओल्ती को औरी कहते है। देखें ओल्ती।

उसारा (पु0) अद्ना[1] क़िस्म का मुख़्तसर[2] सिर छिपाव छप्पर, जो किसान खेत के किनारे डाल लेता है। लफ़्ज़[3] आसरा से उसारा बन गया है।

- *कितनों को महलों अंदर है ऐश का नज़ारा*
  या साइबान सुथरा या बाँस का उसारा (नज़ीर)

([1]मामूली), ([2]छोटा सा), ([3]शब्द)

एक पलिया छप्पर (पु0) देखें छप्पर। पे0

ओल्ती (स्त्री) छप्पर या खपरैल का आगे का ढालवाँ सिरा जिस पर ऊपर यानी चड़ाव के रुख़ का पानी बह कर आता है और सामने टपकता है। देखें छप्पर। पे0

प्रयोग 1 जाड़े में ओलती टपकने लगती है।

प्रयोग 2 ओलती का पानी मगरी चढ़े।

औंदा (पु0) रस्सी का फंदा या फेर जो छप्पर के सिरे को दीवार से बाँधने के लिए खूंटी के साथ लगाया जाता है। (रोज़मर्रा में शब्द औने पौने बोला जाता है।)

औना देखें औंदा।

ओंहवां (पु0) चपटे और मामूली खपरों की छाई हुई मामूली खपरैल।

कांस (स्त्री) देखें बैंड। प्रयोग (क)।

कैंची (स्त्री) देखें थड़। पे0

कुटिया (स्त्री) छोटी सी झोपड़ी।

कोठबाँस (पु0) देखें बाँसीं

कटवाँसी (स्त्री) देखें बाँस। प्रयोग 9

कट्या (पु0) देखें बाँस। प्रयोग 8

कठकिल्ली (स्त्री) लकड़ी की बनी हुई गूंजें (कीलें) जिन से छप्पर या खपरैल के ठाट की जड़ाई की जाती है, यह क़दीम[1] तरीक़ा है जबकि लोहे की कीलें अर्ज़ां[2] नहीं थीं लेकिन क़स्बात और गाँवों में अब भी यह तरीक़ा राइज है। लोहे की कील के मुक़ाबले में यह ज़्यादा बेहतर समझी जाती है।

([1]प्राचीन), ([2]सस्ती)

कमर बल्ला (पु0) देखें बरंगा।

कन्ना (पु0) बैसाख के महीने में काश्तकार मजदूर अपनी ज़रूरत के लिये खेतों पर आर्ज़ी[1] छप्पर जो लकड़ियाँ खड़ी कर के छा लेते हैं इस्तिहालन्[2]

बैसाखी कहलाते हैं। जो शहरों में मजाज़न[3] छप्पर की टेकन के लिए बोला जाने लगा है। देखें बैसाखी।
([1]अस्थायी), ([2]तकनीकि रूप), ([3]लक्षितार्थ)

कंडेलवा (पु0) देखें बाँस। प्रयोग 7

कवेलू (पु0) देखें पेशा ईंट साज़ी।

ख़स (स्त्री) एक ख़ास क़िस्म की घास की खुशबूदार जड़ जिसकी टट्टियाँ बनाई जाती है और गरम मुमालिक में कमरा ठंडा रखने को दिन के वक़्त मकान के दरवाज़ों पर लगाई, और पानी से तर रखी जाती है।

ख़स खाना (ख़ानः) (पु0) मौसम–ए–गर्मां में लू (गर्म हवा) से बचने को उमरा[1] के लिए ख़स से तैयार किया हुआ बँगलेनुमा कमरा या हुजरा। ([1]अमीरों)

खपचार (स्त्री) बाँस की मोटान का चौथाई हिस्सा जो छप्पर के ठाट की बंदिश के लिए बाँस को फाड़ कर बना लिया गया हो।

खपचर (पु0) देखें खपचार।

खपच्ची (स्त्री0) देखें खपचार।

खपरैल (स्त्री) छप्पर की किस्म का साइबान जिस पर बजाए घास के मिट्टी के पुख़्ता[1] खपरे छाये जाते है जो मुख़्तलिफ़[2] वज़अ[3] के बनाए जाते है। अब इनमें भी आला क़िस्म के बनाए जाने लगे हैं। जिसमें बँगलौर के ख़ास तौर पर मशहूर हैं। खपरों की निस्बत से उसका नाम खपरैल हो गया। (खपरे या टाइल्स के लिए देखें पेशा ईंट साज़ी) पे0 ([1]पक्के), ([2]विभिन्न), ([3]प्रकार)

खपरैली (पु0) खपरैल छाने वाला मज़दूर।

खोरिया (पु0) देखें कवेलू। पेशा ईंट साज़ी। पे0

खोई (स्त्री) गुर्सी। देखें पेशा खेमा व छतरी साज़ी। पे0

ग़र्क़ी (स्त्री) देखें तीख़ या तीख।

गनेल (स्त्री) एक क़िस्म की लम्बी पत्ती की घास जो दरियाये चम्बल के किनारे होती है और छप्पर छाने के काम में आती है।

गैड़ा (स्त्री) छप्पर या खपरैल के ठाट की अ़र्ज़1 में लगाई जाने वाली पतली क़िस्म की बल्ली या बाँस। ([1]चौड़ाई)

गैंसड़ी (स्त्री) देखें गैड़ा।

गैड़ी (स्त्री0) देखें गैंसड़ी।

घास (स्त्री0) देखें फाँस।

घोरिया (पु0) देखें खोरिया।

चाव (पु0) देखें बाँस। प्रयोग 3

चिड़िया (स्त्री) देखें बैसाखी। प्रयोग (क)

चंदी मंदब (पु0) छप्पर की छत का बंगले की वज़अ[1] का खुशनुमा[2] बना हुआ मकान चौपाल या पूजा पाठ की जगह।
([1]आकार), ([2]सुन्दर)

चौचिल्ला (पु0) देखें चौपलिया।

चौपलिया (पु0) देखें छप्पर। प्रयोग 3।

चौपलिया छप्पर (पु0) देखें चौचिल्ला।

छांदा (पु0) छप्पर या खपरैल का पिछली दीवार पर रखा हुआ सिरा (चढ़ाव का रुख़)।

छांदन (स्त्री) छप्पर को छाने या़नी दीवार पर उसका सिरा बाँधने की रस्सी या रस्सी के बंद।

छन (पु0) देखें छांदन।

छप्पर (पु0) फूंस और सरकंडे वगैरा का बना हुआ ढालिया साइबान। **छाना, डालना** देखें एक पलिया छप्पर। एक पलिया छप्पर, एक रुख़ा ढलवाँ छप्पर। दो पलिया छप्पर, दो रुख़ा ढलवाँ छप्पर जिस के बीच में मगरी बने। चौपलिया या चौचिल्ला छप्पर जिसके पल्ले चारों सम्त[1] हो, और बीच में मिलकर चुग्गा बनायें।
([1]दिशा)

छपरा (पु0) छोटा मामूली छप्पर।

छप्परबंद (पु0) छप्पर छाने वाला पेशेवर मज़दूर।

ठाटर (पु0) खपरैल या छप्पर का बाँस वगैरा का तैयार किया हुआ ढाँचा, जिस पर फूँस या **कवेलू** जमाए जाते है।

ठाट (पु0) देखें ठाटर।

डरहया (स्त्री) देखें परछती।

ढाबा (पु0) देखें ओल्ती।

तरौना (पु0) जो छप्पर या खपरैल के सहारे को बतौर कमर पटिया लगाया गया हो।

तरौनी (पु0) देखें तरौना।

तारन (स्त्री) देखें ठाट या ठाटर।

तिनके (पु0) देखें फाँस।

तीख़ (स्त्री) छप्पर या खपरैल के दो मुख़ालिफ[1] समतों[2] के पल्लों का बग़ली जोड़, जो नीचे को दबा हुआ नाली सी बनती है।
([1]विपरीत), ([2]दिशा)

तीख (स्त्री0) देखें तीख़।

तोड़ा (पु0) देखें ओल्ती।

तल बट्टा (पु0) देखें तरौना।

थड़ (स्त्री) दो पलिया छप्पर या खपरैल के पल्लों और मगरी की लकड़ी को सहारने और उठाए रखने वाली लकड़ी की बनी हुई क़ैंचीनुमा आड़।

थूनी (स्त्री) देखें बैसाखी।

थपरैल (स्त्री) खपरैल छाने का चिपटा और मुसत्तह[1] बना हुआ खपरा, जो बजाए गोल बनाने के थाप कर चिपटा बनाया गया हो।
([1]समतल)

दन्वा (पु0) देखें बाँस। प्रयोग 4

दो छन्ना छप्पर (पु0) यानी घास की मोटी तह जमा कर बनाया हुआ छप्पर इसको बाज़[1] मुक़ामात[2] पर रावटी भी कहते हैं।
([1]कुछ), ([2]स्थानों)

दोहरी छवाई (स्त्री0) देखें दो छन्ना छप्पर।

धन बाँस या धन्नौटा (पु0) देखें बाँस। प्रयोग 5

धरन (स्त्री) दो पलिया छप्पर या खपरैल की दरमियानी[1] रोक यानी मगरी की बल्ली, जिस पर दोनों तरफ के पल्लों के जड़ाव टिके रहते हैं।
([1]मध्य)

नाथ (स्त्री) छप्पर या खपरैल के ठाट की आ़र्ज़ी[1], छड़ों के सिर बंद जो रस्सी के फंदे या चोबी[2] मेख़ो[3] के होते है।
([1]अस्थाई), ([2]लकड़ी), ([3]कीला)

पल्वटा (पु0) देखें खपचार।

पारछा या परछा (पु0) एक पलिया छोटा छप्पर जी बाँस या बल्लियों की पाड़ पर छा दिया जाए, जिसमें किसी तरफ दीवार का आसरा न हो, इस क़िस्म के बहुत ही मामूली छप्पर को, जो काश्कार अपने खेत के किनारे बना लेते है, परछी कहते है।

परछी (स्त्री) देखें पारछा।

पल्ला (पु0) छप्पर या खपरैल का पूरा यानी अर्ज़[1] व तूल[2] का मुकम्मल फैलाव। **बनाना व बाँधना**। ([1]चौड़ाई), ([2]लम्बाई)

परछती (स्त्री) मिट्टी की कच्ची दीवार की मुंडेर पर बारिश से हिफ़ाज़त[1] के लिए छाई हुई घास या खपरों की छावन। **डालना, छानना, जमाना**। ([1]सुरक्षा)

• उस बादशाह–ए–हुस्न की मंज़िल में चाहिए।
बाल–ए–हुमा की परछती दीवार के लिए।।

पुंगा (पु0) बाँस का खोखला और छोटा टोटा (डंडा)।

पूला (पु0) घास का बँधा हुआ मामूली जसामत[1] का मुट्ठा। ([1]मोटाई)

• वह तेरे हक़ में तीर है किस बात पर भूला है तू।
मत आग में डाल और को फिर घास का पूला है तू ।।

फलौत (पु0) देखें खपचार।

फाँस (स्त्री) लकड़ी और धातु वगैरा का बारीक नुकीला छोटा सा टुकड़ा, जो सुई की तरह किसी चीज़ में घुस जाए। **लगना** के साथ बोला जाता है।

फूंस (पु0) बेंड की सूखी पत्ती। कांस, लम्बी पत्ती वाली घांस की सूखी पत्ती जो छप्पर छाने के काम आए। (देखें बेंड)

बल्ली (स्त्री0) देखें तरौना।

बँसवाड़ी (स्त्री0) देखें बाँसीं

बांस (पु0) गन्ने के दरख़्त[1] से मिलता जुलता एक क़िस्म का जंगली दरख़्त, छप्पर और खपरैल वग़ैरा की तैयारी में काम आने वाले बाँस की क़िस्मों के इस्तिलाही[2] नाम, जो छप्पर बंदों वग़ैरह में मारूफ़[3] है दर्ज़ ज़ेल हैं।
([1]पेंड़), ([2]तकनीकी), ([3]जाने जाते)

1. **बसेंडा** पतली क़िस्म का बाँस जो मामूली छड़ों के काम आए।
2. **भाल्वा** लम्बा लचकदार और मज़बूत भाले बनाने का बाँस।
3. **चाव** लम्बा पतला छड़ें बनाने का बाँस।
4. **दन्वा** लम्बा मोटा मगर पतले दल और पतली छाल का बाँस यानी वह बाँस जिसका दल बहुत पतला हो, ऐसा बाँस कमज़ोर और नाक़िस[1] समझा जाता है। ([1]दोषपूर्ण)
5. **धन या धनौटा** छोटे क़द का मज़बूत मोटा और ठोस क़िस्म का बाँस जो अमूमन लट्ठ बनाने के काम आते है।
6. **सरांचा (सरांचः)** लम्बा मोटा और मज़बूत रेशेदार बाँस जो अ़मूमन खेमों में लगाया जाता है।
7. **सरमूझी** लम्बी, पूरी और मोटे दल का छप्पर में लगाने का बाँस, इसको बाज़ मुक़ामात[1] पर कंडेलवा भी कहते हैं। ([1]स्थानों)
8. **कट्या** ठोस बाँस जो छप्पर के ठाठ में लगाया जाता है इस को भरतू भी कहते है।

9.**कटवांसी** छोटी पोर का ज्यादा गाँठदार बाँस।

बाँसी (स्त्री) बाँस का जंगल वग़ैरा।

बाँका (पु0) छप्पर बंदों का बाँस फाड़ने का दरांती की क़िस्म और शेर के नाख़ून की शक्ल का मोटा और भारी चाकू।

बजर बौंग (पु0) मामूल से ज़ाइद[1] मोटा और मज़बूत क़िस्म का बाँस जो छप्पर के बलैंडे, डोली या पालकी के डंडे बनाने और बाड़ बाँधने में काम आए। ([1]अधिक)

बरंगा (पु0) दो पलिया छप्पर या खपरैल के ऊपर की बल्ली या शहतीरी जिस पर दोनों पल्लों के सिरे क़ायम किये जाते हैं जो इस्तिलाहन् मगरी कहलाता है। दह शहतीरा **दह शहतीरः** जो छत के अ़र्ज़[1] में लगाकर उसपर कड़ियां तूल[2] में डाली जाये देखें तस्वीर छप्पर। पे0–14 ([1]चौड़ाई), ([2]लम्बाई)

बसेंडा (पु0) देखें बाँस। प्रयोग 1

बँसवाड़ (स्त्री) देखें बाँसी।

बलेंडा (पु0) छप्पर के पेश यानी आगे के सिरे को उठाये रखने वाली पूरी तूल[1] में लगी हुई बल्ली। **डालना, देना, रखना** के साथ बोला जाता है।
([1]लम्बाई)

बंगला (पु0) चौचिल्ला या चौपल्ला छप्पर की छत की कोठी। यह लफ़्ज़[1] बंगाली ज़बान का है, मुमालिक मुत्तहिदा[2] आगरा और अवध में मज़कूर–उल–सदर[3] वज़अ़[4] की इमारत के लिए बोला जाता है और पु0ख़्ता[5] छत की इमारत को कोठी कहते हैं। लेकिन दकन में लफ़्ज़ कोठी नहीं बोला जाता इसके बजाय लफ़्ज़ बँगला, ज़बान[6] ज़द–ए–आ़म[7] है। अल्बत्ता शहर हैदराबाद दकन में साहब रेजिडेंट बहादुर की क़याम[8] गाह कोठी के नाम से मौसूम की जाती है। या मोहसिन–उल–मुल्क की कोठी मशहूर है। **छाना, छवाना** के साथ बोला जाता है।
([1]लम्बाई), ([2]शब्द), ([3]रियासत), ([4]उपरोक्तनुसार), ([5]आकृति), ([6]पक्का), ([7]लोगों की जबान पर है), ([8]निवास स्थान)

- *तिनके चुनने लगे बहार में हम।*
  बँगला शायद वह छायेंगे ख़स का।।

बैसाखी (स्त्री0) छप्पर के सामने की अड़वाड़। मामूली क़िस्म का थम या टेका, जिस पर बलैंडा रखा जाता है, देखें तस्वीर छप्पर। **लगाना, देना, खड़ा करना** बैसाखी के सिरे पर **बलैंडे** के टिकाव के लिए चिड़िया की शक्ल की जड़ी हुई छोटी लकड़ी, इस्तिलाहन्[1] चिड़िया कहलाती है। इसी की वजह से पूरी बैसाखी को चिड़िया कह देते है। ([1]तकनीकी रूप से)

बेंड (स्त्री0) एक क़िस्म की लम्बी एवं पतली पत्ती वाली घास के फूल का डंठल जो दस बारह फुट लम्बा और हाथ की उंगली के बराबर मोटा होता है, और बाज़[1] दीगर[2] चीज़े बनाने के काम में आता है। यह घास शिमाली[3] हिन्द की बालू वाली ज़मीनों में पैदा होती है। **(क) कांस**–बेंड की लम्बी और बारीक पत्तियाँ जो बतौर झुंड पैदा होती है और छप्पर छाने के काम आती है।
([1]कुछ), ([2]दूसरी), ([3]उत्तरी)

- *आया कनागत फूला काँस।*
  ब्राह्मण मारें भर–भर गड़ास।।
- *आया कनागत फला काँस।*
  बामन नाचें नौ–नौ बाँस।।

(ख) सिरकी–बेंड का गज़ सवा गज़ का लम्बा सिरे का हिस्सा जो बग़ैर गाँठ का होता है और जिसके सिरे पर फूलों का तुर्रा[1] होता है। इससे छप्पर की तह और दीगर चीज़े बनाई जाती है, बंजारे उससे छोलदारी की वज़अ़[2] का साइबान बनाते है। ([1]गुच्छा), ([2]आकार)

(ग) कई बेंड़ों का बँधा हुआ मुठ्ठा जो छप्पर के ठाट की तैयारी के लिए बाँस या बल्ली के बजाय बना लिया जाए, बेंडा कहलाता है।

(घ) बेंदौड़ी–छोटी क़िस्म की, और बग़ैर छिलका उतरी हुई बेंड।

बीड़ा (पु0) देखें बेंड। प्रयोग (ग)।

बेंदोड़ी (स्त्री) देखें बेंड। प्रयोग (घ)।

भठोंगी (स्त्री) बाँस की खपच्चियाँ या लकड़ी की पतली पट्टियाँ जो छप्पर या खपरैल के ठाट पर आड़ी जमाईं जाए, छप्पर में घास के फलवे यानी तह बाँधने को और खपरैल में खपरे जमाने को लगाई जाती है।

भाबर (स्त्री) काँस की क़िस्म की अद्ना[1] दर्जे की घास कमज़ोर और सब्ज़ी मायल[2] रंग की, पंजाब के मरतूब[3] इलाके में पैदा होती है इससे एक क़िस्म की रस्सी बनाई जाती है।
([1]मामूली), ([2]हल्के धानी), ([3]तराई)

भाल्वा (पु0) देखें बाँस। प्रयोग (2)

भल्वा (पु0) छप्पर के ठाट पर उतार चढ़ाव से जमाई हुई फूँस की तह **जमाना** के साथ बोला जाता है।

मगरकोट (पु0) मगरी के ऊपर की छावन

मगरी या मंगरी (स्त्री) दो पलिया छप्पर या खपरैल के पल्लों का जोड़, जो मांग की शक्ल दोनों पल्लो के

मिलने की जगह पैदा होता है। लफ़्ज़[1] मांग से मगरी इस्तिलाह[2] बन गयी है।
([1]शब्द), ([2]तकनीकि शब्द बन गया)

मंगरा (पु0) देखें मगरकोट।

महौत (पु0) देखें अरौनी।

मुहैत (पु0) देखें अरौनी।

मयाल (स्त्री) देखें बरंगा। पे0

लचकदार बाँस (पु0) वह बाँस जिसमें लचक ज़्यादा हो।

सराँचा (पु0)–देखें बाँस। प्रयोग 6। पे0

सरपत (स्त्री)–सरकंडे का तुर्रा[1] और वह पत्ते जो तुर्रे के नीचे होते हैं जहाँ से तुर्रा फूटता है। कुछ कारीगर सिरकी को भी सरपत कहते हैं।
([1]गुच्छ)

सरकंडा (पु0) देखें **बेंड।** पे0

सिरकी (स्त्री) देखें बेंडा। प्रयोग–(ख़)

सिरकी साज़ (पु0) सिरकी का सामान बनाने वाला पेशेवर मज़दूर, देहली में इन कारीगरों के नाम से एक मुक़ाम बाज़ार सिरकी वालान मशहूर है।

सरमूझी (स्त्री) देखें बाँस। प्रयोग (7)

अनुभाग–(4) पेशा–ए–आराकशी

आर (स्त्री, पु0) आरे या आरी का दाँता।
(क) बेड़ किसी क़दर एक रुख़ को मुड़ी हुई आर जो लकड़ी की काट में सहूलत पैदा होने को कर दी जाती है।

आरा (पु0) दरख़्तों के बड़े–बड़े तने और मोटी लकड़ी चीरने का नीम के पत्ते की [1]हम–शक्ल, तक़रीबन पाँच–छह फिट लम्बा आरदार फौलादी हथियार **चलाना, मारना, फेरना, खींचना** के साथ मिलाकर बोला जाता है। **पत्ता** बगैर आर या दांते के सपाट शक्ल का आरा। **छाती** आरे का [2]बैरूनी आरदार रुख़ **पेट** आरे का अंदरूनी [3]खमीदा रुख़ ([1]की तरह, [2]बाहरी, [3]अंदर को झुकी हुई)

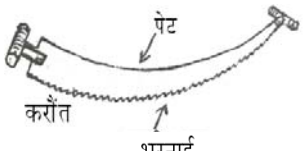

करौंत [1]शमशीरनुमा नीम के पत्ते की [2]शक्ल का आरा ([1]तलवार, [2]आकार)

भरनाई सीधा आरा।

मुंशार दरख़्त के तने से डालियाँ और छोटे डाले [1]जुदा करने का छोटा आरा, अस़ल [2]लफ़्ज़ मूछाऊ (मुँह छाटने वाला) बिगड़कर मुंशार हो गया है। ([1]अलग, [2]शब्द)

आरी सीधी शक्ल के आरे की बहुत छोटी [1]क़िस्म, **देखें** पेशा नज्जारी ([1]प्रकार)।

आरा कश (पु0) दरख़्तों के बड़े बड़े तनों को चीर कर छोटे [1]कारआमद टुकड़े बनाने वाला कारीगर। ([1]काम लायक़)

आरी (स्त्री) देखें आरा 4।

आटकी (स्त्री) मोटी भारी और लम्बी लकड़ी चीरने का [1]मुसल्लसनुमा बना हुआ अड्डा, यानी एक क़िस्म का अटकावा ([1]त्रिकोणीय)

अड्डा (पु0) देखें आटकी

बत्ता (पु0) देखें बद्दा।

बद्दा (पु0) डेढ़ दो इंच मोटी, 3–4 इंच चौड़ी और सात–आठ फुट लम्बी नाप की चिरी हुई पट्टी **बनाना, काटना, चीरना** के साथ मिलाकर बोला जाता है।

बद्दा (पु0) देखें बत्ता।

बुरादा (पु0) लकड़ी का वह चूरा जो आरे या आरी से चीरने में निकले। (निकलना, झड़ना, गिरना, उड़ाना)

बरगा (पु0) (संस्कृत वरगा यानी चौकोर, लम्बी और मोटी [1]तामीरी काम की लकड़ी) छोटी कड़ी, कड़ी का अद्धा। **देखें** कड़ी ([1]निर्माणीय निर्माण के काम लायी जाने वाली)

बक्कून (स्त्री) लकड़ी की जिगरी, सफेदी जो कच्चेपन की [1]अ़लामत हो और जिसको दीमक या कीड़ा लग जाए। ([1]निशानी)

बोकड़ा (पु0) दरख़्त के तने का छोटा टुकड़ा।

बेड़ (स्त्री) देखें आर फिक़रा (क) (लगाना)
[1]फिक़रा–बेड़ जाती रही, इसलिए काट अच्छी नहीं हो रही है। ([1]वाक्य, प्रयोग)

पत्ता (पु0) देखें आरा फिक़रा (क)।

पटड़ा (पु0) देखें पटरा।

पटरा (पु0) देखें –तख़्ता।

पेट (पु0) देखें आरा फिक़रा (ग)।

फर्रा (पु0) गोल लकड़ी या [1]दरख़्त के तने का पहला चीरा हुआ तख़्ता, जिसका एक रुख़ [2]मुदव्वर होता है। जो गोल लकड़ी को चौपहल बनाने के लिए चारों

तरफ से निकाला जाता है। **उतारना, चीरना** के साथ बोला जाता है। ([1]पेड़, [2]अर्धगोलाकार)

फरकोटा (पु0) देखें बत्ता

फरनाई (स्त्री) दरअसल फरकौटा काटने और सिल्ली बनाने के आरे को कहते हैं, जो एक चौकटे में कसा रहता है, जिसकी वजह से लकड़ी चीरने में सीधा रहता है और निशान से इधर–उधर नहीं होता है। देखें आरा।

फन्नी (स्त्री) चिपटी सलामीदार चोबी [1]मेंख जो आराकश लकड़ी के चढ़ाव के दरमियान आरे की रवानी में सहूलत के लिए फँसा देता है। **लगाना, फँसाना** के साथ बोला जाता है। ([1]खूँटी)

फेंट (स्त्री) लकड़ी की [1]अ़र्ज़ में चिराई को आराकशों की [2]इस्तिलाह में फेंट कहते हैं। यह [3]लफ़्ज़ [4]अमूमन तने के टुकड़े काटने के मौक़े पर बोलते हैं। ([1]चौड़ाई, [2]षषा, [3]शब्द, [4]प्रायः)

तख़्ता (पु0) पटरा लकड़ी का ऐसा [1]क़त़अ़ किया हुआ टुकड़ा, जो ज़्यादा से ज़्यादा दो इंच मोटा और कम से कम छह इंच चौड़ा और डेढ़–दो फुट लम्बा हो। [2]तामीरी काम के लिये लकड़ी के [3]मुख़्तलिफ़ [4]जसामत के टुकड़ों के वास्ते मुख़्तलिफ़ [5]इस्तिलाहें मुक़र्रर हैं। ([1]अलग, [2]निर्माणीय, [3]विभिन्न, [4]मोटाई, [5]परिभाषा)

तसू (पु0) आराकश या नज्जार के पैमाने का चौबीसवाँ हिस्सा, [1]इस्तिलाह में इमारती गज़ की एक गिरह का चौबीसवाँ हिस्सा यानी एक इंच का तक़रीबन बारहवाँ हिस्सा, असल [2]लफ़्ज़ तस्सूज या तस्सू है। आराकश बग़ैर • तश्दीद के लिए बोलते हैं। • संयुक्ताक्षर ([1]पारिभाषिक शब्द, [2]शब्द)

तला (पु0) तख़्तों की गट्ठे के जुड़े हुए सिरे, जो मुठ्ठा बँधा रहने को करीब 5–6 इंच बगैर चिरे छोड़ दिये जाते हैं। **छुड़ाना, काटना** के साथ बोला जाता है।

चैला (पु0) देखें कुंदा।

छाती (स्त्री) देखें आरा।

छत चीरना (क्रिया) चोबी छत की [1]पोशिश के लिए तख़्ते तैयार करना ([1]कवर)।

सुतर सूत (पु0) लकड़ी पर चिराई का ख़त डालने का किसी रंग का रँगा हुआ डोरा डालना, छोड़ना, पटख़ना के साथ बोला जाता है।

सिल्ली (स्त्री) चौपहल मोटी लकड़ी।

संडासी (स्त्री) लकड़ी को बराबर हिस्सों में बाँटने वाले प्रकार की क़िस्म के औज़ार को आराकशों की [1]इस्तिलाह में संडासी कहते हैं। ([1]भाषा)

सोंट (स्त्री) देखें कड़ी।

शाहटेक (पु0) देखें शहतीर।

शहतीर (पु0) चौपहल लम्बी लकड़ी, जिसकी मोटान–चौड़ान करीब–करीब [1]मसावी और कम से कम फुट सवाफुट और तूल कम से कम 12–15 फुट हो। ([1]बराबर)

शहतीरी (स्त्री) शहतीर से छोटी [1]पैमाइश की लकड़ी, दकन में मयाल कहते है। ([1]नाप)। **देखें** शहतीर

करौंत (पु0) देखें आरा 1।

करौंतिया (पु0) छोटा करौंत, **देखें** आरा।

कड़ी (स्त्री) सौंट, मयाल, कम से कम 3 इंच चौड़ी 4–5 इंच मोटी और 8–9 फुट लम्बी नाप की तैयार की हुई लकड़ी, जो [1]अमूमन मकान की छत पाटने के काम आती है। (डालना, रखना, चढ़ाना) ([1]प्रायः)

कुन्दा (पु0) दरख़्त का लम्बा चौड़ा और मोटा नातराशीदातना।

खरकूच (स्त्री) देखें शहतीरी।

कीले गांठ (स्त्री) लकड़ी के जिगर की ऐसी गाँठ जिसके ऊपर छिलका हो, यह गाँठ आर–पार होती है, [1]अ़लाहिदा निकल आती है, जिससे लकड़ी में सुराख़ पड़ जाता है। ([1]अलग)

गट (स्त्री) देखें सिल्ली।

लट्ठा (पु0) देखें शहतीर।

मुद्दा (पु0) देखें मुढ़ढा।

मुढ़ढा (पु0) कुन्दे का छोटा टुकड़ा; **देखें** कुन्दा।

मुढ़ढी (स्त्री) मुढ़ढे का टुकड़ा या हिस्सा; **देखें** मुढ़ढा।

मुंशार (पु0) देखें आरा।

मूछाऊ (पु0) देखें आरा।

मयाल (स्त्री) देखें कड़ी।

अनुभाग–(4) पेशः नज्जारी

उपरौटा (पु0) देखें उतरंगा।

उतरंगा (पु0) दरवाज़े के चौखट के ऊपर की लकड़ी, जो बाजुओं [1]यानी चौखट की खड़ी लकड़ियों के ऊपर बतौर पेशानी होती है। पूरब वाले

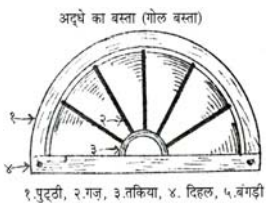

उपरौटा और देहली व ²नवाहे़ देहली के कारीगर उतरंगा कहते हैं। ³लफ़्ज़ उपरौटा ऊपर से और उतरंगा उत्तर से बन गया है। **देखें** तस्वीर चौखट (¹अर्थात्, ²आसपास, ³शब्द)

<u>तस्वीर चौखट</u>

अटान (पु0) देखें मचान।

अद्धे का बसता (बसतः) (पु0) गोलबसता ¹निस्फ़ दायरे की शक्ल का बस्ता या अद्धे की डाट का बस्ता, **देखें** बस्ता व तस्वीर बस्ता बर सफा (¹आधे)।

अधीनी (स्त्री) पचबैनी किवाड़ के रूकारी चौकटे की आड़ी पट्टी या पट्टियाँ, **देखें** पचबीनी जोड़ी।

आरी (स्त्री) लकड़ी चीरने का औजार ¹तफ़्सील के लिए, **देखें** आरा, पेशा आराकशी) तस्वीर बर सफा (¹विस्तार)।

आड़ डंडा (पु0) दरवाज़े के पटों को अन्दर से बंद रखने वाली आड़, जो एक चौकोर या गोल मज़बूत लकड़ी होती है। दरवाज़े के पाखे में इसका घर बना होता है, जिसमें यह लकड़ी पड़ी रहती है। ¹बरवक़्त ज़रूरत इसको अन्दर से खींचकर किवाड़ो के पीछे अड़ा देते हैं, ताकि दरवाज़ा बाहर से खुल न सके, यह पुराना तरीक़ा अब क़रीब क़रीब ²मतरूक हो गया है। क़स्बात की पुरानी हवेलियों में कहीं–कहीं बाक़ी है। बअ़ज़ ³मुक़ामात पर अड़–डंडे को सरकोंडा कहते हैं। **डालना, फाँसना** के साथ बोला जाता है। (¹समय पर, ²परित्यक्त, ³स्थानों)

अड़ डंडा (पु0) देखें आड़ डंडा

अडंगा (पु0) आड़नी, गुटका, दरवाज़े के पट या पटों को खुला रखने की रोक या आड़, यह चौखट के बाज़ुओं के ¹वस्त् में या सिरों पर गुटके की शक्ल की बनी हुई लगी होती है और पट को हवा से बंद होने (से) रोकती है। **देखें** तस्वीर चौखट (¹मध्य)

आड़नी (स्त्री) देखें अड़ंगा।

अड़वाड़ (स्त्री) देखें चटख़नी।

इकराम (पु0) देखें चटख़नी।

आगल (स्त्री), ¹जदीद ²वज़अ़ का डंडीदार छपका या कुंडी, जो अंग्रेज़ी नमूने के किवाड़ों में कुंडी की बजाए लगाई जाती है। **देखें** तस्वीर किवाड़। (¹आधुनिक, ²आकार)।

आम्नी चुग्गे का बस्ता (बस्तः) (पु0) बंगड़ीदार बस्ता, जिसका चुग्गा आम की शक्ल का हो। **देखें** तस्वीर बस्ता।

आम्नी का बस्ता (बस्तः) (पु0) मांगदार उल्टे आम की ¹वज़अ़ का बस्ता, **देखें** बस्ता तस्वीर (¹आकार)

आमनी का बस्ता

१.पुट्ठी,२.गज़, ३.तकिया, ४.दिहल, ५. बंगड़ी

अंग्रेज़ी जोड़ी (स्त्री) देखें दिलेदार किवाड़ व तस्वीर।

आइनेदार जोड़ी (स्त्री) देखें दिलेदार किवाड व तस्वीर।

ऊल (स्त्री) किवाड़ की गिल्ली, खूँटा या कीली का, जिसको ¹इस्तिलाह–ए–आम में चूल कहते हैं। सुराख़ या घर, जिसमें वह डली रहती है और घूमती रहती है, बअ़ज़ कारीगर इसको गरदांग कहते हैं। (¹आम षषा में)

¹मसल है ***"ऊल में चूल"*** हिन्दी ²लफ़्ज़ औला ³बमअ़ने परदा, राज़, भेद से ⁴ग़ालिबन् ऊल बन गया है, मगर यह लफ़्ज़ आमतौर से ⁵मतरूक समझा जाता है। इसकी बजाए चूल का भेद, घर या सुराख बोलते है या दोनों को ⁶मजाज़न् चूल कह देते हैं। (¹कहावत, ²शब्द, ³जिस अर्थ, ⁴शायद, ⁵परित्यक्त, ⁶लक्षितार्थ)

ऐंठ (स्त्री) तख़्ते, कड़ी या शहतीर की सतह की टेड़, बल या ख़म जो गीली कटी हुई हालत में ¹नाहमवार जगह रखने से पैदा हो जाए, ऐसी लकड़ी को सीधा करने से नाप में फ़र्क़ पड़ता है, जो नुकसान का ²बाअ़िस होता है। (¹जो बराबर न हो, ²कारण)

बादरी (स्त्री) ख़ज़ाना, **देखें** रन्दा।

बाज़ू (पु0) चौखट की खड़ी लकड़ी या लकड़ियाँ। **देखें** तस्वीर चौखट **जड़ना, खड़े करना, बैठाना, जोड़ना** के साथ बोला जाता है।

बांगड़ी (स्त्री) देखें खंडेल।

बटनदार किवाड़ (पु0) देखें लंगोटदार किवाड़।

बुझावट (स्त्री) देखें भुजावट।

बदरुमी ख़ातम बन्दी (स्त्री) देखें ख़ातम बन्दी।

बरमा (पु0) लकड़ी और धात की क़िस्म की ¹अश्या में गोल छेद करने का औज़ार। पुराने क़िस्म का बरमा ²हस्बे ज़ेल तीन हिस्सों पर ³मुश्तमिल होता है। (¹वस्तु, ²निम्नलिखित, ³आधारित)

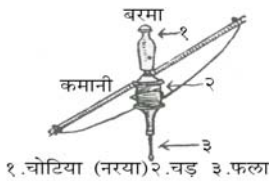

१.चोटिया (नरया)२.चड़ ३.फला

फला धारदार आहनी मुँह, जो सुराख़ छेदता है। **चड़** [1]दरमियानी हिस्सा, जिसमें फला फंसा रहता है। ([1]बीच का) **चुटिया** ऊपर का चोबी दस्ता, जो कारीगर के हाथ में रहता है और जिसमें बरमा का फल [1]मआ चड़ घूमता है। इसको मक्कू और नरेली भी कहते हैं। नरेली कहने की वजह यह है कि बअ़ज़ कारीगर बजाए [2]चोबी दस्ता के नारियल के खपरे से चुटिये का काम निकाल लेते हैं, इस वजह से इसका नाम नरेली भी पड़ गया है। **करना** बरमे से सुराख़ करना **फेरना, चलाना, खींचना** सुराख़ करने के लिए बरमे को कमानी वगैरह से चक्कर देना। ([1]और, [2]लकड़ी)

बढ़ई (पु0) लकड़ी का [1]तामीरी और [2]ज़रूरियात–ए–ज़िंदगी का दूसरा सामान तैयार करने वाला कारीगर ([1]निर्माणीय, [2]जीवनोपयोगी)

बस्ता (बस्तः) (पु0) मेहराब के दहन में लगाने को [1]चोबी, संगीन या धात का जालीदार बनाया हुआ पट (टट्टी)। ([1]लकड़ी)

सह बंगड़ी बस्ता

जिस शक्ल की मेहराब होती है, उसी शक्ल का बस्ता बनाया जाता है और मेहराब के नाम से मौसूम किया जाता है। बनावट के [1]इअ़तिबार से बस्ते की चार किस्में मशहूर हैं। ([1]अनुरूप)

(क) अद्धे का बस्ता।
(ख) आमनी का बस्ता।
(ग) आमनी चुग्गे का बस्ता।
(घ) बंगड़ीदार बस्ता।

पुट्ठी मेहराब के दहन के [1]मुवाफिक़ बना हुआ बस्ते के कैंडे का ऊपर का हिस्सा ([1]अनुकूल)

दिहल बस्ते के कैंडे के पैर यानी नीचे की लकड़ी, जिस पर पूरा बस्ता बना हुआ होता है। **तकिया** दिहल के मरकज़ पर नीम दायरे की शक्ल का बना हुआ हिस्सा, जिसमें गज़ों के निचले सिरे जुड़े रहते हैं। **गज़** बस्ते के बीच में जाल या जाली बनाने वाली [1]मुख़्तलिफ़ [2]वज़अ़ पर जड़ी या बनी हुयी तिकोरियां या फारियां। **जमाना** के साथ बोला जाता है। **लगाना, जड़ना** बस्ते को मेहराब के दहन में ([1]विभिन्न, [2]प्रकार)

बझावट (पु0) देखें भुजावट।

बुझावटी जोड़ (पु0) देखें भुजावट।

बसौला (पु0) लकड़ी फाड़ने, छीलने और गढने का औजार, इसके पिछले हिस्से को जिसमें दस्ता डालने को सुराख़ होता है मूंद, दरमियानी भरवां हिस्से को छाती और सामने के धार दार रुख़ को लाप कहते हैं। **चलाना, मारना** के साथ बोला जाता है।

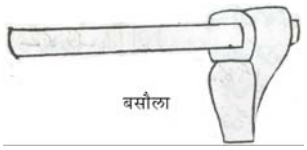

बलथक (पु0) **देखें** लंगोट

बल्ली (स्त्री) दरवाजे के किवाड़ों को अन्दर से बन्द रखने की पुराने [1]वज़अ़ की आड़, चोर खटका। **देखें** तस्वीर

इस आड़ की खोल, बन्द बाहर से एक कुण्ड़े के [2]ज़रिआ [3]पोशीदा तरीके पर भी होती है, इसलिये इसको चोर खटका भी कहते हैं। **देखें** तस्वीर किवाड़ ([1]आकार, [2]माध्यम, [3]गुप्त)

बटन (पु0) देखें बेटन।

बिंड़ा (पु0) तरक **देखें** सरकोंडा कड़ी जो दरवाजे के किवाड़ों को बन्द रखने के लिये किवाड़ों के पीछे अड़ा दी जाती है।

बिनौड़ा (पु0) देखें बिंड़ा।

बिटौड़ा–(पु0)ऐसी आड़ या पर्दा, जो कि किवाड़ की बजाय दरवाजे में लगा दिया जाये और [1]हस्बे ज़रूरत हटाया और लगाया जा सके, जैसा कि अक्सर बाग़ वगैरा के जंगलो में घूमता हुआ लगा होता है। **देखें** सरकोंडा। ([1]जरूरत के अनुसार)

बेंड़ा (पु0) देखें बिंड़ा।

बोल्ट (पु0) (अंग्रेज़ी) बाज़ कारीगर लाम के [1]ज़बर से बोल्ट कहते हैं। **देखें** चटख़नी ([1] 'अ' की मात्रा)

बहादुरी (स्त्री) चौखट के बाजूओं के सिरे पर बने हुये [1]मुनब्बतकारी काम को देहली और **[2]नवाहे देहली** के नज्जार [3]इस्तिलाहन् बहादुरी और क़स्बाती बढ़ई छई कहते हैं। **देखें** चौखट व तस्वीर चौखट–2 बर सफा। ([1]शिल्पकारी, [2]आसपास, [3]पारिभाषिक शब्द)

बहादुरी दरअस्ल भद्री या भदरा का बिगड़ा हुआ [1]लफ़्ज़ है जो हिन्दुओं के किसी देवी का नाम है। किसी ज़माने में इसकी मूरत को बेलबूटों के अन्दर, बड़ी हवेलियों या मन्दिरों की चौखट के बाजूओं पर खुदवाने का दस्तूर होगा, बड़े क़स्बात में

कहीं–कहीं हिन्दुओं की पुरानी हवेलियों और मन्दिरों की चौखट के बाजूओं पर बेल–बूटे के साथ जो मूरत खुदी हुयी पाई जाती है भदरी कहलाती है, अब [2]नज्जार बगैर समझे बूझे **आदतन** देशी चौखटों के बाजूओं पर सिरों के करीब चौखट की हैंसियत के [3]मुवाफ़िक़ मअ़मूली बेल खोद देतें हैं और इसको बहादुरी कहते हैं। ([1]शब्द, [2]बढ़ई, [3]अनुसार)

बहरा (पु) चौखट के बाजुओं की चुनाई से लगे रहने वाले रुख़ पर जड़ी हुई एक–एक या दो–दो खूँटियां जो चुनाई में दबकर चौखट को अपनी जगह फंसा रखती है। [1]बअ़ज़ [2]मुक़ामात पर बहरे को तिर्या कहते हैं जो शायद तीर से बन गया है **देखें** चौखट तथा तस्वीर चौखट बर सफा। ([1]कुछ, [2]स्थानों)

बहरा फ़ारसी [1]लफ़्ज़ बार [2]बमअ़नी जड़ का बिगड़ा हुआ मालूम होता है, और जिस तरह जड़ ज़मीन में [1]पैवस्त होकर दरख़्त को जमाये रखती है, इसी तरह चौखट की यह खूँटियां चुनाई में फँसकर चौखट को उसकी जगह पर मजबूत रखती है। **लगाना, जड़ना, ठोंकना** के साथ बोला जाता है। ([1]शब्द, [2]जिस का अर्थ, [3]सम्बद्ध)

बीड़का (पु) लकड़ी में [1]मुनब्बतकारी बनाने का नालीदार मुँह का धारदार औज़ार, मोटे और बारीक कामों के लिये छोटे बड़े कई किस्म के होते हैं, और [2]मुख़्तलिफ नामों से [3]मौसूम किये जाते हैं। फ़ारसी में बैरम कहते हैं। ([1]शिल्पकारी, [2]विभिन्न, [3]सम्बोधित)

बेड़ी (स्त्री) देखें चटख़नी

बेनी (स्त्री) हिन्दुस्तानी [1]वज़अ़ के किवाड़ के किनारे पर **रूकार** के रुख किवाड़ के बराबर लम्बी, किसी कद्र बाहर निकली हुई जड़ी हुई पट्टी। सादा और [2]मुनक़्क़श दोनों किस्म की लगाई जाती है। बड़े फाटकों के किवाड़ों में बहुत मज़बूत और [3]आला किस्म की बनी हुयी होती है। **देखें** पचबेनी जोड़ी व तस्वीर किवाड़। **लगाना, जड़ना** के साथ बोला जाता है। ([1]आकार, [2]कलाकृति, [3]उच्चकोटि)

बेटन (पु) देखें लंगोट

बैरा (पु0) देखें बहरा।

भदरी (स्त्री) देखें बहादुरी।

भुजावट (पु) दो तख्तों के [1]दरमियान दर्ज बन्द जोड़ [2]यानी ऐसा जोड जिसके दोनों हिस्से आपस में पकड़ बनी हुई हों, ताकि वह आपस में [3]पैबस्त हो जायें [4]अमूमन नाव के तख्तों में लगाया जाता है, और बझावटी जोड़ के नाम से [5]मौसूम किया जाता है। यह जोड़ दो तरह से लगाया जाता है। पहली [6]सूरत यह होती है कि एक तख़्ते की कोर पर छोटा गोला बतौर चूल, और दूसरे तख़्ते की कोर पर उसका भेद यानी चूल का घर बनाकर [7]बाहम [8]पैवस्त कर देते है। दूसरी सूरत यह होती है कि दोनों तख्तों की कोर में खाचें बनाकर उनके बीच में लकड़ी की चिफ़ती फंसा देते हैं। दूसरी [9]वज़अ़ के जोड़ में जो चिफ़ती फँसायी जाती है, उसको [10]इस्तिलहा में सुफ़टी कहते हैं, जो फ़ारसी लफ़्ज़ सिफ़तन का बिगड़ा हुआ रूप है।

([1]बीच, [2]अर्थात, [3]सम्बद्ध, [4]प्रायः, [5]सम्बोधित, [6]स्थिति, [7]एक दूसरे में, [8]जोड़, [9]आकार, [10]तकनीकी शब्दावली)

भुजावटी जोड़ (पु) देखें भुजावट

भेद (स्त्री) देखें ऊल

पाताम (पु) [1]ज़दीद [2]वज़अ़ के दरवाजों की चौखट में किवाड़ों की रोक या आड़ के लिये बना हुआ खांचा, जो किवाड़ के तख़्ते की मोटान के बराबर चौड़ा और करीब आधा इंच गहरा बनाया जाता है। **देखें** तस्वीर चौखट **बनाना काटना** के साथ बोला जाता है। ([1]आधुनिक, [2]आकार)

पाट (पु) नज्जारों की [1]इस्तिलाह में इंच का बारहवाँ हिस्सा। ([1]परिभाषा)

पाली मुहरा (पु) देखें गुलमुहरा

पान (पु) नज्जारी [1]इस्तिलाह में इंच का चौथाई हिस्सा जो [2]गालिबन् पौन 1/4 का बिगड़ा रूप है। **प्रयोग** पोल पान भर बड़ी है। इसलिये ठीक नहीं बैठती। ([1]परिभाषा, [2]शायद)

पट (पु) किवाड़, किवाड़ों की जोड़ी का एक पल्ला **प्रयोग** दरवाज़े का एक पट भेड़ दो, एक खुला रहने दो।

पटासी (स्त्री) लकड़ी में चूल का घर साफ और सीधा रखने का धारदार [1]आहनी का औज़ार, इसको मुसलमान बढई चौरसा भी कहते हैं, जो फारसी [2]लफ़्ज़ चौरच का बिगड़ा हुआ है। ([1]लोहे का, [2]शब्द) **(तस्वीर पटासी)**

पैताम (पु0) देखें पाताम।

पैर थाम (पु0) देखें पाताम।

पुट्ठी (स्त्री) देखें बस्ता प्रयोग व तस्वीर बस्ता नं 1।

पचबैनी जोड़ी (स्त्री) मुग़ली जोड़ी, देसी [1]वज़अ़ की बनी हुई किवाड़ों की ऐसी जोड़ी जिसमें हर किवाड़ की [2]रूकार पर [3]खुशनुमाई और मज़बूती के लिये लकड़ी की पट्टियों का [4]हाशिया जिसको पुश्ती जाल कहते हैं। जड़ा हुआ होता है और दोनों पटों को सामने से रोकने वाली खूबसूरत बेनी लगी होती है, जो हाशिये की [5]उमूदी लकड़ियों से मिलती जुलती पाँचवीं लकड़ी होती है, इसीलिये इसको पचबीनी या मुग़ली जोड़ी के नाम से [6]मौसूम करते है **देखें** तस्वीर किवाड़ ([1]आकार, [2]मुख्य भाग, [3]सुन्दरता, [4]किनारा, [5]खड़ी, [6]सम्बोधित)

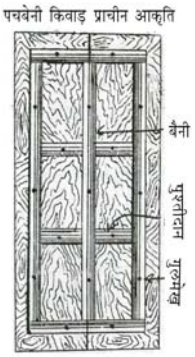

पच्चर (स्त्री) लकड़ी का पतला छोटा और बेकैंडा टुकड़ा जो किसी तख्ते या कड़ी से फटकर जुदा हो जाये। ज़र्ब लगने से मेज के तख्ते की पच्चर उखड़ गयी। पलंग की चूल में पच्चर ठोक दो **निकलना, उखड़ना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

पुश्तीवान (पु) देसी किवाड़ का कमर पटिया [1]यानी किवाड़ के पिछले रुख़ पर तख्तों के [2]अर्ज़ में मज़बूती के लिये [3]हस्बे ज़रुरत, थोड़ी–थोड़ी दूरी पर जड़े हुये डंडे **डालना, लगाना, जड़ना** के साथ बोला जाता है। ([1]अर्थात्, [2]चौड़ाई, [3]आवश्यकतानुसार)

पुश्तीजाल (पु) देखें पचबेनी जोड़ी

पैंताम (पु) देखें पाताम

पिंजरा (पु) लकड़ी में जालीदार बना हुआ काम, जाली और कटाव का काम जो किवाड़ के पट या सन्दूक़, सन्दूकचों के पाखों में बनाया जाये, पंजाब में पिंजरे की [1]सिन्अ़त से मौसूम किया जाता है। किसी ज़माने में इस सिन्अ़त के लिये बरेली, शाहपुर, गुरदासपुर, आज़मगढ़, गुजरात ख़ास तौर पर मशहूर थे। ([1]कारीगरी)

पैतामदार चौखट (स्त्री) पैताम बनी हुयी चौखट, **देखें** [1]जदीद [2]वज़अ़ की चौखट **देखें** तस्वीर बर सफा। ([1]आधुनिक, [2]आकार)

पेशानी (स्त्री) सहावटी, सरोल **देखें** सरोल

फिरका (पु) [1]मामूल से बड़ी [2]क़ौस या [3]दायरे का निशान डालने की चिफ़्ती, इससे बड़ी प्रकार का काम लेते हैं। ([1]प्रचलित, [2]अर्धगोलाकार, [3]गोलाकार)

इस तरह कि जब एक सिरे को [1]मरकज़ पर क़ायम करके घुमाते हैं, तो दूसरे सिरे से [2]हस्बे ज़रूरत बड़े से बड़े दायरे या [3]क़ौस का निशान लग जाता है। यह काम डोरी से भी लेते हैं। (फिरना) ([1]केन्द्र बिंदु, [2]आवश्यकता के अनुसार, [3]अर्ध गोलाकार)

फरकोटा (पु) दिलेदार किवाड़ के चौखटे [1]यानी हाशिये की खड़ी पट्टी जो औसत दर्जे के किवाड़ों में क़रीब 3–4 इंच चौड़ी और एक इंच मोटी होती है। **देखें** दिलेदार किवाड़ **लगाना डालना** के साथ बोला जाता है। ([1]अर्थात)

फला (पु) देखें बर्मा प्रयोग।

ताईती मुहरा (पु) देखें गुलमोहरा

तख़्ताबन्दी (स्त्री) चोबी क़नात तख्तों की बनी हुयी आड़ या रोक, जो किसी दरवाजे को बन्द करने या किसी बड़े कमरे को दो या ज्यादा हिस्सों में [1]तक़सीम करने के लिये तख़्ते जोड़कर बीच में बना दी जाये **करना** के साथ बोला जाता है। ([1]विभाजित)

तरायल (स्त्री) चोबी छत में कड़ी, तख़्तों और फकसा (मिट्टी की तह) के [1]दरमियान फूस की तह, जो कड़ी तख्तों को मिट्टी के असर से [2]महफ़ूज़ रखे, [3]बाज़ [4]मुक़ामात पर तिरपाल भी कहते है। ([1]मध्य, [2]सुरक्षित, [3]कुछ, [4]स्थानों)

तकिया (पु) देखें बस्ता प्रयोग तस्वीर बस्ता 1।

तरक (स्त्री) बिंड़ा, बिनौड़ा, **देखें** सरकौंडा और बिनौंड़ा (संस्कृत–तरा [1]बमानी बल्ली, कड़ी) ([1]जिसका अर्थ)

तिल्ली (स्त्री) चोबी के बरामदे के दो [1]सुतूनों के [2]दरमियान उन के पेशानी की जगह आड़ी जड़ी हुई लकड़ी। ([1]खम्बों, [2]मध्य)

तीखा (पु0) देखें लंगोट।

तीरबन्दी (स्त्री) छत की कड़ियों के चश्मों के [1]दरमियान की तख्ताबन्दी [2]यानी दो कड़ियो का दरमियानी [3]फ़ासिला बरक़रार रखने को उनके बीच में जड़ा हुआ तख़्ता जो दीवार के आसार पर सामने के रुख़ दिखाई देता है। **करना** के साथ बोला जाता है। ([1]मध्य, [2]अर्थात, [3]दूरी)

तीश (तीग़ा) पु0 देखें बसौला

तेग़ (स्त्री) देखें रंदा

टांड़ (पु) देखें मचान

टांगी या टिंगारी (स्त्री) लकड़ी की मोटी छटाई का कुल्हाड़ी की किस्म का औज़ार।

टिकोरी (स्त्री) देखें सुतारी

टिकटिकी (स्त्री) देखें शिकंजा

टूट्वां किवाड़ (पु) दो फरदा किवाड़, तह हो जाने वाला किवाड़, ऐसा किवाड़ जिसके [1]अर्ज़ या [2]तूल में दो बराबर हिस्से बना कर कब्ज़ो से जोड़ दिए गए हों। **देखें** तस्वीर दिलेदार किवाड़ ([1]चौड़ाई, [2]लम्बाई)

टेट्री का बरमा (पु) [1]जदीद [2]वज़अ़ का बरमा; जो [3]क़दीम वज़अ़ के बरमे से अलग होता है, और बगैर कमानी के एक हत्थी की हरकत से जो उस में लगी रहती है, घूमता है। यह [4]अ़मूमन धात की चीज़ो में सुराख करने के काम आता है। ([1]आधुनिक, [2]आकार, [3]प्राचीन, [4]प्रायः)

टेटरी का बरमा

टेटरी का बड़ा बरमा चक्करदार

ठेक (स्त्री) रंदा की लकड़ी देखें रंदा।

जोड़ी (स्त्री) दरवाज़े के दोनों किवाड़ [1]इस्तिलाह में जोड़ी कहलाते है, और चूँकि हर दरवाज़े में [2]अ़मूमन दो किवाड़ लगाए जाते हैं, इसलिए जोड़ी एक आम [3]इस्तिलाह हो गई है। एक किवाड़ को पट कहते है। **प्रयोग** बंगले के दरवाज़ों में [4]निहायत [5]खुशवज़अ़ आइनेदार जोड़ियाँ चढ़ी हुई है। **प्रयोग** दिलेदार जोड़ियों में लोहे की चादर के दिले डाले गए है। **प्रयोग** बड़े दरवाज़ों की जोड़ियाँ चौफ़रमी और आ़म दरवाज़ों की दो फ़रमी है। ([1]पारिभाषन, [2]प्रायः, [3]परिभाषा, [4]अत्यधिक, [5]सुन्दर आकार)

झारे का रंदा (रंदः) (पु) पच्चर उखड़ने वाली, लकड़ी की सतह पर कटवां धारियाँ डालने का रंदा, ताकि सतह़ की रंदाई में पच्चरें न उखड़े।

झालर (स्त्री) देखें मुहरक

झांप (स्त्री) दरवाज़े की ऐसी आड़ या रोक जो किवाड़ की जगह [1]क़ायम की जाए, और [2]हस्बे ज़रुरत लगाई और हटाई जा सके। [3]बाज़ [4]मुक़ामात पर चाँचर कहते है। ([1]स्थापित, [2]आवश्यतानुसार, [3]कुछ, [4]स्थानों)

झांपी (स्त्री0) देखें झांप।

झापियां (स्त्री0) देखें झांप।

झब्बा (पु) रौशनदान या मामूली दरवाज़े के चेहरे का (धूप और बौछार से हिफाज़त क़ो) चौखट के ऊपर बना हुआ साईबान।

झब्बू (पु) देखें हथ खड्डा।

झरमा (पु) मोटी धार का मामूली छिलाई के काम का रंदा, यानी वह रंदा जो पहली बार लकड़ी की खुरदरी सतह साफ़ करने को इस्तेमाल किया जाए।

झिरी का रंदा (पु) लकड़ी की सतह पर बारीक दर्ज़ बनाने का रंदा, इसको दर्ज़ का रंदा भी कहते है। **देखें रंदा।**

झिलमिलीदार किवाड़ (पु) झिलमिलीदार बने हुए दिलेदार किवाड़, यानी वह किवाड़ जिसका दिला झिलमिलीदार बना हुआ हो **देखें** झिलमिली पेशा संगतराशी

झिंजिनी (स्त्री) दरवाज़े के पट को बंद रखने का [1]जदीद [2]वज़अ़ का कमानीदार चोरखटका, **देखें** बिल्ली। कमानी की वजह से पट बंद करने से खटका खुद बखुद लग जाता है–जैसे मोटर के पट में लगा होता है। ([1]आधुनिक, [2]आकार)

चपत या चपती जोड़ (पु0) अधवाड़ का जोड़, दो तख्तों या लकड़ियों के सिरो को, जितना भी भाग जोड़ना हो मोटान में से बराबर का आधा–आधा खांच काट कर जोड़ मिलाने का तरीक़ा। चपत से किसी क़दर बड़े और मज़बूत जोड़ को मल्लाही जोड़ कहते है, जिसमें जोड़ के खांचे [1]क़ायम–उल–ज़ाविया बने होते है, यह [2]लफ़्ज़ गालिबन् मिलाना से मिलन और फिर बिगड़ कर मिल्लाही हो गया है। तफ़सील के लिए **देखें** मिलन की जाली। (पेशा संगतराशी पृ0) ([1]90ह का कोण, [2]शब्द)

चिपवा बेड़का (पु0) मयान तराश, फूलपत्ते खोदने के काम का बारीक नोक का बेड़का, **देखें** बेड़का

चटखनी (स्त्री) दरवाज़े के किवाड़ों को अन्दर से बंद रखने का [1]जदीद [2]वज़अ़ का खटका जो अंग्रेज़ी वज़अ़ की जोड़ियों में लगाया जाता है। चटखनी के मुँह के कुंडे को यानी जिसमें चटखनी का मुँह फंसाया जाता है, इकराम कहते हैं। **लगाना, बंद करना** के साथ बोला जाता है। ([1]आधुनिक, [2]आकार)

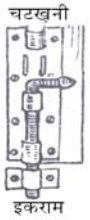

चड़ (स्त्री) देखें बरमा प्रयोग।

चोटिया (पु0) देखें बरमा प्रयोग।

चौरसा या चौरसी (पु0) देखें पटासी।

चोर खटका (पु0) देखें बिल्ली 1 तस्वीर।

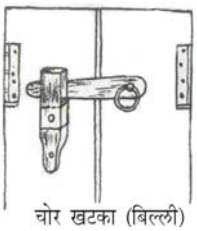
चोर खटका (बिल्ली)

चौसा (पु0) आरी के दांत तेज़ करने की तीन पहल शक्ल की रेती (सोहन)।

चौफ़र्दी जोड़ी (स्त्री) टूटवां किवाड़ों की ऐसी जोड़ी, जिसका हर पट दो फ़रदा बना हुआ हो। **देखें** जोड़ी और टूटवां किवाड़ तस्वीर।

तस्वीर जोड़ी और टूट्वां किवाड़

चौखट (स्त्री) दरवाज़े के [1]दहन का [2]चोबी या [3]संगीन चौकटा, चौखट दो [4]वज़अ़ की बनाई जाती है, एक हिन्दुस्तानी वज़अ़ की बग़ैर पेतामदार जो अँग्रेज़ी वज़अ़ की कहलाती है। ([1]मुँह, [2]लकड़ी, [3]पत्थर, [4]आकार)

चूल (स्त्री) लकड़ी या धात की चीज़ के किसी एक [1]जुज़ उसके किसी दूसरे जुज़ में जोड़ने या क़ायम रखने के लिए उसके सिरे पर [2]हस्बे ज़रुरत बनाया हुआ मुँह–[3]मजाज़न् उस सुराख को भी कहते हैं जिसमें वह मुँह फँसाया जाता है। **देखें** ऊल ([1]अंश, [2]आवश्यकतानुसार, [3]लक्षितार्थ)

चूल बेंदना (मस्दर) चूल खोंदना, बनाना।

चूल सालना (मस्दर) चूल बिठाना, जमाना।

छाती (स्त्री) बढ़ई के बसौले के बीच का उभरा भाग। **देखें** बँसुला 2।

छपका (पु0) देखें कुण्डी 2।

छई (स्त्री) देखें बहादुरी।

ख़ातम बंदी (स्त्री) तख़्ताबंदी जो छत की कड़ियों को छिपाने के लिए बतौर छतगीरी कड़ियों की [1]रुकार पर [2]खुशनुमाई के लिए की जाए। ख़ातमबंदी की सतह पर लकड़ी के विभिन्न प्रकार के फूल और जालियाँ बनाकर जड़ी जाती है। जाली के नाम से ख़ातमबंदी को [3]मौसूम करते है। जैसे–बदरुमी, क़लमदानी और मलंद की ख़ातमबंदी वग़ैरह लालक़िला देहली के दरबार–ए–ख़ास में ख़ातमबंदी के [4]आला नमूने बने हुए हैं। **करना** के साथ बोला जाता है। ([1]मुख्य पृष्ठ, [2]सुंदरता, [3]संबोधित, [4]उच्चकोटि)

ख़ज़ाना (पु0) देखें बादरी

ख़तकश (पु0) लकड़ी पर सीधी और [1]मुत्वाज़ी दूरी की लकीरें डालने का बढ़ई का एक ख़ास किस्म का [1]चोबी का औज़ार। ([1]समानान्तर, [2]लकड़ी)

ख़तकश

दर्ज़ की आरी (स्त्री) नाज़ुक काम बनाने की बारीक और पतली क़िस्म की आरी। **देखें** आरी

दर्ज़ का रंदा (पु0) देखें झिरी का रंदा

दिला (पु0) दिलेदार जोड़ी या किवाड़ के चौखटे के हिस्सों के [1]दरमियान डली हुई आड़ या रोक (**देखें** दिलेदार किवाड़ व तस्वीर किवाड़।) ([1]मध्य)

दिलेदार किवाड़ (पु0) [1]जदीद [2]वज़अ़ का किवाड़ [3]इस्तिलाह –ए–आ़म में अँग्रेज़ी क़िस्म के किवाड़ या जोड़ी के नाम से [4]मौसूम किया जाता है। यह हिन्दुस्तानी किवाड़ की तरह [5]सालिम तख़्तों का नहीं बनाया जाता है, बल्कि किवाड़ के नमूने का चौखटा बनाकर उसके बीच में तख्ता या शीशा फंसा देते है जो [6]इस्तिलाह में दिला कहलाता है। चौकटा [7]अ़मूमन दो या तीन ख़ानों का होता है, जो [8]अर्ज़ में पट्टियाँ जड़ कर बना दिए जाते है। ([1]आधुनिक, [2]प्रकार, [3]आम–भाषा, [4]सम्बोधित, [5]समूचे, [6]पारिभाषन, [7]प्रायः, [8]चौड़ाई)

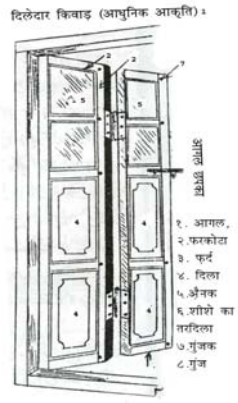

दो पटा दरवाज़ा (पु0) दो पलिया दरवाज़ा, ऐसा दरवाज़ा जिसमें किवाड़ों के दो पट यानी जोड़ी लगी हुई हो।

दो पल्लिया दरवाज़ा (पु0) देखें दो पटा दरवाज़ा

दो साली चौखट (स्त्री) दोहरी बनावट की चौखट जो दरवाजे के आसार में भरपूर आए यानी जैसी पाखे के सामने की कोर पर हो, वैसी ही पिछली कोर पर हो। इस क़िस्म की चौखट लगाने का पुराना और [1]क़दीम तरीका था अब [2]मतरुक है। ([1]प्राचीन, [2]परित्यक्त)

दो फ़रदा किवाड़ (पु0) देखें टूट्वाँ किवाड़ तस्वीर।

दिहिल (स्त्री) चौखट के बाज़ुओं के नीचे की लकड़ी जिस पर बाज़ू [1]क़ायम किए जाते हैं। उतरंगे के [2]मुकाबिले की लकड़ी। **देखें** तस्वीर चौखट। ([1]स्थापित, [2]समानान्तर)

देहलीज़ (स्त्री) चौखट की दिहिल के नीचे उस का बोझ सहारने को बतौर दासा लगी हुई पत्थर या लकड़ी की पट्टी। **डालना, लगाना** के साथ बोला जाता है। [1]मजाज़न् दरवाज़े के सामने की [2]आमदोरफ्त की जगह। **प्रयोग** दरवाज़े के आगे एक बहुत बड़ी

दहलीज़ है, उस में माचा बिछा हुआ है। (रसूम–ए–हिन्द भाग 1) ([1]लक्षितार्थ, [2]आवागमन)

देसी जोड़ी (स्त्री) देखें हिन्दुस्तानी [1]साख़्त के किवाड़। ([1]बनावट)

देवली (स्त्री) हिन्दुस्तानी किवाड़ की नीचे की चूल के घर की छोटी सी [1]मुसल्लसनुमा बनी हुई मुढ़्डी, जो दिहिल में अन्दर के रुख़ सिरे पर जड़ी रहती है। चूंकि इस मुढ़्डी पर देवले की शक्ल का चूल का घर बना होता है, इसलिए इसको [2]इस्तिलाहन् देवली कहते है। **देखें** तस्वीर चौखट बर सफा (लगाना, जड़ना, बिठाना) ([1]त्रिकोणीय, [2]पारिभाषन)

धरन (स्त्री) देखें धरौंडा

धरौंडा (पु0) देखें सरवल

डाट (स्त्री) रंदे की तेग़ की खूंटी की शक्ल की आड़ जो तेग़ को जमाये रखती है। **देखें** रंदा **लगाना, फंसाना** के साथ बोला जाता है।

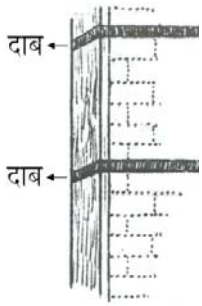

डब (स्त्री) दो तख्तों के [1]दरमियान दाँतेदार कटाव की [2]शक्ल की बनी हुई चूलें, जो जोड़ मिलाने को आपस में एक दूसरे के अन्दर [3]पैवस्त दी जाती है, यह अँग्रेज़ी तर्ज़ का जोड़ कहलाता है, और अंग्रेजी [4]लफ़्ज़ ''डो'' को बिगाड़ कर उर्दू में डब और इस [5]वज़अ़ से लगाए हुए ज़ोड़ को डेरु, डुगडुगी या डबदार जोड़ कहते है। ([1]मध्य, [2]आकृति, [3]सम्बद्ध, [4]शब्द, [5]प्रकार)

डबदार जोड़ (पु0) देखें डब।

डुगडुगी (स्त्री) देखें डब।

डुगडुगीदार (पु0) देखें डब।

डेरु (पु0) देखें डब।

डेरुदार जोड़ (पु0) देखें डब।

रम्मा (स्त्री) लकड़ी में चौड़ी और गहरी चूल छेदने की बड़ी किस्म की पिटासी **देखें** पिटासी

रम्बा (पु0) देखें रम्मा।

रंदा (पु0) लकड़ी की तह को खुरच कर साफ और चिकना करने का बढ़ई का औज़ार, रंदे

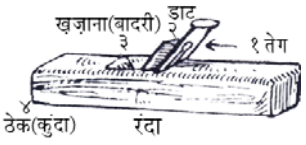

[1]मुख़्तलिफ़ कामों के लिए मुख़्तलिफ़ [2]वज़अ़ के होते है और चंद ख़ास किस्म के रंदों के नमूनो और उनके [3]मसनूअ़ी हिस्सों के [4]इस्तिलाही नामों की [5]तौज़ीह के लिए **देखें** ([1]विभिन्न, [2]आकार, [3]नकली, [4]पारिभाषिक, [5]व्याख्या)

रम्टा (पु0) देखे रम्मा।

रंदाई (स्त्री) रंदे से लकड़ी की सतह साफ और चिकनी करने का [1]अ़मल। ([1]प्रक्रिया)

रुखानी (स्त्री) लकड़ी में चूल का डौल बनाने का पिटासी की [1]किस्म का औज़ार, जो मोटा और सिकुड़े मुँह का होता है और जिससे चूल की इबतिदाई और मामूली छिदाई का काम किया जाता है। [2]बाज़ कारीगर निहानी कहते है, जो [3]लफ़्ज़ नहरनी का बिगड़ा हुआ है। ([1]आकार, [2]कुछ, [3]शब्द)

जुल्फ़ी (स्त्री) किवाड़ और चौखट के बाजू में जड़ी हुई [1]आहनी या पीतल की ज़ंजीर जिस की वजह से किवाड़ चौखट से [2]अ़लाहिद नहीं किया जा सकता, जुल्फ़ी के बजाये कड़ा भी लगाया जाता है। उसको [3]इस्तिलाह में गरदांग और कुल्फ़ी भी कहते है। **डालना, जड़ना** के साथ बोला जाता है। **देखें** तस्वीर चौखट। ([1]लोहे, [2]अलग, [3]पारिभाषिक शब्द)

जंजीर (स्त्री0) देखें आगल।

ज़ंबूर (पु0) लकड़ी में जड़ी हुई कील निकालने का औज़ार।

सांकल (स्त्री) देखें आगल (संस्कृत श्रृंखला)

छपका देखें आगल

साकल (स्त्री0) देखें आगल।

सालना (क्रिया) लकड़ी के काम में चूल जड़ना, चूल बिठाना लकड़ी के दो टुकड़ो का जोड़ मिलाना।

सुतार (पु0) सिलावट। सुतार, [1]लफ़्ज़ सुतर धर का बिगड़ा हुआ है। सुतरधर संस्कृत में जंगी गाड़ियों की तैयारी और उनको बतौर पेशा चलाने का इंतजाम करने वाले को कहते हैं। उर्दू में [2]बाज़ [3]मुक़ामात पर बढ़ई के लिए बोला जाता है। ([1]शब्द, [2]कुछ, [3]स्थान)

सुतारी (स्त्री) बारीक नोक की निहानी, लकड़ी में बारीक चूल और नाज़ुक क़िस्म की खुदाई और कटाई बनाने का औज़ार। **देखें** निहानी।

सरवल (स्त्री) चौखट के उतरंगे के ऊपर वाली देहलीज़ की जवाबी लकड़ी या पत्थर की पट्टी, जो बतौर पटाव के रखी जाती है। इसमें किवाड़ की ऊपर की चूल के सुराख़ होते है।

सरकोंडा (पु0) देखें आड़ डंडा।

सुफ़टी (स्त्री) देखें बुझावट 2।

सलाख़दार किवाड़ (पु0) सलाख़दार दिले का किवाड़ यानी वह किवाड़ जिस के दिले में बजाए तख़्ते या शीशे की सलाख़ें लगी हो।

सलाई (स्त्री) सालने का काम, **देखें** सालना।

सुम (पु0) चौखट के उतरंगे और दिहल के बाजुओं से बाहर निकले हुए सिरे, जो चुनाई में दब जाते है। **देखें** तस्वीर चौखट।

सुहावटी (स्त्री) पेशानी, **देखें** सरवल।

शिकंजा (पु0) दिलेदार किवाड़ या लकड़ी के किसी चौकटे की चूलें पच्ची करने यानी मज़बूत बिठाने का औज़ार।

टिकटकी (शिंकजा)

ऐनकदार जोड़ी (स्त्री) वह दिलेदार किवाड़ जिसके दिले में रौशनी आने को ऊपर के रुख़ एक चौकोर शीशा और नीचे तख़्ता लगा हो। **देखें** तस्वीर किवाड़ बर सफा

ग़ल्तां का रंदा (पु0) देखें रंदा।

क़ब्ज़ा (पु0) अँग्रेज़ी [1]वज़अ़ के किवाड़ों को चौखट के साथ जड़ने के [2]आहनी या पीतल के बने हुए जोड़, जो [3]हस्बे ज़रुरत छोटं बड़े होते हैं, उर्दू में छपका कहते है। **देखें** तस्वीर चौखट। ([1]ढंग, [2]लोहे, [3]आवश्यकतानुसार)

कुल्फ़ी (स्त्री) देखें आड़ या अड़ंगा।

क़लमदानी ख़ातमबंदी (स्त्री) मलंद की, ख़ातमबंदी। **देखें** ख़ातमबंदी।

कान (पु0) देखें सुम।

कटरेता (पु0) लकड़ी को घिसने का मोटे दाँतों का एक किस्म का सोहन।

कटेहरा (पु0) कटगढ़ा (कटघर) चोबी जंगला, लकड़ी की बनी हुई जालदार बाटर। कटहरे की ऊपर की लकड़ी को जिसमें जाली फँसाई जाती है मूंडन कहते है।

कटगढ़ा (कटघर) (पु0) देखें कटेहरा।

कर्द (स्त्री) दो लकड़ियों के [1]दरमियान तख़्ता या लकड़ी फँसाने का छोटा सा कटाव या खाँचा, जो [2]अ़मूमन सात के [3]हिन्दसे की शक्ल का होता है। **लगाना** के साथ बोला जाता है। ([1]मध्य, [2]प्रायः, [3]अंक)

किरनदार चौखट (स्त्री) हिन्दुस्तानी बनावट की चौखट, जिस के बाजुओं पर [1]मुनब्बतकारी की हुई और पान की शक्ल के नक़्श बने हुए हों। ([1]बेलबूटे)

कड़ी तख़्ते की छत (स्त्री) चोबी छत यानी कड़ी तख़्ते पाट कर बनाई हुई छत।

कमानी (स्त्री) बरमा फिराने की कमान। **देखें** बरमा।

कनासी (स्त्री) आरी के दाँते तेज़ करने की [1]सह पहली सोहन (**रेती**) ([1]तीन)

कुंदा (पु0) देखें रंदा।

कुंडा (पु0) देखें आगल।

कुडी (स्त्री) दरवाज़े के पटों को बंद रखने वाली [1]आहनी या पीतली ज़ंजीर। कुंडा–कुंडी का सिरा अटकाने का हल्का, जो कुंडी के [2]मुक़ाबिल दूसरे किवाड़ या चौखट पर लगाया जाता है, और जिस में कुंडी का सिरा फँसा दिया जाता है। छपका आहनी या पीतल की पत्ती की बनी हुई कुडी या क़ब्ज़ा, ज़ंजीर की शक्ल की हल्क़ेदार बनी हुई को, कुंडी और पट्टीनुमा जुड़ी हुई को छपका कहते हैं। ([1]लोहे का)([1]लोहे, [2]सामने का)

कोर का रंदा (पु0) गोलची लकड़ी की कोर गोल करने और साफ करने का रंदा। **देखें** तस्वीर रंदा।

किवाड़ (पु0) (संस्कृत कपटा) दरवाज़े की चौखट के [1]दहन का पट जो [2]तादाद में दो हो तो [3]अ़र्फ़ आ़म में [4]मुख़तसरन् जोड़ी और एक हो तो पट से [5]मौसूम किया जाता है।

पद • गोजर, रांगड़ दो, कुत्ता बिल्ली दो
यह चार न हों, खुले किवाड़ सो

पद • जूं ही देती झपट किवाड़
उड़ जाती मैं कोस हज़ार

देखें जोड़ी और पट, इस की मशहूर किस्में पचबेनी और दिलेदार हैं। पचबेनी को देसी या मुग़लई जोड़ी और दिलेदार को अँग्रेजी जोड़ी भी कहा जाता है। **देखें** तस्वीर किवाड़ बर सफा। ([1]मुंह, [2]संख्य, [3]आ़मभाषा, [4]संक्षेप, [5]सम्बोधित)

खाती (पु0) लकड़ी में पच्चीकारी का काम करने वाली एक ज़ात, लेकिन [1]इस्तिलाहे आ़म में [2]बाज़ [3]मुक़ामात पर बढ़ई को कहने लगे हैं। ([1]आम भाषा, [2]कुछ, [3]स्थान)

खांचना (क्रिया) चूल बिठाने के लिए सिरों की कोर [1]तराशना सतह में छोटा सलामीदार कटाव बनाना। ([1]खुरचना)

खाँचा (पु0) लकड़ी की सतह पर छोटा तिरछा कटाव, **देखें कर्द। देना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

खटका (पु0) देखें चटखनी।

खरज काब (पु0) लकड़ी की सतह पर चौखाना निशान डालने का रंदा।

खण्डेल (पु0) बागड़ी, लकड़ी गढने की खांचेदार मुढ़ढी यानी फुट डेढ़फुट लम्बा चौपहल टुकड़ा जिसके बीच में लकड़ी टिकाने का ठीया बना होता है।

खंदेल (बागड़ी)

गुटका (पु0) आड़नी, **देखें** अड़ंगा।

गिरदा (पु0) गोलक, तख्ता पर लकीरें डालने की गोल मुँह की निहानी लगा हुआ रंदा।

गिरदा बेडका (पु0) चोबी [1]मुनब्बतकारी में गोलाई काटने का [2]क़ौसनुमा मुँह का बेड़का। ([1]बेलबूटे, [2]धनुषनुमा)

गिरदान (पु0) कुल्फ़ी, **देखें** आड़ या अड़ंगा।

गिरदांग (पु0) देखें गिरदान।

गिरमिट (पु0) बड़े और गहरे सुराख़ करने का [1]जदीद [2]वज़अ़ का पेचदार बरमा (गिमलिट– अंग्रेज़ी) ([1]आधुनिक, [2]आकार)

गिरमिट (गिमलिट)

गज़ (पु0) बस्ते के जाल की चोबी आड़ या आड़ें **देखें** बस्ता प्रयोग व तस्वीर।

गलीडण्डे की जड़ाई (स्त्री) दो तख्तों की दर्ज़ से [1]दर्ज़ मिलाकर ऊपर पतली चिफ़ती जमाकर जड़ने का तरीक़ा इस तरह जोड़ ऊपर से बंद कर दिया जाता है। ([1]झीरी)

गुलमुहरा (पु0) साइबान या खपरैल की [1]रूकार में मुहरक के कोनो पर लटकवां जड़े हुए गुलदार बने हुए खूंटे। सादी और मामूली बनावट का पाली मुहरा और [2]मुनक्क़श काम का ताइती मुहरा कहलाता है। **देखें** मुहरक। ([1]मुख्य भाग, [2]बेलबूटेदार)

गिलवे का रंदा (पु0) [1]मुसल्लसनुमा शक्ल का पुरानी [2]वज़अ़ का रंदा। **देखें** रंदा बर सफा ([1]तिकोनिया, [2]ढंग)

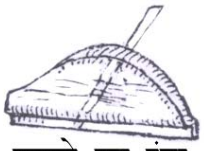
गलवे का रंदा

गुंजक (स्त्री) दिलेदार किवाड़ के चौकटे की आड़ी यानी [1]अ़र्ज़ में जड़ी हुई पट्टियाँ। **देखें** तस्वीर किवाड़। **डालना, फंसाना, लगाना** के साथ बोला जाता है। ([1]चौड़ाई)

गुंजलक (स्त्री) देखें गुंजक।

गोल बस्ता (बस्तः) (पु0) देखें अद्धे का बस्ता

गोलची (स्त्री) कोर का रंदा लकड़ी का किनारा गोल करने और सतह पर धारियाँ डालने का रंदा।

गोलक (पु0) देखें गिरदा।

गोले का रंदा (पु0) लकड़ी की सतह पर गोल उभरवां निशान बनाने का रंदा। **देखें** रंदा।

गोले की प्रकार (स्त्री) लकड़ी की गोलाई नापने की प्रकार।

गोले का प्रकार

गुंज (स्त्री) देखें गूंज।

गूंज (स्त्री) दिलेदार किवाड़ के चौकटे के जोड़ों पर जुड़ी हुई चोबी [1]मेंख़ जो [2]अ़मूमन बांस की होती है। **देखें** दिलेदार किवाड़ तस्वीर। ([1]खूटियां, [2]प्रायः)

लाप (स्त्री) बँसुले का मुँह यानी धारदार हिस्सा। **देखें** बसूला

लाइन (स्त्री) लकड़ी की सतह की [1]नाहम्वारी जो बक्कल या किसी दूसरी ख़राबी की वजह से पैदा हो गई हो, और जिस की वजह से लकड़ी का कोई हिस्सा असली सतह से नीचे को दब गया हो, [2]इस्तिलाह में लाइन कहलाता है। **पड़ना** के साथ बोला जाता है। ([1]असमतल, [2]पारिभाषन)

लतखोर (पु0) देखें दहलीज़।

लतखोरः (पु0) देखें लतखोर।

लंगोट (पु0) किवाड़ की [1]रूकार पर [2]वतरी शक्ल में जड़ा हुआ [3]पुश्तीवान। **देखें** तस्वीर किवाड़। ([1]सामने का भाग, [2]कमानी की तरह, [3]मज़बूती के लिए लगाई गई लकड़ी)

लंगोटदार किवाड़ (पु0) तिरछा पुश्तीवान जड़ा हुआ देसी [1]वज़अ़ का किवाड़। **देखें** तस्वीर किवाड़। ([1]आकार)

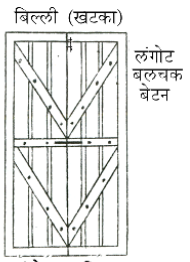

मारतोल (पु0) लकड़ी में से कील निकालने का एक ख़ास किस्म का ज़म्बूरा जिसमें एक तरह का हथौड़ा भी शामिल होता है। **(अलग से तस्वीर देना है)**

माली जोड़ (पु0) देखें डब।

मचान (पु0) [1]असबाब रखने की बनी हुई दुछत्ती, जो सामान रखने के कोठों में जगह की कमी की वज़ह छत से कुछ नीचे दो दीवारों के [2]दरमियान कड़ियाँ

लगाकर बनाया जाता है। **बनाना, डालना** के साथ बोला जाता है। ([1]अतिरिक्त सामान, [2]बीच की)

मिलन (पु0) देखें डब।

मुग़लई जोड़ी (स्त्री) देखें पचबेनी जोड़ी तस्वीर।

मल्लाही जोड़ (पु0) देखें चपत।

मक्कू (पु0) देखें बरमा। प्रयोग

मौज–मलंद (स्त्री) देखें ख़ातमबंदी।

मूंड (स्त्री) हँसुले का पिछला हिस्सा जिसमें [1]दस्ता डाला जाता है। **देखें** बसूला ([1]हैण्डिल, हत्था)

मूंडन (स्त्री) देखें कटेहरा 1

मुहरक (पु0) साइबान या खपरैल की रुकार की ओलती के नीचे जड़ी हुई चोबी झालर बाज़ सादा और [1]बाज़ [2]ख़ुशनुमा कटाव के काम की बनी हुई होती है। ([1]कुछ, [2]सुन्दर)

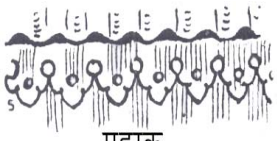
मुहरक

मयान तराश (पु0) देखें चिपवा बेड़का।

नज्जार (पु0) देखें बढ़ई।

नरेली (स्त्री) देखें बरमा प्रयोग।

निहानी (स्त्री) देखें रुखानी। तस्वीर रुख़ानी

हथ खड्डा (पु0) गाड़ी की खिड़की के पट के चौकटे की ऊपर और नीचे की लकड़ियों में पट की उतारने चढ़ाने के लिए उंगलियों के सिरे अटकाने का बना हुआ खांचा, या किसी धात की बनी हुई आड़ जिसको झब्बू और हथलेवा कहते है।

हथलेवा (पु0) देखें हथ खड्डा।

हुड़का (पु0) हुड़का दरअसल ऐसी चटख़नी को कहते है जो खुद बंद हो जाए, जैसी मोटर वगैरह में होती है। **देखें** चटखनी।

हैक की आरी (स्त्री) फूल बूटें काटने की बारीक़ [1]क़िस्म की आरी। ([1]प्रकार)

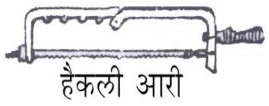
हैकली आरी

अनुभाग–(5) पेशा–ए–संगतराशि

अठमास (पु0) पत्थर, लकड़ी या गज की [1]तामीर में आठ पहल बना हुआ [2]नक़्श यह [3]इस्तिलाह [4]अ़मूमन पत्थर में तराशी हुई आठ पहल जाली के लिए बोली जाती है। पूर्वी कारीगर अठवाँस बोलते है। **प्रयोग** [5]रौज़ा–ए–ताजमहल में तरह–तरह के अठमास बने हुए है। ([1]निर्माण, [2]आकृति, [3]परिभाषा, [4]प्रायः, [5]समाधि–स्थल)

अठमासी जाली (स्त्री) आठपहल [1]शक्ल की तराशी हुई जाली, कई–कई अठमासों के [2]मजमूओं से [3]मुख़्तलिफ़ [4]क़िस्म के खुशनुमा नमूने जालियों के तैयार किये गये हैं और हर नमूने में अठमास को बरक़रार रखा गया है। **देखें** तस्वीर जाली ([1]आकृति, [2]पुंजों, [3]विभिन्न, [4]प्रकार)

अठवांस (पु0) देखें अठमास।

आस्थम (पु0) देखें सुतून।

इलाचा (पु0) पत्थर या लकड़ी के दासे की [1]रुकार पर तराशा हुआ, सह (तीन) पतिया [2]नक़्श–ज़्यादा [3]खुशनुमा बनाने के लिए पत्तियों के कटाव तीन से ज़्यादा भी बनाए जाते है। [4]तफ़सील व तस्वीर के लिए **देखें** दासा **करना, डालना, डोलना** के साथ बोला जाता है। इलाइचा गढ़ने या तराशने के लिए निशान डालना, सूरत या नक्शा बनाना **गढ़ना, काटना, बनाना** के साथ बोला जाता है। इलाइचा **तराशना, खोदना** के साथ बोला जाता है। ([1]मुख्य पृष्ठ, [2]चित्र, [3]सुन्दर, [4]विस्तार)

इलाइचा (पु0) देखें इलाचा।

इलाइचः (स्त्री) देखें आंट।

इलाइचा का दासा (पु0) वह दासा जिसकी [1]रूकार पर इलाइचा बना हुआ हो। **देखें** दासा व तस्वीर। ([1]मुख्य पृष्ठ)

इलायचा का दासा

इलाइचा की आंट (स्त्री) देखें आंट।

अलंगा (पु0) संगीन चुनाई की [1]रूकार के रद्दे का [2]मअ़मूल से [3]किसी क़दर बड़ी नाप का गढ़ा हुआ पत्थर,चेहरा बना हुआ पत्थर। **देखें** चुनाई ([1]मुख्य पृष्ठ, [2]परस्पर, [3]थोड़ा)

अलैन (स्त्री) दालान के पाखों से मिलाकर लगाए जाने वाले [1]सूतून के अद्धे। उस का पाखे से मिला रहने वाला चिपटा और [2]रुकारी रुख़ [3]दरमियानी सुतून का जवाबी होता है, यानी बनावट में दरमियानी सुतून के [4]मुशाबा होता है। अलैन अरबी लफ़्ज़ इल्लियीन का बिगड़ा हुआ है, जिसके माने खिड़की के हैं। पचदरे दालानों में सिरो की [5]मेहराबें [6]अ़मूमन छोटी और तंग बतौर दरीचा बनाई जाती है और कभी दालान के पाखो में दोनो तरफ सुतून से

मिला हुआ खिड़की की [7]वज़अ़ का दरीचा बनाया जाता है, [8]गालिबन् इसी वजह से फकवाई सुतून (बगली सुतून) को [9]इस्तिलाह में अलैन कहने लगे है। (खड़ी करना, क़ायम करना) **प्रयोग** अलैनें खड़ी होने के बाद पाखो की चुनाई शुरु होगी। **प्रयोग** अलैन [10]क़ायम हो जाए तो डाट का काम शुरु हो। ([1]खम्बे, [2]सामने का भाग, [3]मध्य, [4]मिलता–जुलता, [5]गुम्बद, [6]प्रायः, [7]तरह, [8]शायद, [9]तकनीकि रूप से, [10]स्थापित)

आलैन (पु0) देखें अलैन।

आमनी मरग़ोल (स्त्री) **देखें** मरग़ोल व तस्वीर मरग़ोल।

आवनी मरग़ोल (स्त्री) देखें आमनी मरग़ोल।

आंट (पु0) [1]बर्ग, पत्थर, या लकड़ी के दासे की [2]रूकार पर [3]ख़ुशनुमाई के लिए तराशे हुए पीपल के पत्ते की शक्ल के [4]नक़्श [5]मामूल से छोटी आंट, अंटी कहलाती है कटाव यानी बँगड़ीदार पहलू की आंट को [6]इस्तिलाह में इलाइचा कहते हैं जो [7]सह पतिया, छः पतिया वगैरह होता है। **देखें** तस्वीर दासा। **डालना, बनाना, काटना, गढ़ना** के साथ बोला जाता है। ([1]पत्ता, [2]मुख्य भाग, [3]सुन्दरता, [4]चित्र, [5]परम्परागत, [6]परिभाषन, [7]तीन)

आंट का दासा (दासः) या आंटदार दासः (पु0) [1]बर्ग दार दासा। **देखें** दासा वह दासा जिसकी [1]रुकार पर आंट बनी हो। **देखें** तस्वीर दासा। **प्रयोग** छज्जे में तोड़ों के नीचे आंटदार दासा डाला जायेगा। ([1]पत्ता, [2]मुख्य पृष्ठ)

अंजुम जाली (स्त्री) पत्थर, लकड़ी आदि में तारे की वज़अ़ की छः कोनी बनी हुई जाली–मुसल्लस [1]मुतसावी–उल–अज़लाअ़ की शक्ल को [2]मुख्तलिफ पहलुओं से जमाकर, तरह–तरह की [3]ख़ुशवज़अ़ और [4]ख़ुशनुमा नमूनों की जालियाँ पत्थर में तराशी गई है जिन की नक़ल दूसरे कारीगरों ने भी अपने–अपने कामों में की है। **देखें** तस्वीर जाली। ([1]वह त्रिकोण जिसके आमने सामने के भाग बराबर हों, [2]विभिन्न, [3]सुन्दर आकृति, [4]सुन्दर)

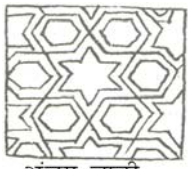
अंजुम जाली

अंटी (स्त्री) देखें आंट।

ऊलम्ना (क्रिया) पत्थर की सिल या चौके की सतह का मयाना (वस्ती नुक़ता) मालूम करना यानी नाप कर टेढ़ा तिरछापन जाँचना।

अहरन (पु0) अन घड़त [1]रूकार और [2]मामूल से [3]किसी क़दर बड़ी नाप का नुमाइशी चुनाई के लिए तैयार किया हुआ पत्थर–चुनाई में इस का अनगढ़ंत रुख़ ख़ुशनुमाई के लिए रुकार की तरफ रखा जाता है। ([4]तफसील और तस्वीर के लिए देखे चुनाई, पेशा–ए–मेअ़मारी पृ0) ([1]मुख्य पृष्ठ, [2]परम्परा, [3]थोड़ी, [4]विस्तार)

अहोरना (क्रिया) देखें टाकना।

बारामासी जाली (स्त्री) बारह पहल की शक्ल को [1]बाहमी तरतीब देकर तराशी हुई जाली, इस [2]क़िस्म में ज़्यादा से ज़्यादा बारह मासी और कम से कम तिमासी जालियाँ बनाई गई है। छह मासी और अठमासी दरमियानी वज़अ़ हैं। **देखें** तस्वीर जाली बर सफा ([1]क्रमबद्ध, [2]प्रकार)

बंगड़ी आंट (पु0) देखें इलाचां

बट्टा (पु0) मसाला या दवा [1]वगैरह पीसने का तिकोना, गोल या गाऊदुम शक्ल का गढ़ा हुआ पत्थर जो किसी चीज़ के पीसने को सिल पर या खरिल में रगड़ने के लिए बतौर हत्ते के [2]इस्तेमाल किया जाता है। **मारना, रगड़ना, घिसना, चलाना** के साथ बोला जाता है। ([1]आदि, [2]प्रयोग)

बदरूम

बदरुम जाली (स्त्री) [1]क़ौसों की तरतीब से [2]मुदव्वर [3]क़िस्म कीं तराशी हुई जाली, जो नर्गिस के खिले हुए फूल के [4]मुशाबा होती हैं। इसमें दो नमूने होते है; एक [5]मामूली गोलाईदार, दूसरी बंगड़ीदार गोलाई वाली, असल [6]लफ़्ज़ बदररू था जो बिगड़ कर बदरुम हो गया। **देखें** तस्वीर जाली बर सफा ([1]धनुषीय, [2]अर्धगोलाकार, [3]प्रकार, [4]सदृश्य, [5]साधारण, [6]शब्द)

बरगा (पु0) सुतून के सिरे के ऊपर की चौड़ी सतह कुर्सी की टेक के मुक़ाबिल जिस पर [1]मेहराब के पाखे की चुनाई शुरुअ़ की जाती है। [2]बाज कारीगर बरगे को बरंगा कहते है। बरगे की चौड़ाई मेहराब के पाखे की चुनाई के लिए काफी न होने की सूरत में सुतून के सिरे की सतह से [3]किसी क़दर निकला हुआ एक [4]मुसत्तह पत्थर लगाया जाता है, उसको भी बरगा या बरंगा कहा जाता कहते है। **देखें** तस्वीर सुतून बर सफा ([1]गुम्बद, [2]कुछ, [3]थोड़ा, [4]समतल)

बर्गदार दासा (दासः) (पु0) देखें आंट का दासा

बरमा लगाना (क्रिया) बारुद के जोर से चट्टान तोड़ने के लिए बारुद भरने को चट्टान में सुराख बनाना या सुरंग बनाना।

बरमा उड़ाना (क्रिया) बारुद भरी हुई चट्टान की सुरंग को आग लगाना। दकन में बरमरा लगाना और उड़ाना कहते हैं और [1]शिमाली हिंद में सुरंग लगाना या बनाना और उड़ाना बोलते हैं। बरमा लगाना असल में नोंकदार सब्बल से चट्टान में सुरंग बनाने से [2]मुराद है। मगर [3]इस्तिलाह में बरमा लगाना नाली बनाने के [4]मानो में [5]इस्तेमाल होने लगा है। दकन में सुरंग या बारुद की नाली को जो बरमे से बनाते है, गुल्ला कहते है। ([1]उत्तर, [2]तात्पर्य, [3]पारिभाषिक शब्द, [4]अर्थों, [5]प्रयोग)

बरंगा (पु0) देखें बरंगा

बस (पु0) पत्थर के चौके या सिल का ऐसा [1]नाहमवार रुख़ जो साफ और सीधा किया जा सके। **प्रयोग** चौका अच्छे बस का ही कार–आमद बन सकेगा। ([1]असमतल)

बग़ली सुतून (पु0) देखें अलैन।

बंगड़ीदार मरग़ोल (स्त्री) देखें मरग़ोल।

बेड़ी (स्त्री) दो चौरस पत्थरों की टक्कर में बने हुए खांचों को, [1]बाहम ऊपर तले मिलाकर एक जान बनाया हुआ जोड़ (दो पत्थरो के सिरों की एक क़िस्म की जुड़ाई) [2]बाज़ कारीगर इस जोड़ को टेक की बेड़ी भी कहते हैं। ([1]एक दूसरे, [2]कुछ)

भुरभुरा पत्थर (पु0) ऐसा पत्थर जिसके [1]ज़र्रात कच्चे होते हैं और बनावट में [2]नुक़स रहने की वजह [3]बाहम अच्छी तरह [4]पैवस्त नही होते, इसलिए यह बहुत जल्दी गिर जाता है, सिर्फ नींव भरने के काम में आता है। ([1]कण, [2]दोष, [3]एक दूसरे में, [4]जुड़ना)

भरना (पु0) सुतून का कुर्सी के [1]मुक़ाबिल के ऊपर का हिस्सा; बनावट के एअ़तेबार से सुतून को तीन हिस्सों में बांटा है उसमें ऊपर के हिस्से को जो [2]दरमियानी हिस्से के ऊपर होता है [3]इस्तिलाहन् भरना कहते हैं। **देखें** तस्वीर सुतून, निशान (अलिफ़) सफा ([1]सामने की, [2]मध्य, [3]तकनीकि)

भौंटा (पु0) टाँकी की किस्म का पत्थर काटने, फाड़ने और [1]हमवार करने का औज़ार। **देखें** टाँकी ([1]बराबर)

पान फूल की जाली (स्त्री) किसी नमूने की ऐसी बनी हुई जाली जिसमें जगह–जगह [1]क़रीने से किसी [2]क़िस्म के चौड़े पत्ते और गोल फूल के नक़्शे छोड़े गये हों। जो जाली में एक क़िस्म की बेल मालूम हो इस को गुलदार जाली भी कहते हैं। **देखें** तस्वीर जाली। [3]आला क़िस्म के दासों में भी इस क़िस्म की बेल बनाई जाती है ऐसे दासे को पान फूल का दासा कहते हैं। ([1]सुव्यवस्थित, [2]प्रकार, [3]विशिष्ट)

गुलदार पानफूल

पान फूल का दासा (पु0) देखें पान फूल की जाली और दासा।

पानफूल का दासा

पाँव (स्त्री) बड़े और भारी पत्थरों के जोड़ को [1]बाहम [2]वस्ल रखने के लिए ताँबें या लोहे की पत्ती जो जोड़ मिलाकर बतौर बंद, दोनों में जड़ दी जाए। **प्रयोग** संग बस्ता बुर्जों के पत्थर बड़ी–बड़ी पाँव के ज़रीए बाँधे जाते है। ([1]एक दूसरे में, [2]मिलाना)

परगा (पु0) देखें बरगा।

पत्थर–फोड़ा (पु0) कान (खान) से पत्थर निकालने या चट्टान को तोड़ कर [1]तामीर के काम के लायक़ पत्थर तैयार करने वाला कारीगर। ([1]निर्माण)

पत्थर फाड़ना (क्रिया) पत्थर की मोटी सिल के परत बनाने के लिए मुटान से तोड़ना, इस [1]अ़मल को पत्थर चीरना भी कहते है। ([1]प्रक्रिया)

पत्थर टाकना (क्रिया) टिकोरे की नोंक से ठोक कर पत्थर की सतह को खुरदुरा करना, [1]इस्तिलाह में सिल–बट्टे और चक्की के पाट को खुरदुरा करने को टांकना, खुटियाना, रहाना कहते हैं जिस को उर्दू इस्तिलाह में चक्की या सिल–रिहाई कहा जाता है। ([1]परिभाषा)

पत्थर ठपना (क्रिया) टूटी हुई चट्टान से चुनाई के लायक़ पत्थर तोड़ना, पत्थर चटख़ना (क्रिया), सख़्त [1]ज़र्ब या भारी वज़न के दबाव से पत्थर का टूट जाना। ([1]चोट)

पथरौटा (पु0) पत्थर की बनी हुई कुंडाली, बड़ा प्याला, कूंड़ा या नाँद।

पत्थर गढ़ना (क्रिया) पत्थर को [1]तामीरी ज़रूरत के लायक़ कांट–छांट कर दुरुस्त करना, कार–आमद बनाना। ([1]निर्माणीय)

पटिया (स्त्री) (इस्में तस्ग़ीर) **देखें** पट्टी।

पट्टी (स्त्री) अवसत दर्जे का दासा बनाने के लायक़ पत्थर की सिल। यह [1]अ़मूमन 5फुट ग 1फुट ग 3इंच

के नाप की होती है। [2]मामूल से बहुत छोटी पट्टी को पटिया कहते है। ([1]प्रायः, [2]परम्परा)

पटख़ाना (क्रिया) पत्थर की सिल के किनारों की ऊबड़–खाबड़ कोर को तकले की ज़र्ब से तोड़ कर सीधा और बराबर करना। इस [1]अमल को धार सीधी करना और कोर झाड़ना भी कहते है। **प्रयोग** चौके की कोरें पटख़ा लो ताकि टक्कर बराबर मिले। ([1]प्रक्रिया)

पट–दाब (स्त्री) देखें दाब।

पठार (स्त्री) [1]संगलाख़ ज़मीन, वह ज़मीन जिसकी सतह चट्टानी हो। ([1]पथरीली भूमि)

पिच्चड़ (पु0) तकले की [1]क़िस्म का मगर उससे हल्का, पत्थर की कोरें सीधी और साफ करने का औज़ार। **देखें** तकला ([1]आकार)

पच्चीकारी (स्त्री) पत्थर की सतह में गुलबूटें, [1]हुरुफ़, [2]अलफ़ाज़ खोद कर किसी [3]आला क़िस्म का क़ीमती पत्थर, खुदाई की हमशक्ल तराश कर [4]वस्ल करने की [5]सिनअ़त। लालक़िला, ताजमहल और मक़बरा अमाद–उद–दौला में इस सिनअ़त के [6]निहायत नाज़ुक और [7]नादिर–ए–रोज़गार नमूने बने हुए है। ([1]अक्षर, [2]शब्द, [3]उच्चकोटि, [4]मिलान, [5]कारीगरी, [6]अत्यधिक, [7]रोज़गारपरक)

परतदार पत्थर (स्त्री) समंदर की ज़मीन, गाद से तैयार किया हुआ पत्थर, इस को [1]इलमी इस्तिलाह में–दुरदी पत्थर कहते हैं। इसकी परत या सिलें आसानी से बन सकती है। ([1]वैज्ञानिक भाषा)

परचीन साज़ी (स्त्री) पच्चीकारी के लिए फूलबूटें या [1]हर्फ व [2]अलफ़ाज़ [3]तराशने की [4]सन्अ़त यानी नमूने जो खुदाई में बिठाने यानी पच्ची करने के लिए तराशे जाए। ([1]अक्षर, [2]शब्द, [3]खोदने, [4]कारीगरी)

परगा (पु0) देखें बरगा।

पक्का हथौड़ा (पु0) [1]सख़्त [2]क़िस्म के पत्थर की गढ़ाई का पक्के लोहे के मुँह का हथौड़ा, संग तराशों की [3]इस्तिलाह में ऐसे हथौड़े को पक मुहरा कहते है। ([1]कठोर, [2]प्रकार, [3]भाषा)

पक मुहरा (पु0) देखें पक्का हथौड़ा।

पखवाई (पु0) देखें अ़लैन।

पखवाई सुतून (पु0) देखें अ़लैन।

पौंची (स्त्री) सुतून के ऊपर के हिस्से के सिरे पर बना हुआ गोला जो बर्गे के नीचे होता है और कुर्सी की मटकी के जवाब में होता है। **देखें** तस्वीर सुतून।

पटिया (पु0) पत्थर की सिल का [1]मुसत्तह और [2]हमवार रुख़ साफ और सीधी [3]रूकार। **प्रयोग** फर्श के पत्थर हमवार पेटे के होने चाहिए ([1]समतल, [2]चौरस, [3]पृष्ठभूमि)

पेशानी (स्त्री) मरग़ोल के ऊपर का [1]हाशिया जिस में तिल्ली (हौदक या लौह) का [2]नक़्श [3]खुशनुमाई या कोई [4]इबारत लिखने को बना दिया जाता है। [5]मामूली मरग़ोल की पेशानी सादा होती है और [6]बाज़ बग़ैर पेशानी के भी होती है। **देखें** तस्वीर मरग़ोल। ([1]किनारा, [2]चित्रकारी, [3]सुन्दरता, [4]पंक्ति, [5]साधारण, [6]कुछ)

पैना (पु0) तकले की क़िस्म का पत्थर में सुराख़ करने का सुम्बा जिससे पत्थर को डोलाते भी है। **देखें** तकला

फकवाई दर (सुतून) (पु0) देखें अ़लैन।

फरैंडा (पु0) इमारत की कुर्सी का [1]रूकारी पत्थर। इमारत की [2]नौअ़िय्यत के [3]एअ़तिबार से सादा, मुनक़्कश, [4]आला और [5]अदना [6]क़िस्म का लगाया जाता है। **फरैंडा फड़** से बनाया है और फड़ हिन्दी में सतह ज़मीन से फर्श के इमारत तक की बुलंदी को कहते है जो उर्दू में कुर्सी कहलाती है। **ख़ाक अंदाज़** इस लिए कहते है कि ज़मीन पर छिड़काव से जो ख़ाक उड़ती है वह इससे रुकती है और फर्श तक नहीं चढ़ती। ([1]मुख्य पृष्ठ, [2]स्थिति, [3]अनुसार, [4]उच्च, [5]निम्न, [6]प्रकार)

तरीज़ (स्त्री) 5–6 इंच चौड़ी 2–3 फिट लम्बी, इंच डेढ़ इंच मोटी पत्थर की बेमसरफ़ पट्टी। **प्रयोग** चौके की चौड़ान में से 3 इंच की तरीज़ काट ली जाए।

तकला (पु0) गाव दुम मुँह और चिपटी नोक का उंगली के मानिंद मोटा पत्थर काटने और छांटने का [1]आहनी औज़ार। ([1]लोहे)

तकली (स्त्री) मामूल से छोटा तकला जो नर्म पत्थर की तराश के काम आता है। **देखें** तकला।

तिल्ली (स्त्री) मरग़ोल की [1]पेशानी पर कोई [2]इबारत (कुतबा) लिखने या खूबसूरती के लिए [3]मुस्ततील, [4]मुरब्बअ़, [5]हश्तपहल, [6]छःपहल, [7]बैज़वी या कश्तीनुमा, [8]खुश वज़अ़ बनी हुई शक्ल या शक्लें। **देखें** तस्वीर मरग़ोल बर सफा ([1]माथा, [2]श्लोक, [3]आयताकार, [4]वर्गाकार, [5]आठ पहल, [6]अंडाकार, [7]सुन्दर आकृति)

तिकोनिया गुल (पु0) [1]मुसल्लस नुमा शक्ल का बना हुआ फूल जो [2]मेहराब की मरग़ोल पर बना दिया जाता है। ([1]त्रिकोणीय, [2]गुम्बद)

तिमासी जाली (स्त्री) देखो बारह मासी जाली

तोड़ा (पु0) छज्जे की छावन को सहारने या उठाये रखनेवाला [1]मुसल्लसी शक्ल का बना हुआ पत्थर–[2]हस्बे ज़रूरत [3]मुनक़्क़श, सादा, छोटा और बड़ा हर क़िस्म का बनाया जाता है। ठीबा तोड़े का पिछला, अनगढ़त हिस्सा जो चुनाई में दबाया जाता है। पट्या तोड़े का दरमियानी [4]मुसल्लसनुमा हिस्सा। मुहरा तोड़े का मुँह या सिरा। ([1]तिकोनी, [2]आवश्यकतानुसार, [3]बेलबूटेदार, [4]तिकोना)

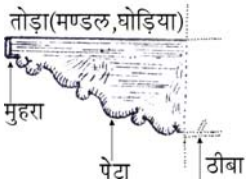

थम (पु0) देखें सुतून।

थम्बा (पु0) देखें थम।

थलक (पु0) देखें ठलक।

थूनी (स्त्री) देखें सुतून।

टांचना (क्रिया) सिल रहे जो [1]अदना ज़ात के मज़दूर होते है और पत्थर का मामूली काम बनाते है। टाँकना को बिगाड़ कर टाँचना कहते हैं, इन्हीं की वज़ह से [2]वाज़ [3]मुक़ाम के देहाती संगतराश भी टाँचना बोलने लगे हैं, लेकिन इस लफ़्ज़ के [4]इस्तेमाल में उनका [5]मफ़हूम सिल–रहों के मफ़हूम से जुदा है। [6]यानी वह पत्थर के कोर की छोटी छोटी किरचें झाड़कर साफ करने के लिए बोलते है। ([1]निम्न, [2]कुछ, [3]स्थान, [4]प्रयोग, [5]आशय, [6]अर्थात्)

टाकना (क्रिया) देखें पत्थर टाँकना।

टाँकी (स्त्री) पत्थर की सतह साफ करने का 5–6 इंच लम्बा, उँगली के बराबर मोटा चपटे मुँह का धारदार औज़ार।

टप्पा (पु0) [1]मुनब्बतकारी फूल जो बगैर बेलबूटे के सादा मरग़ोल की [2]रूकार पर दोनो [3]जानिब या चुक्के पर बना दिया जाए **लगाना, बनाना** के साथ बोला जाता है। **देखें** तस्वीर मरग़ोल बर सफा ([1]कलाकृति, [2]मुख्य पृष्ठ, [3]ओर)

टिकाई *(निःसृत)* देखें टाँकना।

टक्कर (स्त्री) पत्थर की सिल का मोटान का रुख़, पहलू, बग़ल, लकड़ी के तख़्ते और शहतीर के मुंह की थाप के लिए भी टक्कर बोला जाता है। **प्रयोग** टक्कर साफ न होने की वजह दासे का जोड़ नहीं मिलता **लेना, काटना** के साथ बोला जाता है।

टकौरा (पु0) पत्थर की सतह को [1]खुसूसन सिलबट्टे और चक्की के पाट को खुरदुरा बनाने का चोंच की शक्ल का हथौड़ा जिस की [2]ज़र्ब से सिल की सतह पर चिटें, खदानें पड़ जाए। टकैया (सिल रहा) टकौरे को टकैया और उसकी जोड़ी को टकइये कहते हैं, वह [3]अमूमन, जोड़ी [4]इस्तेमाल करते है। ([1]विशेषकर, [2]चोट, [3]प्रायः, [4]प्रयोग)

टकय्या (पु0) सिल और चक्की के पाट बनाने वाला और टांकने वाला कारीगर। **देखें** टांकना और सिल रहा।

टकइये (पु0) (बहुवचन) **देखें** टिकौरा प्रयोग।

टंचाई *(निःसृत)* देखें टाँचना।

टूटन (पु0) देखें मरवा।

टोली (स्त्री) तीन–चार इंच मोटा, फुट सवा फुट चौड़ा, और लगभग पाँच–छह फुट लम्बा वज़नदार दासा बनाने के लिए जेले से काटा हुआ पत्थर, यानी जेले का एक हिस्सा।

टेक की बेड़ी (स्त्री) देखें बेड़ी।

ठलक (पु0) पत्थर की सतह साफ करने और चिकनाने का तकली की [1]क़िस्म का औज़ार **देखें** तकली ([1]आकार)

ठोस पत्थर (पु0) बगैर परत का पत्थर, यह ज़मीन के अंदरूनी [1]तग़य्युरात से बनता है। इसके [2]अजज़ा आपस में इस क़दर [3]वस्ल होते हैं, कि इसके परत नहीं बन सकते। ऐसे पत्थर को ढीम, ढीमा या ढेमी कहते हैं, और [4]इलमी इस्तिलाहात में नारी कहलाता है। ([1]उथल पुथल, [2]कण, [3]मिले, [4]वैज्ञानिक भाषा)

ठेवा (पु0) बड़ी क़िस्म का सुतून बनाने का पत्थर, एक [1]सालिम टुकड़ा जिसमें बड़े से बड़ा पूरा सुतून तैयार हो जाए। ([1]समूचा)

ठीबा (पु0) देखें तोड़ा प्रयोग।

ज़म्बूरी जाली (स्त्री) देखें अठमासी जाली।

जाली (स्त्री) [1]मुख़्तलिफ [2]शक्लों में छेदी और बनाई हुई सतह, [3]इल्म–ए–हिन्दसे की एक या कई मुख़्तलिफ शक्लों से [4]तरतीब दिये हुए [5]उसतादान–ए–फन के तैयार करदा नमूनों को पत्थर की सिल या लकड़ी के तख़्तें या [6]धात की चादर में आरपार तराश लेने को [7]इस्तिलाह में जाली कहते है। **काटना, बनाना, गढ़ना** के साथ बोला जाता है। **देखें** तस्वीर बर सफा ([1]विभिन्न, [2]प्रकार, [3]ज्यामितीय आकृति, [4]क्रमवार, [5]मर्मज्ञ शिल्पकार, [6]धातु, [7]पारिभाषिक शब्द)

जनेऊ (पु0) दुरदी पत्थर की साख़्त का कोई धारदार निशान जो किसी ग़ैर–ए–जिंस तह के दरमियान में आने से पड़ गया हो और आरपार लकीर की शक़्ल में दिखाई दे, ऐसा पत्थर नाक़िस समझा जाता है, क्योंकि वह अक्सर उस निशान पर से टूट जाता है। **पड़ना, आना** के साथ बोला जाता है।

जीला (पु0) बहुत बड़ी जसामत की सिल जिस में से कई ठेवे और टोलियाँ बन सकें। **देखें** टोली और ठेवा।

झावन (स्त्री) देखें संग ख़ारा।

झिलमिली (स्त्री) आड़दार झरोखा या रोशनदान। किसी सिल के [1]मयाने में [2]सलामीदार तराशी हुई आड़, जो किसी झरोखे, रोशनदान या खिड़की के पट में नज़र की रोक या आड़ के लिए बनाई गई हो, और सिर्फ रोशनी और हवा की आमद के लिए हो, लकड़ी के काम में खिड़कियों और दरवाज़ों के पट भी ख़ास हालतों में झिलमिली दार बनाए जाते हैं, जैसे–रेल की खिड़कियाँ के पट। [3]चोबी झिलमिलियां खुलती बन्द होती हुई भी बनाई जाती हैं, और शायद इसी [4]सिफ़त की वजह से इसका नाम झिलमिली है। **काटना, बनाना** के साथ बोला जाता है। ([1]बीच में, [2]ढलवां, [3]लकड़ी, [4]विशेषता)

झम्पट (पु0) खान से पत्थर निकालने का, क़रीब आठ फुट लम्बा पत्थर फोड़ो का सब्बल (गदाला) बर सफा।

झुमरा (पु0) देखें झूमरा।

झूमरा (पु0) संग–ए–ख़ारा की चट्टान और बड़े–बड़े पत्थर तोड़ने का वज़नी, और बड़ी क़िस्म का हथौड़ा।

झुमरी (स्त्री) देखें झूमरी।

झूमरी (स्त्री) [1]मामूल से छोटी क़िस्म का झूमरा (**देखें** झूमरा) ([1]परम्परागत)

चापट (पु0) संगमरमर के तोड़ने और काटने का छोटी [1]क़िस्म का तकला। (**देखें** तकला) ([1]प्रकार)

चिप्पी (स्त्री) [1]मुनक्कश [2]सुतून की डंडी यानी [3]दरमियानी हिस्से पर पंखो के दरमियान की उभरवाँ कोरदार धारियाँ। **देखें** तस्वीर सुतून। ([1]बेलबूटेदार, [2]खम्बे, [3]बीच का)

चिरा (पु0) असल [1]लफ़्ज़ चीरा या चिरा की (र) को (ल) से बदलकर जेला कहने लगे हैं। ([1]शब्द) **देखें** जीला और चिरान

चिरान (पु0) पत्थर के जीले के चौके या परत, जो जीले को फाड़ कर बनाए गए हो।

चक्करगुल (पु0) देखें टप्पा।

चक्स (स्त्री) दो पत्थरों में बाहम जोड़ मिलाने को साफ और चिकनी बनी हुई टक्कर (सिरकी थाप) **बनाना, लगाना** के साथ बोला जाता है। **चिंगाई (हासिल मस्दर) प्रयोग** फर्श के पत्थरों की चिंगाई की जा रही है। **देखें** चींगना।

चौका (पु0) एक इंच से दो इंच तक मोटी, दो फुट से चार फुट तक चौड़ी और पाँच से छह फुट लम्बी पत्थर की सिल, जिससे दरअसल चौकोनी [1]मुरब्बअ़ या [2]मुस्ततील पत्थर की सिल मुराद होती है। **प्रयोग** सहन में चौकों का फर्श लगा हुआ है। ([1]वर्गाकार, [2]आयताकार)

चीरनी (स्त्री) [1]सुतून की कुर्सी के हिस्से में मटकी और बैठक के [2]दरमियान का गहरा कटाव जो मटकी को बैठक से जुदा कर के दिखाता है। **देखें** तस्वीर सुतून। ([1]खम्बे, [2]मध्य)

चींगना (क्रिया) पत्थर की सतह की बारीक–बारीक चिटें या परत के टुकड़े जो चिरान की सतह पर लगे हुए हों, छाँटना साफ करना (लफ़्ज़ चिंगा से चैंगना और चिंगाई बोलते है)

छः मास

छःमासी जाली (स्त्री) देखें जाली।

ख़ाक अंदाज़ (पु0) देखें फरेंडा।

दाब (स्त्री) संगबस्ता चुनाई की [1]उमूदी लगाई जाने वाली सिलों या पत्थरों की रोक का बंद जो इकपट पत्थर से किया जाता है। इन दोनों उमूदी और [2]उफक़ी पत्थरों के सिरो में चूलें छेद कर दोनों के सिरे बाहम [3]पैवस्त कर दिये जाते हैं, ताकि उमूदी पत्थर अपनी जगह न छोड़ सके, यह [4]अ़मल हर उमुदी लगाये जाने वाले पत्थर के साथ [5]मुतवातिर किया जाता है। [6]बाज़ देहाती कारीगर दाब को कैद कहते है। **लगाना, डालना, भरना** के साथ बोला जाता है। ([1]खड़ी, [2]क्षितिजीय, [3]जोड़, [4]प्रक्रिया, [5]लगातार, [6]कुछ)

दासा (पु0) बुनियाद या दीवार की चुनाई के ख़त्म पर [1]आसार को भरपूर ढाँकने वाला संगीन, पटाव या दाब। (चौड़ाई) दासा की [2]रूकार पर पत्तों की शक्ल के जो नक्श बनाये जाते है उनको [3]इस्तिलाह में आँट

कहते हैं, और जिन की [4]तश्रीह [5]लफ़्ज़ आँट के तहत कर दी गई है। **तस्वीर दासा**

डालना, रखना, चढ़ाना बुनियाद या दीवार के सिरे पर दासा पाटना। **बिठाना, जमाना** मसाले (चूने या गारे) में दासे को [6]पुख्ता और ठीक करना (कारीगर सही करना बोलते है) **बैठना, दबना** आसार पर जमाए हुए दासे की सतह या [7]हमवारी में फर्क़ आना, ऊपर के वज़न या नीचे की कमज़ोरी से किसी एक तरफ को झुक जाना या टूट जाना, जिस की वजह से उसके ऊपर बनी हुई इमारत फट जाती है। **देना** दो चुनाइयों के बीच में दासा लगाना। **प्रयोग** कड़ियों के नीचे दासा देना ज़रुरी है। **बिदकना, मटकना, डिगना** दासे का अच्छी तरह मसाले में न जमना और ऊँची–नीची सतह या कोई मोटा कंकर नीचे आ जाने से डिगमगाना, ठीक न रहना। ([1]दीवार की छोर, [2]मुख्य पृष्ठ, [3]परिभाषन, [4]व्याख्या, [5]शब्द, [6]पक्का, [7]चौड़ीकरण)

दच्चा (पु0) हर [1]क़िस्म का पत्थर चिकनाने और साफ करने का छोटी क़िस्म का तकला। (**देखें** तकला) ([1]प्रकार)

दिला (पु0) किसी पत्थर की सिल या चौके का बीच का हिस्सा यानी [1]हाशिया की हद छोड़कर [2]दरमियानी हिस्सा, लकड़ी के तख्ते के लिए भी यही लफ़्ज़ बोला जाता है। ([1]किनारा, [3]मध्य)

दूदिया (पु0) देखें संग–ए–दाम।

दौंचाई (निःसृत) देखें दौंचना।

दौंचना (क्रिया) पत्थर की सतह की [1]मामूली ऊँच नीच या खुरदुरेपन को साफ करने के लिए, टाँकी से छीलना, सतह को [2]हमवार करना (बाज़ लोग दौचना, नौकर या बच्चो को [3]तादीबन मारने, यानी [4]जिस्मानी सज़ा देने के लिए बोलते है, देहली और [5]नवाहे देहली में, बाज़ारी बोलचाल में दौंचना, बे ढंगेपन से और जल्दी–जल्दी खाना खाने को कहते हैं। **प्रयोग** खान साहब ने नौकर को ऐसा दौंचा की सब शरारत भूल गया। **प्रयोग** कारीगर रोटी दौंच रहा है इसलिए कामबंद है। ([1]साधारण, [2]बराबर या समतलीकरण, [3]धमकाने, [4]शारीरिक, [6]आसपास)

देखत भूली जाली (स्त्री) [1]अ़िल्म हिन्दसा की कई–कई शक्लों के जोड़ और [2]तरतीब से बनाई हुई ऐसी हेर–फेर की जाली जिन के खुतूत का सिलसिला आसानी से नज़र में न जमे और निशान पर से निगाह चूक जाए। (**देखें** तस्वीर जाली) ([1]ज्यामितीय, [2]क्रमवार)

देखत भूली

दीवाली (स्त्री) [1]मुनक़्क़श [2]सुतून की कुर्सी [3]यानी नीचे के हिस्से की साफ और सीधी बग्लियां जो [4]अमूमन चार, पाँच इंच ऊँची साफ और सीधी होती है इस को कुर्सी के पैर भी कहते है। **देखें** तस्वीर सुतून बर सफा ([1]बेलबूटेदार, [2]खम्बे, [3]अर्थात्, [4]प्रायः)

धार सीधी करना (क्रिया) देखें पट खाना

धतूरा (पु0) देखें भरना और [1]सुतून ([1]खम्बे)

डबरा (पु0) मअ़मूली अनगढ़त पत्थर जो [1]अदना [2]क़िस्म की पत्थर की चुनाई और भरती के काम में आयें–पत्थर का ऐसा मअ़मूली टुकड़ा जिस का कोई रुख़ सीधा और चौरस न हो (मरहटी में ऐसे पत्थर को दगड़ी कहते है जिस को बिगाड़ कर [3]बअ़ज़ [4]मुक़ामात पर डेरा और डिबोर कहने लगे) ([1]तुच्छ, [2]प्रकार, [3]कुछ, [4]स्थानों)

डबोरा (पु0) देखें डबरा।

डंडी (स्त्री) संगीन और [1]मुनक़्क़श [2]सुतून का [3]दरमियानी हिस्सा [4]इस्तिलाहन डंडी के नाम से [5]मौसूम किया जाता है। **देखें** तस्वीर सुतून बर सफा ([1]बेलबूटे, [2]खम्बे, [3]मध्य, [4]परिभाषन, [5]सम्बोधित)

ढांग (स्त्री) पत्थर की खान या खदान के ऊपर की मिट्टी की तह।

ढीम (पु0) देखें ठोस पत्थर

ढीमा (पु0) देखें ढीम।

रफयाना (क्रिया) पत्थर की सतह को ([1]अ़मूमन [2]अअ़ला [3]क़िस्म के पत्थर) की सतह को घिस और छीलकर साफ व [4]मुजल्ला बनाना। ([1]प्रायः, [2]उच्च, [3]प्रकार, [4]चमकदार)

रग (स्त्री) देखें जनेऊ

रवाबिया (पु0) [1]सुर्खी माइल भूरे रंग का भुरभुरा पत्थर और वह पत्थर जो समंदर की तह में गाद (कीचड़) से बनता है। (दुर्दी पत्थर) ([1]हल्का लाल)

रोड़ी (स्त्री) पत्थर के डेढ़ दो इंच मोटान चौड़ान के बेडौल टुकड़े जो [1]अ़मूमन सड़क की तैयारी के लिए तोड़े जाते है। (तोड़ना) ([1]प्रायः)

रहाना (क्रिया) (**देखें** टाकना या रवाबिया)

रेतीला पत्थर (पु0) देखें भुरभुरा पत्थर

जम्बूरी जाली (स्त्री) देखें अठमासी

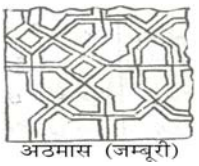
अठमास (जम्बूरी)

जाली।

संगीन (स्त्री) देखें भरना।

सुतून (पु0) मेहराब का पाया जो मेहराब की चुनाई के बोझ और उसके ऊपर की कुल इमारत का वज़न उठाए रहता है। किसी बोझ को उठाए रखने या सहारा दिए रहने वाली आड़ या अड़वाड़ लकड़ी, पत्थर या धात का सादा, [1]नक़्शैन [2]मुदव्वर, चौपहल [3]शश पहल और [4]हश्त पहल, वग़ैरह बनाया जाता है। कारीगरों ने नक़्शैन [5]सुतून को बनावट के [6]इअ़तिबार से तीन हिस्से में बांट कर उनके नामः–(क) भरना, (ख) डंडी, (ग) कुर्सी रख लिए है, भरना को धतूरा और कुम भी कहते हैं। **इकट्ठा करना, क़ायम करना** के साथ बोल जाता है। ([1]चित्रकारी, [2]गोलाकार, [3]तीन, [4]आठ, [5]खम्बे, [6]अनुसार)

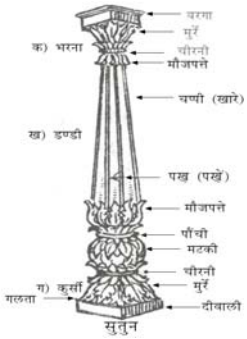

सुतून

सुरंग (स्त्री) देखें बरमा लगाना और बरमा अड़ाना, प्रयोग।

सिल (स्त्री) दोनो रुख़ [1]मुसत्तह पत्थर जो ज़्यादा से ज़्यादा 6 फुट x 4 फुट x 3 इंच और कम से कम 3 फुट x 2 फुट x 2 इंच की नाप का होता है। मसाला पीसने के छोटे और मामूली पत्थर को भी सिल कहते हैं। ([1]समतल)

सिल हारा (पु0) देखें टकय्या।

सिल रहा (पु0) सिल बट्टे और चक्की के पाट टाकने वाला मज़दूर **देखें** टाकना। **प्रयोग** सिल रहे को बुला लाओ सिलबट्टा रहवाना है।

सिल रहाई (स्त्री) सिल टांकने की [1]उजरत ([1]मजदूरी)

सिल्ली (स्त्री) [1]मामूल से ज़्यादा छोटी सिल या सिल्ली, आम बोल चाल में सिल्ली का [2]मफहूम एक खास क़िस्म का पत्थर होता है जो चाकू छुरी वग़ैरह को तेज़ करने के काम में आता है। ([1]परम्परा, [2]आशय)

संग अबरी (पु0) मैले रंग का सफेद या हल्का गुलाबी पत्थर [1]साख़्त के लिहाज़ से इसका [2]शुमार संगमरमर की क़िस्में हैं। [3]बाज़ पर [4]मुख़्तलिफ रंग की बड़ी बड़ी चित्तियाँ होती है। यह [5]आला दर्ज़े की इमारतों में लगाया जाता है और नगीने बनाये जाते हैं और अंगूठी के पत्थर भी बनाए जाते है। इसका दूसरा नाम संग अजूबा है। ([1]बनावट, [2]गणना, [3]कुछ, [4]विभिन्न, [5]उच्चकोटि)

संगबासी (पु0) इस पत्थर की दो क़िस्में होती हैं। एक सुर्ख़ रंग जो अलवर के पहाड़ो में पाया जाता है, दूसरी क़िस्म ज़र्दी या [1]सफेदी माइल सुर्ख रंग होती है। यह क़िस्म ग्वालियर, ताँतपुर, संगरौली और फतेहपुर सीकरी के इलाके में मिलता है। इसको संग–ए–सुर्ख़ कहते हैं। लाल क़िला देहली की [2]तामीर में इस क़िस्म का पत्थर लगा हुआ है इस पत्थर का [3]शुमार परतदार पत्थर में किया जाता है। ([1]सफेदी लिये हुए लाल रंग, [2]निर्माण, [3]गणना)

संग बस्तः (स्त्री) वह [1]तामीर जिसकी चुनाई रुकार पत्थरों की सिलें खड़ी कर के बनाई जाए जैसे लाल क़िला, जामा मस्जिद, देहली, ताजमहल वग़ैरह की इमारत। ([1]निर्माण)

संग पातरी (पु0) मैले रंग का ठोस यानी बेपरत पत्थर कश्मीर के इलाके में पाया जाता है।

संगपायेज़र (पु0) ठोस क़िस्म का हल्का [1]फिरोज़ी रंग का पत्थर। ([1]आसमानी)

संगतराश (पु0) संगबस्ता इमारत के लिए, हर क़िस्म की [1]संगीन [2]सिंअ़त जानने वाला कारीगर। ([1]पत्थर, [2]कारीगरी)

संगतराशी (स्त्री) इमारत और दूसरी [1]ज़रुरियात–ए–ज़िंदगी के लिए पत्थर की चीज़ें बनाने की [2]सिंअ़त। ([1]जीवनोपयोगी, [2]कारीगरी)

संग जराहत (पु0) दूधिया रंग का संगमरमर से मिलता हुआ मगर बहुत ही नर्म क़िस्म का पत्थर, खिलौने वग़ैरह बनाए जाते है। इमारत के काम में नही आता उर्दू में सैल खिरी कहते है।

संग चक़माक़ (पु0) सख़्त क़िस्म का ठोस पत्थर, कश्मीर के इलाक़े में पाया जाता है।

संगख़ारा (पु0) निहायत सख़्त क़िस्म का [1]नीलगूं ठोस क़िस्म का पत्थर, दकन के इलाक़े और कोहे अरौली पर्वत में इसकी बड़ी–बड़ी चट्टाने पाई जाती है इसको संग ग़लूला भी कहते हैं। ([1]हल्का नीला)

संग–ए–दाम (पु0) दूदिया रंग का सफेद और नर्म क़िस्म का पत्थर, कश्मीर के इलाक़े में निकलता है, और इमारत के काम में आता है।

संग डामर (पु0) [1]सुर्खी माइल सफेद रंग पत्थर ठोस और सख्त [2]क़िस्म का होता है। फतेहपुर के क़रीब

[3]मुक़ाम डामर में उसकी खान है। मुक़ाम के नाम से [4]मौसूम किया जाता है। चक्की के पाट और मसाला पीसने की सिलें बनाई जाती हैं। ([1]हल्का लाल, [2]प्रकार, [3]स्थान, [4]सम्बोधित)

संगरुख़ाम (पु0) संगमरमर की [1]किस्म का रंगीन और चित्तीदार पत्थर, आगरा में मक़बरा अमाद–उद–दौला की कब्रों के [2]तावीज़ इसी पत्थर के हैं। ([1]प्रकार, [2]वह निशानी जो किसी क़ब्र पर लगाते हैं। जिस पर मरने वाले के सम्बन्ध में लिखा जाता है।)

संगजुन्नारी (पु0) देखें संग सुलेमानी।

संग ज़हर मुहराः(पु0) [1]सब्जी माइल सफेद रंग पत्थर [2]ज़र्द और [3]सियाह रंग का भी पाया जाता है इमारत में पच्चीकारी के काम में आता है। ([1]हल्का हरा, [2]गुलाबी, [3]काला)

संगसुर्ख (पु0) देखें संगबासी।

संग–सुलेमानी (पु0) सफेद धारीदार [1]सियाह रंग का पत्थर बहुत कामयाब है। [2]तस्बीह के दाने बनाए जाते है। इसकी धारियों की वजह से [3]बअ़ज़ कारीगर जुन्नारी कहते हैं, और बाज़ [4]मुक़ामात पर गऊदंता, और क़मरी के नाम से [5]मौसूम किया जाता है। ([1]काला, [2]जपमाला, [3]कुछ, [4]स्थान, [5]सम्बोधित)

संग–सीमाक़ (पु0) ठोस किस्म का बहुत सख़्त और लाखी रंग का पत्थर। नर्मदा की वादी और [1]कोहे–विंध्याचल के इलाक़े में मिलता है। संग [2]सुर्ख की [3]किस्म से [4]अदना दर्जे का पत्थर है। इमारत के काम में आता है चूँकि जल्द टूट जाता है और सख़्त होता है इसलिए इस पर [5]मुनब्बतकारी का काम नहीं बनता और न ही उसकी कोई नाजुक चीज़ बनाई जाती है। ([1]पहाड़ या वादी, [2]लाल, [3]प्रकार, [4]तुच्छ, [5]बेलबूटे)

संग–अजूबा (पु0) देखें संग अबरी।

संग–क़मरी (पु0) देखें संग सुलेमानी।

संग–कटीला (पु0) संग–ख़ारा की तरह जामुनी रंग का पत्थर–**देखें** संग ख़ारा।

संग–खट्टू (पु0) ठोस किस्म का [1]सब्ज़ी माइल रंग पत्थर कामयाब और कीमती होता है। [2]बाज़ बिमारियों के लिए इसकी तख्ती गले में डालते हैं। दक्न के इलाके में कहीं–कहीं पाया जाता है। फ़ारसी में संग यशअब कहते हैं। ([1]हल्का हरा, [2]कुछ)

संग–लाख़ (स्त्री) देखें पठार।

संग–लर्ज़ा (पु0) लचकदार पत्थर, ग्वालियर के इलाक़े में पाया जाता है और सिर्फ़ नुमाइशी होता है।

संगमरमर (पु0) मकराना ठोस किस्म का [1]सख्त और सफेद पत्थर। मकराना इलाका जोधपुर में [2]मुख्तलिफ रंग का और उम्दा पाया जाता है। इसीलिए मकराना के नाम से [3]मौसूम किया जाता है। ताजमहल की [4]तामीर के वक्त वहीं से लाया गया था। ([1]कठोर, [2]विभिन्न, [3]सम्बोधित, [4]निर्माण)

संगमरयम (पु0) छालिया के मग़ज़ से [1]मुशाबा, एक किस्म का पत्थर इसका रंग और धारियाँ छालिया के मग़ज़ से बहुत मिलती जुलती हैं। नगीने बनाने और पच्चीकारी के काम आता है। ([1]मिलता जुलता)

संग–मक़नातीस (पु0) [1]आह्नकश पत्थर शाम और बहुत [2]कारआमद हैं [3]गरचा इमारत के काम नहीं आता। ([1]चुम्बकीय, [2]उपयोगी, [3]यद्यपि)

संग–मकराना (पु0) देखें संगमरमर।

संग–मूसा (पु0) सिलेट के पत्थर से मिलता जुलता [1]स्याह रंग का पत्थर। ([1]काला)

संग–हौला (पु0) [1]संग [2]सुर्ख़ की एक क़िस्म का नाम है। **देखें** संग सुर्ख़। ([1]पत्थर, [2]गहरा लाल)

संग–यशअ़ब (पु0) देखें संग खट्टू।

संग–यमानी (पु0) [1]मुख्तलिफ रंग का और [2]मुक़ामी नाम से [3]मौसूम किया जाता है। नगीना बनाने तथा पच्चीकारी के काम का पत्थर, यमन के इलाके में पाया जाता है तथा मुक़ामी नाम से मौसूम किया जाता है। ([1]विभिन्न, [2]स्थानीय, [3]सम्बोधित)

सहरा (पु0) पत्थर की पेशानी और हाशिया पर बतौर सरगाह बनी हुई मुनब्बतकारी बेल। **देखें** तस्वीर मरग़ोल।

सह–मरग़ोला (पु0) तीन बंगड़ी वाली मरग़ोल। **देखें** तस्वीर मरग़ोल।

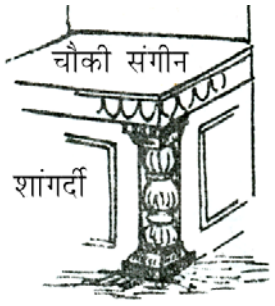

शार्गिदी (पु0) ताजदार दरवाज़े की बग़ली, निशस्तगाहों (चौकियों) के [1]आसार का [2]रूकारी पत्थर जो चौकी की दोनो बग़लियों के लिए अलग अलग होता है। सामने की तरफ दोनों पत्थर एक [3]सुतून नुमा मुतक्कों में जो चौकी के पटाव के सामने की नोंक के नीचे, खड़ा किया जाता है, जड़े रहते हैं। **लगाना, खड़ी करना** के साथ बोला जाता है। ताजदार दरवाज़े की मेहराब में नौकर के बैठने को

बनी हुई संगीन चौकी को भी [4]इस्तिलाह में शार्गिदी कहते हैं। ([1]दीवार, [2]मुख्य पृष्ठ, [3]खम्बे, [4]परिभाषन)

शाहजहानी मरग़ोल (स्त्री) इसको बंगड़ीदार मरग़ोल भी कहते है। **देखें** मरग़ोल व तस्वीर मरग़ोल।

इतलिय्यीन (स्त्री) देखें अलैन।

ग़लतां (स्त्री) (एकवचन तथा बहुवचन) पत्थर की कोर या किनारे की फिसल्वाँ, नालीदार [1]तराश, यानी रपटवाँ–तराश, इस तराश की गहराई हस्बे मौक़ा व ज़रूरत उभरवाँ और दब्बां दोनो तरह की होती है। एक डाल पत्थर के चौड़े और पतले हिस्सों के [2]इत्तिसाल की जगह, इस किस्म की कटाई की जाती है, ताकि पत्थर का उतार चढ़ाव निगाह में बदनुमा न मालूम हो। **देखें** तस्वीर सुतून। ([1]कटाव, [2]मिलाप)

ग़ालिब (पु0) संग बस्ता उथली मेहराब के फैलाव में लगाने के गढ़े हुए पत्थर। ग़ालिब असल में क़ालिब का बिगड़ा हुआ है यानी मेहराब का संगीन क़ालिब जिस पर [1]मेहराब का लदाव रहे। ([1]गुम्बद)

फाना (पु0) देखें फ़ाना।

फ़ाना (पु0) बड़े पत्थर तोड़ने की [1]मामूल से ज़्यादा बड़ी किस्म की। **देखें** टाँकी। असल लफ़्ज बाना है जो फन बिन्नौट में लोहे के ग़ज़ को जो करीब 5–6 फुट लम्बा और आध इंच निस्फ़ [2]जिस्फ कुत्र की गोलाई का होता है और जिसको कलाइयों की मज़बूती के लिए लठ की बजाय इस्तेमाल करते हैं। यह बाना बिगड़ कर मांना और फिर संग तराशों में फ़ाना और फाना बन कर बड़े तकले के लिए [3]इस्तेमाल होने लगा। ([1]परम्परा, [2]अर्ध गोलाकार, [3]प्रयोग)

क़लमदानी जाली (स्त्री) मिलन की जाली। **देखें** जाली 15, मिलन की जाली व तस्वीर जाली।

कान (स्त्री) मिट्टी की तहों के नीचे पत्थर की चट्टान या किसी और क़िस्म की जिमादात की जाये, [1]वकूअ देहाती मज़दूर खान और खदान कहते है। ([1]उत्खनन स्थल)

कत्तल (स्त्री) पत्थर का बेडोल धारदार छोटा और [1]बेमसरफ टुकड़ा। ([1]बेकार)

कटकी गुल (पु0) [1]हश्त पहल शक्ल बना हुआ फूल जो मरग़ोल की पेशानी पर बना दिया जाता है। **देखें** तस्वीर मरगोल। ([1]आठ)

कच्चा पत्थर (पु0) वह पत्थर जो पानी के असर से गिरने लगे यानी फूल जाये।

कच्चा हथौड़ा (पु0) [1]मुनब्बतकारी का काम करने का हथौड़ा, इस के मुँह की थाप खोखली होती है इस में सीसा भर दिया जाता है ताकि नाज़ुक काम और मुनब्बतकारी की गढ़ाई में तकले पर नर्म [2]ज़र्ब पड़े और सीसा हथौड़े की ज़र्ब की सख्ती को पी जाए इस क़िस्म के हथौड़े को कच मुहरा भी कहते हैं। ([1]बेलबूटे, [2]चोट)

कच–मुहरा (पु0) देखें कच्चा हथौड़ा।

किरच (स्त्री) छोटी और बारीक क़िस्म की कत्तन या कत्तल (देखो कत्तल)

कुर्सी (स्त्री) देखें [1]सुतून वाक्य–1 व निशान (ग), तस्वीर सुतून पे0 ([1]खम्बा)

कस (पु0) पत्थर को किसी खास जगह से तोड़ने के लिए सतह पर टाँकी से जो ख़त का निशान (लकीर) बनाते हैं ताकि पत्थर उसी जगह से टूटे इसी निशान को [1]इस्तिलाइन कस कहते है। (लगाना, डालना) ([1]परिभाषन)

कुम (पु0) देखें भरना सुतून, वाक्य–1, निशान (अलिफ) तस्वीर

कंधा खोलना (क्रिया) पत्थर पर फूलबूटे डोलाने और सतह खोद कर पत्ते पत्तियों की शक्ल सतह पर उभारने और [1]नुमाया करने को [2]इस्तिलाहन कंधा खोलना कहते है। ([1]उभारने, [2]परिभाषन)

कोपर (स्त्री) मेहराब के दहन का [1]रूकारी पत्थर जिस पर चुनाई का लदाव रहता है। **देखें** तस्वीर मरगोल–1 पे0 ([1]मुख्य पृष्ठ)

कोर झाड़ना (क्रिया) देखें पटख़ाना।

केद (स्त्री) देखें दाब।

कीकरी (स्त्री) [1]मुनब्बतकारी के काम में सेहरे के ऊपर [2]हाशिये की कोर पर बने हुए तिकोने [3]नक्श। **देखें** सेहरा। ([1]बेलबूटे, [2]किनारे, [3]चित्र)

खाते का दासः (पु0) सादी [1]रूकार का सिर्फ गोला या चपटी धार बना हुआ दासा इसीलिए इसको गोले का दासा भी कहते है। देखो दासा–4, पे0 खाते का दासा असल में लकड़ी के दासे को कहते है जो [2]लफ़्ज़ खाती [3]बमाने बढ़ई से बनाया गया है। लकड़ी का दासा [4]अमूमन सादा होता है क्योंकि इस पर कटाव का काम [5]पायदार नहीं होता है और वह [6]चोबी छत की कड़ियों के नीचे बराय नाम लगाया जाता है। संगतराशों ने सादी रूकार के दासे का [7]इस्तिलाहन,

खाते का दासा नाम रख लिया। ([1]मुख्य पृष्ठ, [2]शब्द, [3]जिसका अर्थ, [4]प्रायः, [5]टिकाऊ, [6]लकड़ी, [7]परिभाषन)

खारे (पु0) [1]सुतून की डण्डी की पख़ों के बीच कोरदार उभरवाँ धारियाँ। [2]वाहिद और [3]जमा दोनो के लिए एक ही लफ़्ज़ बोला जाता है। **देखें** तस्वीर सुतून पे0 ([1]खम्बे, [2]एकवचन, [3]बहुवचन)

खान (स्त्री) देखें खदान।

खदान (स्त्री) देखें कान।

खपरा (स्त्री) जमा खपरे, संगबस्ता बुर्ज़ के ऊपर की सतह के पटवाँ पत्थर जो लदाव के ऊपर जमाये जाते है। **देखें** तस्वीर सुतून।

खुट्याना (क्रिया) देखें खूंटना।

खूंटना (क्रिया) देखें टाकना और पत्थर टाँकना।

खदाना (पु0) देखें खदान।

खुदाई (स्त्री) [1]मुनब्बतकारी, पत्थर में [2]नक्शों निगार और बेलबूटों की तराश। ([1]शिल्पकारी, [2]कलाकृति)

खुदाई का काम देखें मुनब्बतकारी।

खम (पु0) देखें सुतून।

खम्बा (पु0)–छोटा सुतून, **देखें** सुतून।

गुट्ठा (पु0) देखें फ़ाना।

गुल्ला (पु0) देखें बरमा अड़ाना प्रयोग।

गुलदार जाली (स्त्री) पान फूल की जाली या इस किस्म की कोई और जाली, जिसके [1]वस्त में जगह–जगह किसी किस्म के फूल और पत्ते तराश में छोड़े गए हों। **देखें** तस्वीर जाली–16, पे0 ([1]मध्य)

गुल नाव (स्त्री) मरगोल के हाशिये पर लम्बोतरा और [1]मुदब्बर सिरों की बनी हुई [2]मुनब्बतकारी, या जाली। **देखें** तस्वीर मरगोल–1, पे0। ([1]अर्धगोलाकार, [2]शिल्पकारी)

गऊ दंता (पु0) देखें संग सुलेमानी।

गोले का दासः (पु0) देखें खाते का दासा।

गढ़ाई (स्त्री) देखें गढ़ना।

गढ़ना (क्रिया) देखें घड़ना।

घड़ाई में आना (क्रिया) काँटछाँट से पत्थर को [1]कार–आमद बनाया जा सकता है, [2]तामीरी जरुरियात के लिए तैयार किया जा सकता है। **प्रयोग** बद डोल पत्थर गढ़ाई में नही आते, यानी कार आमद नही बनाये जा सकते। ([1]उपयोगी, [2]निर्माणीय)

घड़ना (क्रिया) देखें पत्थर गढ़ना।

घोड़िया (पु0) देखें तोड़ा।

लंगोटिया (पु0) [1]अ़मूमन से छोटी नाप का चोगा, **देखें** चौका, (चौके के [2]तूल में से 3 या 4 बनाए हुए टुकड़ो में से हर एक को लंगोटिया कहते हैं। चौके का तिहाई या चौथाई टुकड़ा यानी 2 फुट ग 3 फुट या डेढ़ फुट ग 5 फुट नाप का। ([1]प्रायः, [2]लम्बाई)

लवा (पु0) खड़े पत्थर की सीध या सिल की सतह का फैलाव [1]हमवार जाँचने का औज़ार, [2]मेअ़मारों की [3]इस्तिलाह में सौल कहते हैं जो अरबी लफ़्ज़ साकूल का बिगड़ा रूप है। **देखें** पेशा–ए–मेअ़मारी, संगतराश सौल को लवा कहते हैं जो बहुत पुरानी और [4]क़दीम इस्तिलाह हैं। ([1]बराबर, [2]राजगीरों, [3]परिभाषा, [4]पुरानी)

लौह (स्त्री) देखें तिल्ली और तस्वीर मरगोल।

माठ्ना (क्रिया) पत्थर की सतह को दौंचने, यानी [1]हमवार करने के बाद साफ करना, चिपकाना, खुरदुरापन निकालना। ([1]बराबर)

माही पुश्त

माही पुश्त की जाली (स्त्री) मछली के खपरों की तरह बनी हुई जाली। (**देखें** तस्वीर जाली पे0, तस्वीर 4–5)

मुत्तका

मुत्तका (पु0) पत्थर के संगीन जंगले की सिलों का खम की [1]वज़अ़ का टीका, जो दो सिलो के जोड़ के [2]दरमियान और हर कोने पर कायम किया जाता है। लकड़ी के जंगलो में [3]चोबी और लोहे के जंगले में [4]आहनी होते हैं, लेकिन संगीन जंगले के लिए [5]मखसूस है। **खड़ा करना, लगाना** के साथ बोला जाता है। ([1]ढंग, [2]मध्य, [3]लकड़ी, [4]लोहे, [5]विशेषकर)

मटकी (स्त्री) सुतून में कुर्सी के ऊपर की [1]मुदब्बर शक्ल की बनावट। **देखें** तस्वीर–सुतून पे0 ([1]गोलाकार)

मठाई (स्त्री) देखें माठना।

मुहज्जर (पु0) संगीन जंगला, चौहद्दी हौदा, अहाता, सादा और जालीदार दोनो किस्म का बनाया जाता है। **प्रयोग** मोहम्मद शाह बादशाह की क़ब्र का जालीदार [1]मुहज्जर काबिले दीद है। ([1]समाधि स्थल)

मदाखल (स्त्री) देखो मुनब्बतकारी।

मुर्रा (पु0) रुख़ पलटे या बल खाये हुए पत्ते की पत्थर पर बतौर [1]मुनब्बतकारी बनी हुई शक्ल, जो खास तौर से [2]संगीन [3]सुतून की कुर्सी और डंडी पर बनाई जाती है। **देखें** तस्वीर सुतून पे0 मरीर अरबी में बलदार और

ऐंठी हुई रस्सी को कहते है, और फ़ारसी में मिरे बराबरी का दावा करने के [4]मानो में आया है, चूँकि सुतून में मुनब्बतकारी जवाबी होती है यानी जो ऊपर के हिस्से में होती है वही नीचे भी होती है। इसलिए शायद मिरे से मुर्रे बन गया या अरबी लफ़्ज़ मरीर से मुर्रे बन गया है। ([1]बेलबूटे, [2]पत्थर, [3]खम्बे, [4]अर्थ)

मुर्रे (पु0) देखें मुर्रा।

मरग़ोल (स्त्री) संगबस्ता, पत्थर की मेहराब की, तराशी हुई [1]पेशानी या [2]रूकार, [3]मेहराब के दहन की जो [4]वज़अ़ होती है उसी शक्ल के मरग़ोल का दहन बनाया जाता है और दहन की बनावट से मेहराब का जो नाम होता है उसी नाम से मरग़ोल को [5]मौसूम किया जाता है। **प्रयोग** लाल किला, जामा मस्जिद देहली और ताजमहल में मरग़ोलो के बेहतरीन और [6]नादिरे रोज़गार नमूने लगे हुए है। ([1]ऊपरी भाग, [2]मुख्य भाग, [3]गुम्बद, [4]आकार, [5]सम्बोधित, [6]दुर्लभ)

मरवा (पु0) बड़े–बड़े संगीन मेहराबदार फाटकों के किवाड़ की चूल का घर (भेद) बना हुआ पत्थर का तोड़ा यानी वह पत्थर का तोड़ा जिस में फाटक के किवाड़ की चूल (भेद) बनी हो, मरवा दीवार के पाखे में चूल का घर बाहर रख कर चुन दिया जाता है। कुँए की गिरनी के खम्बे भी मरवों में कायम किए जाते हैं।

मरवाँ अरबी लफ़्ज़ मरबत़ का बिगड़ा हुआ रुप है, जिसके [1]माने जानवरों के बंद करने की जगह है। (बे) (व) से और (त़) (अलिफ) से बदल कर मरवा, पेशा–ए–संग तराशी में मख़सूस मानों के लिए, उर्दू ज़बान की एक इस्तिलाह बन गयी है। ([1]अर्थ)

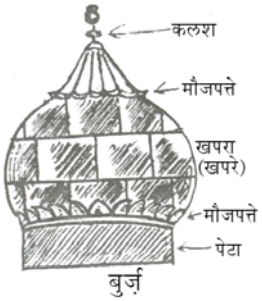

बुर्ज़

मौज पत्ते (पु0) बुर्ज की चोटी पर कलग़ी के नीचे, बुर्ज के सिरे पर चौतर्फा, उभरवाँ बने हुए लम्बे चौड़े पत्ते आला इमारतों के बुर्जों पर इसी किस्म का जवाबी काम, पेटे के सिरे पर भी बनाया जाता है।

मलन की जाली (स्त्री) देखें मलंद की जाली।

मलंद की जाली (स्त्री) क़लमदानी जाली मुस्तत़ील शक्ल की बनी हुई जाली, इसको क़लमदानी जाली भी कहते हैं। देहाती कारीगर मलंद [1]तलफ़्फ़ुज़ करते है। **देखें** जाली–15, पे0 (असल लफ़्ज़ मीज़ान बिगड़कर मैलान और फिर मिलन और मलंद हो गया) ([1]उच्चारण)

मिलन की जाली (क़मालदानी)

बाज़ कारीगर [1]कायम–उल–ज़ावियह [2]शक्ल को मैलान या मैलानी शक्ल कहते है। ([1]90° कोण, [2]आकृति)

मुनब्बतकारी (स्त्री) पत्थर, लकड़ी वगैरह पर उभरे हुए नक्शो निगार और फूलबूटे तराशने की सनअ़त। इसके मशहूर काम टिप्पा, सिहरा और केकरी कहलाते है। [1]नज़्जारी [2]इस्तिलाह में [3]मुनब्बतकारी को मदाख़ल का काम कहते है। ([1]बढ़ई, [2]परिभाषा, [3]शिल्पकारी)

मंदल (पु0) देखें तोड़ा

मुहाल (स्त्री) चेहरा, रूकार, दीदारुख़, पत्थर की बनी हुई रूकार (दर्शनी) पटिया, जो बन्दिश में सामने रहे।

मुहरा (पु0) देखें तोड़ा निशान (ग)

नरजा (पु0) देखें नऱजा।

नरज़ा (पु0) पत्थर में सुराख करने और धारियाँ डालने का बारीक नोंक का तकले की तरह का औज़ार। [1]मामूल से छोटे नरजे को नरंज़ी कहते हैं। ([1]परम्परा) **देखें** तकला

हौदक (स्त्री) देखें तिल्ली। **काटना** के साथ बोला जाता है।

अनुभाग–(6) पेशा–ए–ईंटसाज़ी

ईंटसाज़ी का काम अगरचे कुम्हार के पेशे से मुत्ल्लिक़ है लेकिन तामीरी मसाले का यह बहुत बड़ा [1]जुज़ है और इसकी माँग बहुत ज्यादा रहती है। इसलिए कारोबारी लोगों ने एक [2]मुस्तक़िल काम के तौर पर इसको तैयार कराना शुरू कर दिया है। चूँकि इसका ताल्लुक [3]बिल्कुलया [4]इमारत के काम से है, इसलिए इसकी [5]इस्तिलाहात ईंट साज़ी उनवान से लिखी गयी है ताकि फन–ए–तामीर की जुमला इस्तिलाहात इसी बाब[6] में रहे। ([1]अंग, [2]स्थाई, [3]पूर्णतया, [4]भवन, [5]परिभाषा, [6]अध्याय)

अद्धा (पु0) देखें ईंट–1।

अंकर (पु0) देखें ईंट खर।

थापना (क्रिया) देखें पाथना।

ईंट (स्त्री) गीली मिट्टी से मुस्तत़ील शक्ल में मुख्तलिफ जसामत का पुख्ता यानी पज़ावे में पका कर तैयार

गुम्मा

किया हुआ दीवार की चुनाई का मसाला, जिसकी वज़अ, क़तअ और नौइय्यत के लिहाज़ से हस्बे ज़ेल इस्तिलाही नाम मशहूर है। **अद्धा** दो बराबर हिस्सो में टूटी हुई ईंट, जो पज़ावे में टूट गयी हो। **पव्वा** ईट का चौथाई टुकड़ा जो चुनाई के काम में न आए। **पौना** लगभग एक चौथाई भाग टूटी हुई ईंट, जो [1]सालिम ईंट के साथ चुनाई में लगाई जा सके। **झावाँ** वह ईंट जो पज़ावे में ज़्यादा भुनकर बहुत सख्त और [2]बदवज़ा हो गया हो, बहुत ज़्यादा को खिंगर कहते हैं जिसकी [3]शक्ल पिघली हुई ईंट की सी हो जाती है। **चटख़ा** वह ईंट जो पज़ावे में तेज़ आँच खाकर जगह–जगह से [4]तर्ख़ जाए। **चौपाल** पुरानी वज़अ की बड़ी क़िस्म की ईंट, जो तकरीबन 8 या 9 इंच लम्बी 6 या 7 इंच चौड़ी और डेढ़ इंच मोटी होती है। इसको शाहजहानी ईंट भी कहते हैं, जो [5]गालिबन् शाहजँहानाबाद (देहली) की [6]तामीर के वक्त, बड़े–बड़े [7]आसार की दीवारों की चुनाई के लिए तैयार कराई गई होगी। [8]बज़ाहिर इस नाम की [9]वज़ह तस्मिया यही मालूम होती है। **खोरा** कोरे झड़ी शक्ल की बिगड़ी हुई ईंट। **गुंका** गुम्मा की [10]क़िस्म की, मगर उससे छोटी ईंट। **देखें** गुम्मा **गुम्मा** [11]जदीद, [12]वजअ की बड़ी किस्म की ईंट, जो चिकनी मिट्टी को खूब कमाकर और खास तरीके से पकाकर तैयार की जाती है। [13]शिमाली हिन्द में [14]निहायत उम्दा और पुख्ता बनती है [15]अमूमन 8, 9 और 10 इंच तक लम्बी इसकी [16]निस्फ चौड़ी और तीन इंच मोटी होती है। इसका छोटी शक्ल गुटका कहलाता है। **लखोरी** पुराने वजअ की चौपाल से छोटी ईंट अ़मूमन 6 या 5 इंच लम्बी 3 इंच चौड़ी और एक डेढ़ इंच मोटी होती है। इसकी [17]वजह तस्मिया मालूम नहीं, [18]बाज़ कहते हैं कि शाहजहाँनाबाद देहली के [19]तामीर के वक्त लाहौर से ईंट बनाने वाले आए थे, उनकी बनाई हुई छोटी किस्म की ईंट बहुत पुख्ता और उम्दा होती थी, इसलिए वह लाहोरी मशहूर होकर बाद में लखोरी कहलाने लगी। बाज़ का बयान है कि इस ईंट को बहुत दिनों तक पज़ावे में दबा कर रखते हैं, जिसकी वज़ह से वह खूब पुख्ता होकर लाखी रंग की हो जाती है इसलिए इसको लखोरी कहा जाता है। यह ईंट [20]निहायत [21]पुख़्ता होती है, इसलिए लदाव की छतों और डाटों की तामीर में लगायी जाती है। [22]जदीद वज़अ की ईंट के मुकाबले में इसका रवाज़ करीब–करीब खत्म हो गया है। ([1]समूचा, [2]बुरी आकृति, [3]आकृति, [4]चिटक, [5]शायद, [6]निर्माण, [7]चौड़ाई, [8]दिखने में, [9]नामकरण का कारण, [10]प्रकार, [11]आधुनिक, [12]आकार, [13]उत्तर, [14]अत्यधिक, [15]प्रायः, [16]आधी, [17]नामकरण का कारण, [18]कुछ, [19]निर्माण, [20]अत्यधिक, [21]कठोर, [22]आधुनिक)

ईंट खर (पु0) ईंट का रोड़ा या टूटी हुई नाकारा ईंट।

भट्टा (पु0) [1]जदीद [2]वज़अ की बड़ी भट्टी जो एक [3]मुस्ततील गहरे हौज़ के शक्ल की होती है, इसके अंदर कच्ची ईंट की जाली की शक्ल जमाते हैं, और खाली जगह में पत्थर का कोयला वगैरह भर कर ऊपर से मुँह ख़ाम कर देते हैं, और जिसके [4]वस्त में एक [5]आहनी चिमनी धुआं निकलने के लिए खड़ी कर दी जाती है। इस [6]अमल को भट्टा लगाना और इसके बरअक्स भट्टा खोलना कहते है। **लगाना, खोलना** के साथ बोला जाता है। ([1]आधुनिक, [2]आकार, [3]आयताकार, [4]मध्य, [5]लोहे, [6]प्रक्रिया)

पाथना (क्रिया) सांचे के जरिये गारे से कच्ची ईंट तैयार करना।

पथेर (स्त्री) ईंटे पाथने की जगह यानी वह जगह जहाँ की मिट्टी लेकर ईंटे तैयार की जाए।

पथेर (पु0) ईट थापने यानी सांचे के ज़रिये से तैयार करने वाला मज़दूर।

पज़ावह (पु0) पुरानी [1]वज़अ की ईंट वगैरह जो एक [2]अम्बार की शक्ल में टीले की वज़अ पर बनाई जाती है। इस किस्म के लाहौरी कारीगरों के पंजावे शाहजहाँ के [3]अहेद के नई देहली की [4]तामीर के वक्त तक रायसेना में मौजूद थे। ([1]आकार, [2]ढेर, [3]युग, [4]निर्माण)

पवा (पु0) देखें ईंट–2।

पौना (पु0) देखें ईंट–3।

टारस (स्त्री) देखें कनिया।

टाइल (पु0) (अंग्रेजी) [1]जदीद, [2]वज़अ का [3]आला किस्म का तैयार किया हुआ खपरा। (कवेलू की किस्म) ([1]आधुनिक, [2]आकार, [3]उच्च)

झावां (पु0) देखें ईंट–4।

चट्टा (पु0) पैमाइश या गिनती के लिए [1]मुस्ततील या [2]मुरब्बा शक्ल में जमाई हुई ईंटे या पत्थर, ([3]लफ़्ज़, चक, चक्का और फिर चट्टा बन गया है) [4]नवाहे देहली के मज़दूर फड़ और फड़ी कहते हैं, जो [5]अमूमन तीन गज़ लम्बी ढाई गज़ चौड़ी और करीब एक गज़ ऊँची होती है। **बांधना, बनाना, लगाना** के

साथ बोल जाता है। ([1]आयताकार, [2]वर्गाकार, [3]शब्द, [4]आसपास, [5]प्रायः)

चटखा़ (पु0) देखें ईंट–5।

चौपाल (स्त्री) देखें ईंट–6।

ढैंकी (स्त्री) ईंट थापने का सांचा।

रोड़ा (पु0) ईंट घर–ईंट का टूटा हुआ बेडौल और निकम्मा टुकड़ा।

शाहजहानी ईंट (स्त्री) देखें ईंट।

कुल्फीदार कवेलू (पु0) देखें कवेलू वाक्य (क)।

किरकव्वा (पु0) ईंट का चूरा जो चुनाई के चूने की तैयारी में डाला जाता है। पूरब में खुवा और [1]वस्ते हिन्द में किरकव्वा कहलाता है। ([1]मध्य)

कक्किया (स्त्री) देखें किन्या।

किन्या(स्त्री) [1]मुस्तती़ल शक्ल की छोटी और पतली ईंट–दकन के इलाक़े में, टारस और आगरा व [2]नवाहे आगरा कहलाती है, जो शायद कंया या किंनया का बिगड़ा हुआ रुप है। [3]वस्ते हिन्द के बाज़ इलाक़ों में किरकव्वा ईंट के रोड़े और चूरे को भी कहते है। शायद यह भी किंया का ही बिगड़ है। ([1]आयताकार, [2]आसपास, [3]मध्य)

कवेलू (पु0) खपरैल तैयार करने के लिए ईंट की तरह हल्के और पतले क़िस्म के बनाए हुए नालीदार या चपटे खपरे।

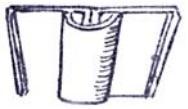

कवेलू (खपरैल)

नरिया या नलिया नाली की सी शक्ल का बना हुआ कवेलू, इसको कुल्फीदार कवेलू और खोरिया भी कहते है, क्योंकि छवाई में इनकी नालियाँ एक दूसरे के साथ आपस में जोड़ दी जाती हैं।

खपरा चपटा बना हुआ कवेलू [1]जदीद [2]वज़अ़ का [3]निहायत [4]आला और [5]उम्दा किस्म का बनाया जाता है। बंगलौर का बना हुआ बहुत मशहूर है, और टाइल के नाम से [6]मारुफ है। दकन और [7]वस्ते हिन्द में कवेलू और [8]शिमाली में [9]मजाजन् खपरैल कहते है–[10]लफ़्ज़ कवेलू शायद फारसी लफ़्ज़ कूल [11]बमाने गढ़ा, (बाद में) बिगड़ कर नालीदार खपरैल के लिए बोला जाने लगा है, जिस को देहाती नरिया (नलिया) कहते है। ([1]आधुनिक, [2]आकार, [3]अत्यधिक, [4]उच्च, [5]विशिष्ट, [6]प्रसिद्ध, [7]मध्य, [8]उत्तर, [9]लक्षितार्थ, [10]शब्द, [11]जिसका अर्थ)

खपरा (पु0) देखें कवेलू प्रयोग।

खंगर (पु0) देखें ईंट–4।

खुवा (पु0) देखें किरकव्वा।

खोरा (स्त्री) देखें ईंट–7।

गुटका (पु0) देखें ईंट–8।

गुम्मा (स्त्री, पु0) देखें ईंट–9।

लाई (स्त्री) ईंट थापने की उजरत।

लखोरी (स्त्री) देखें ईंट–10।

नरिया या नलिया (पु0) देखें कवेलू प्रयोग।

अनुभाग–(7) पेशः–ए–चूना व सीमेन्ट साज़ी

अंकड़ी (स्त्री) देखें अंगटा।

अंगटा (पु0) एक क़िस्म का मटियार कंकर; जो खदान से मिट्टी में मिला हुआ निकलता है, जिसको भट्टी में पकाकर एक क़िस्म बनाई जाती है, जो [1]इस्तिलाह में हरसरु कहलाती है और असल हालत में पुख्ता सड़कें बनाने के काम लाया जाता है। अंगटे को [2]मुख्त़सरन कंकर भी कहते हैं। ([1]परिभाषन, [2]संक्षिप्ततः)

चूना (पु0) एक खास कंकर या पत्थर को फूँककर भट्टी में जलाकर तैयार किया हुआ [1]तामीरी मसाला, जो रेख़ते की इमारत में चुनाई और अस्तरकारी के काम आता है। **बुझाना** चूने की फुँकी हुई डलियो को जिन्हें [2]इस्तिलाह में खील भी कहते हैं–पानी में हल करने का [3]अम़ल। **बनाना** ख़ास क़िस्म के [4]मादनी कंकर या पत्थर को भट्टी में जलाकर [5]कुश्ता करना यानी खील बनाना। **फूकना** चूने के कंकर या पत्थर को भट्टी में कुश्ता करना खील बनाना। **सानना** चुनाई के लिए तैयार किये हुये चूने को पानी की लाग से रौंद और मसल कर नर्म व लोचदार बनाना। (किलाना) **देखें** सानना ([1]निर्माणीय, [2]परिभाषन, [3]प्रक्रिया, [4]खनिज, [5]कूटकर)

दर्रा (पु0) देखें संदला।

सिमिंट (स्त्री) चूने की क़िस्म का [1]तामीरी मसाला जो खरिया (चाक) और चूना मिलाकर तैयार किया जाता है। यह मसाला पानी के अन्दर [2]खुश्क होने के [3]बाद पत्थर की तरह हो जाता है, और एक मर्तबा खुश्क होने के बाद दो बारह [4]इस्तेमाल में नहीं आता। ([1]निर्माणीय, [2]सूखा, [3]पश्चात्, [4]प्रयोग)

सफेदी (स्त्री) कलई–पत्थर के चूने को [1]इस्तिलाह में सफेदी या [2]कलई कहते हैं, जो [3]अ़मूमन पुताई के काम में आता है और [4]बाज़ हालतों में रेत या ईंट का चूरा मिलाकर चुनाई का चूना तैयार किया जाता है।

बुझाना के साथ बोला जाता है। ([1]परिभाषा, [2]निकिल, [3]प्रायः, [4]कुछ)

संदला (पु0) दर्रा–अस्तरकारी के ऊपर पतली और चिकनी तह चढ़ाने को, सफेदी में मिलाकर [1]निहायत बारीक तैयार किया हुआ चूना, सं़दल की मानिन्द बारीक पिसा हुआ चूना, इसमें [2]मुनब्बतकारी का काम भी बनाया जाता है [3]बाज़ [4]मुक़ाम पर इसको सुर्खी कहते हैं। ([1]अत्यधिक, [2]बेलबूटे, [3]कुछ, [4]स्थान)

सुर्ख़ी (स्त्री) देखें संदला।

क़लअ़ी (स्त्री) देखें सफेदी।

कंकर (पु0) देखें अंगटा।

खरयाली (स्त्री) चूना, हरसरु या सफेदी बुझाने का चौ बच्चा लफ़्ज़ खरिया (एक प्रकार की सफेद मिट्टी) से खरियाली बना लिया है, यानी खरिया, हरसरु वगैरह का महलूल तैयार करने का चौबच्चा या हौदक।

गच (स्त्री) सफेदी और दरिया का रेत मिलाकर गुलकारी और मुनब्बतकारी के लिए तैयार किया हुआ एक किस्म का चूना। यह मुरक्कब बहुत उम्दा एवं पायदार होता है। सीमेंट के बराकस इस मसाले की यह खासियत है कि अगर इस पर पानी का असर न हो, यानी खुश्क जगह रहे तो सैकड़ों बर्स क़ाय और कारआमद रहता है। बाज़ मुक़ाम पर मामूली चूने को गच कहते है।

गट्टा (पु0) मुस्तअ़मिला सूखा हुआ चूना, पुरानी इमारत का निकला हुआ चूना।

हरसरु (पु0) एक ख़ास क़िस्म की मादनी मिट्टी का बना हुआ चूना, इस मिट्टी में चूने के बारीक कंकर मिले होते है। इसके बने हुए चूने का रंग, किसी क़दर मैला होता है, इसमें रेत मिलाकर चुनाई और छपाई के काम में लाया जाता है। मामूली पुताई भी की जाती है।

8. पेशा–ए–बेलदारी

आलन (स्त्री) देखें कैगल।

इकघान चूना चूने की एक मुक़र्ररिह मिक़दार को जो अ़मूमन 25 मन या 25 मुकस्सर फुट होती है। इस्तिलाहन एक घान या एक चक्की चूना कहते है।

अखानी (स्त्री) देखें पंज गोरा।

बारी (स्त्री) फाली, छोटा और हल्का बारीक नोंक का गदाला जिससे छोटे गढ़े खोदे जाते है। असल लफ़्ज़ फल से फाल और फिर फाली और बारी हो गया।

बिंट या बिंटा (स्त्री) कुदाल फावड़े और पंज गोरे वगैरह चोबी दस्ता।

बेल या बेलचा (स्त्री) देखें फावड़ा–फारसी में फावड़े की क़िस्म के औज़ार को बेल कहते है। उर्दू में यह लफ़्ज़ नहीं बोला जाता बल्कि फावड़ा कहते हैं, लेकिन लफ़्ज़ बेलदार मारूफे आ़म है और बेलचा बाग़बानो में सीधे दस्ते के फावड़े को कहते है।

बेलदार (पु0) इमारत को गिराने, मलवे की छटाई और बुनियाद की खुदाई करने वाला पेशावर मज़दूर, जो आम मज़दूरों का सर गरदह या जमेअ़दार भी होता है। चूँकि उसके साथ खुदाई के औज़ार होते हैं इसलिए इसको बेलदार कहते है। बेल फारसी में फावड़े की क़िस्म के औज़ार को कहते है, लेकिन उर्दू में लफ़्ज़ मुस्तामिल नहीं बेलदार मारूफ है। बेल की बजाये फावड़ा बोला जाता है, अलबत्ता बाग़बानों में क्यारियाँ बनाने के फावड़े को बेलचा कहते है।

पाट (पु0) चूना चक्की के ग्रंड (चूना पिसने की नाली) के अन्दर की [1]गुदव्वर व [2]मुसत्तह जगह, जिसके [3]मर्कज़ पर चक्की की लाट की [4]मेख़ होती है। **देखें** तस्वीर चूना चक्की पे0। ([1]गोलाकार, [2]समतल, [3]केन्द्र, [4]खूंटी)

पंज गोरा–पंचन गोरा (पु0) पत्थर की रोड़ी या कंकड़ उठाने, समेटने का पंजे की तरह का,पंज शाखा फावड़ा कहीं कहीं उखानी कहा जाता है।

तस्वीर का स्थान

फकसा (पु0) गाची, धाबा यानी कड़ी तख्ते की छत पर डालने के लिए मलबे की मिट्टी का बनाया हुआ गोंधा, ठोस गारा बनाना।

फावडा (पु0) कुस्सा (पूरब) मिट्टी चूना और इसी [1]क़िस्म का दीगर [2]तामीरी मसाला। सीमेंट और टोकरी वगैरह में भरने का औज़ार, इसमें खड़ा हत्था और बेल या बेलचे में पड़ा दस्ता लगा होता है। ([1]प्रकार, [2]निर्माणीय)

फावड़ा

तस्ला (पु0) (संस्कृत तश्टा) कूंडा, चूना, गारा वगैरह उठाने का उथली शक्ल का [1]आहनी बर्तन। ([1]लोहे)

तग़ार (पु0) चुनाई के लिए चूना सानने या गारा बनाने का, थावले की शक्ल का ([1]मुदव्वर, उथलवाँ) गढ़ा।

यह [2]लफ़्ज़ सिर्फ देहली और [3]नवाहे देहली के मज़दूर बोलते है। **बनाना** के साथ बोला जाता है। (**प्रयेग** चूने के तग़ार से गारे का तग़ार दूर हटकर बनाना चाहिए। [1]गोलाकार, [2]शब्द, [3]आस पास)

टोकरी डालना (क्रिया) टोकरी का [1]तामीरी मसाला, उलट देना, खाली कर देना। ([1]निर्माणीय)

झाम (पु0) कुंए की तह में सुराख़ बनाने का भारी और बड़ी क़िस्म का सब्बल। **देखें** सब्बल।

चाक (पु0) चूना चक्की का ठोस पत्थर का वज़नी पय्या जो गरंड में घूमता है। **देखें** तस्वीर चूना चक्की पे0।

चूना चक्की (स्त्री) चुनाई के लिए चूना पीसने की एक ख़ास क़िस्म की तैयार की हुई चक्की जिस को रहट या कोल्हू की तरह एक या दो बैल चलाते है।

छत उतारना (क्रिया) छत ढाना।

छयु या छैव (पु0) छाम, कुदाल या सब्बल की [1]ज़र्ब का निशान या छोटा सा गढ़ा जो ज़मीन या पत्थर की सतह पर पड़ जाये। ([1]चोट)

छेना (क्रिया) सब्बल की [1]ज़र्ब का निशान पड़ना। ([1]चोट)

दीवार उतारना (क्रिया) दीवार ढाना।

धुर्मुट (पु0) धम्मस (दकन) तहे ज़मीन की सतह कूटने का [1]आहनी थाप और खड़ी [2]चोबी डंडे का औज़ार आमतौर से सड़क कूटने के काम आता है। ([1]लोहे, [2]लकड़ी)

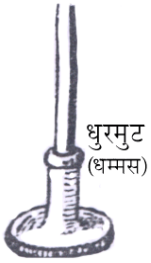

धम्मस (पु0) देखें धुर्मुट

सांग, सांगा (पु0) (संस्कृत शंकु) कुंए की सूत खोलने और हमवार करने का पतली [1]क़िस्म का सब्बल। **देखें** सब्बल, [2]बाज़ [3]मुक़ामात पर सांगड़ा या संगड़ा कहते है। **देखें** सुब्बल ([1]प्रकार, [2]कुछ, [3]स्थान)

सब्बल (पु0) गदाला, फाल, दीवार में मोखा बनाने, पत्थर छेदने और ज़मीन खोदने का नोंकदार सिरे का आहनी डंडा, जो अमूमन पर तीन फुट से 5 फुट तक लम्बा और इंच सवा इंच वतर का होता है। शिमाली हिन्द में गदाला और फाल (फार) वगैरह नामों से मौसूम किया जाता है और दकन में सब्बल जो फारसी लफ़्ज़ सुंम्बा का बिगड़ा हुआ कहते हैं।

सांगड़ा, संगड़ा (पु0) देखें सांग

कुदाल (स्त्री) (संस्कृत कुदारा) मलबा कुरेदने का नुकीला, चोंच के शक्ल का औज़ार–फावड़े की तरह इसमें भी खड़ा चोबी डंडा लगा होता है। इसकी चोंच अ़मूमन छः से दस इंच तक लम्बी होती है। **गैती** दो मुई कुदाल संस्कृत में घन कहते है।

कुस्सा या कुसला (पु0) देखें फावड़ा, दकन के बअ़ज़ इलाक़ों में फावड़े को कहते है। मअ़मूल से छोटा कुसली कहलाता है।

कुसली (स्त्री) देखें कुस्सा।

कैगल (स्त्री) आलन (काहगिल) भुस मिलाकर तैयार किया हुआ गारा।

कीला (पु0) चूना चक्की की लाट का सिरा अटकाने की मेंख। **देखें** तस्वीर चूना चक्की पे0।

खाई (स्त्री) ख़ंदक–दुश्मन की रोक और क़िला या शहर की हिफ़ाजत के लिए फसील के अतराफ गहरा खोदा हुआ गड्ढा।

लंका का कोट समंदर की खाई।
हनुमान जोधा तेरी दुहाई।।

खोंदना (क्रिया) चूने या मिट्टी का गारा बनाने को पैरों से रौंदना।

गाची (स्त्री) देखें फकसा।

गारा (पु0) गीला व सनी हुई मिट्टी चुनाई के लिए पानी मिला कर नर्म और लोचदार बनाई हुई मिट्टी।

गदाला (पु0) देखें सब्बल, फर्हंग–ए–आसिफिया में गदाले को बड़ी कुदाल या दो मुई कुदाल लिखा है। मुमकिन है असल लफ़्ज़ का यही मफ़हूम हो लेकिन उर्दू में गदाला और कुदाल दो मुख़्तलिफ औज़ारो के नाम है। दो मुई कुदाल को गैंती कहते है।

गरंड (पु0) चूना चक्की की मुदव्वर नाली जिसमें चूना पिसता है। **देखें** तस्वीर चूना चक्की पे0।

गिलावा (पु0) गिल+आबा **देखें** गारा–यह लफ़्ज़ गारे के मअ़नों में नही बोला जाता बल्कि मसदरी सूरत में

गिलावा करना बोलते है जिससे मुराद मिट्टी की छिपाई होती है।

गोबरी (स्त्री) गोबर मिलाकर तैयार किया हुआ गारा।

गैंती (स्त्री)–घन **देखें** कुदाल। प्रयोग।

घन (स्त्री, पु0) संस्कृत में दो मुई की कुदाल और दो मुऐ भारी हतौड़े को कहते हैं।

लाट (स्त्री) चूना चक्की के चाक की बल्ली। **देखें** तस्वीर चूना चक्की पे0। **लगाना, डालना** के साथ बोला जाता है।

मिट्टी खींचना (क्रिया) खुदी हुई मिट्टी को फावड़े से समेट कर एक तरफ लाना।

मलया छांटना (क्रिया) मुंहदिम इमारत के मसाले को अ़लाहिदह, अलाहिदह करना।

9. पेशः बंधानी

पाड़ बांधना, वज़नी और बड़े–बड़े तामीरी मसाले को नकलो–हमल और उसको ऊपर की मंज़िलों पर चढ़ाना इस पेशे का ख़ास और निहायत अहम काम है। बालाई मंज़िलो की पाड़ बांधने में बड़ी होशयारी और कारवानी की ज़रूरत है इसमें एक ज़रा सी ग़फ़लत से सैकड़ों जाने ज़ाया होने का अंदेशा होता है। इसलिए इस पेशेवर का शुमार कारीग़रों में होता है।

आटकी (स्त्री) सांगड़ा, आठा, तामीरी मसाले के किसी वज़नी अ़दद को बेलन पर धकेल कर ले जाने का औसत दर्जे का 4–5 फुट लम्बी बल्ली का टुकड़ा जिसको अटका कर भारी अ़दद को आगे सरकाया जाये। **डालना, लगाना, देना, भरना** के साथ बोला जाता है।

आठा (पु0) देखें आटकी।

उठाऊ सीढ़ी (स्त्री) नसैनी, संदली, बांस या लकड़ी का बना हुआ ऐसा ज़ीना जो क़ाबिले मुन्तक़ली हो यानी आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सके।

आड़ या अड़गा (स्त्री) अड़ंगा।

आड़ या अड़ंगा (स्त्री) अड़ंगा, पाड़ की खड़ी लकड़ी का झोक रोकने और सहारने वाली बशक़्ल वतर (तिरछी) बँधी हुई लकड़ी।

अड़ंगा (पु0) देखें आड़

अड़वाड़ (स्त्री) टेका किसी वज़नी चीज़ को सहारा देने और ऊपर उठाए रखने वाली आड़ पूरी छत या छत के किसी हिस्से का बोझ सहारे रखने वाला टेका। **लगाना, खड़ी करना, भरना, देना** के साथ बोला जाता है।

उछाला (पु0) कड़ी, बल्ली, शहतीर या पत्थर की सिल वगैरा के किसी एक सिरे के नीचे को दबने पर दूसरे सिरे का ऊपर को उभरना। **बांधना** उछाले की रोक करना यानी कोई चीज़ या किसी चीज़ से बाँधकर उछाले की रोक करना।

आस (स्त्री) सहारा, टेका, रोक जो किसी वज़नी चीज़ को उठाए रखे यानी ऊपर को संभाले रहे। मामूली क़िस्म की अड़वाड़ (थूनी) जो किसी कड़ी या शहतीर के नीचे सहारे के लिए आरज़ी तौर पर लगाई जाए। **लगाना, भरना** के साथ बोला जाता है।

आसथम (पु0) (आस+थम) **देखें** आस और थम। किसी चीज़ के सहारे की थूनी या टैक।

आंट (स्त्री) पाड़ की बंदिश का फंदा, बंदिश की रस्सी का लपेट, बल **लगाना, डालना, देना** के साथ बोला जाता है। मामूल से छोटे फंदे या लपेट को अंटी कहते है।

अंटी (स्त्री) देखें आंट

बरांगा या बरंगा (पु0) किसी किस्म की मोटी लकड़ी जो किसी भारी चीज़ के आगे को सरकाने और लुढ़काने को उसके नीचे तूर्ल में डाली जाए, वअ़ज़ मुक़ाम पर बरंगा कहलाती है। **देना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

बरगा (पु0) देखें बरांगा।

बलथक (पु0) कमरपट्टी, पाड़ की ठड़ी मेअ़मार के बैठने और मसाला रखने का ठीया, लपक और झोंक सहारने की लकड़ी जो बतौर (पुश्तीवान), ठड़ी के नीचे बीच में और सिरों पर बांधी जाती है।

बल्ली (स्त्री) लम्बी और गाऊ दुम अवसत दर्जे की मोटी लकड़ी जो किसी पहाड़ी दरख़्त मसलन सरू के तने के मुशाबा होती है। शिमाली हिंद में तामीरी काम में पाड़ बंदी के काम आती है।

टूट जायेगी यह बल्ली कहकशां की ख़ुद ब ख़ुद
देख लेना एक दिन गरदूं का छप्पर उड़ गया

बंधानी (पु0) पाड़ बाँधने, वज़नी तातीरी मसाले की नक़ल व हमल और उसके बालाई मंज़िलो पर चढ़ाने वाला पेशावर मज़दूर।

बंधन (निःसृत) अंटी, गिरह; **देखें** आंट।

बंधेज (पु0) भारी पत्थर व दीगर वज़नी सामान लटका कर उठाने का और वज़नी सामान लटकाने का मोटे और मज़बूत रस्से का बनाया हुआ हल्क़ा **प्रयोग** खम्भा उठाने में दो बंधेज लगेंगे। **प्रयोग** आगे पीछे दो बंधेज डालो, बीच में खाली छोड़ दो।

बंगड़ा (पु0) पाड़ की आड़ी लकड़ी रखने का दीवार की चुनाई में छोड़ा या तोड़ा हुआ मोख **छोड़ना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

बैठसार या बैठसाल (स्त्री) देखें सीढ़ी और ज़ीना। बाज़ कारीगर (ब) की जगह (प) बोलते हैं।

भड़क (स्त्री) जाली, ठड़ी देखो जाली और ठड़ी। यह लफ़्ज़ शायद फड़ का बिगडा हुआ है।

बेलन की पाड़ (स्त्री) देखें पाड़–2।

पाड़ (स्त्री) पेंट या पेट,मचान, टांड़। कद से ऊँची चुनाई के लिए मेअमार के बैठने और तामीरी मसाला रखने का अड्डा जो चुनाई के क़रीब बल्लियां खड़ी गाड़ कर बनाया जाता है। यह सिलसिला मंज़िलों ऊपर चला जाता है। बालाई मंज़िलो पर वज़नी अशया ले जाने और मज़दूरों के चढ़ने उतरने की सहूलत के लिए पाड़ के साथ रपटा तैयार किया जाता है। ऐसी पाड़ को इस्तिलाह में रपटे की पाड़ कहते है। ऐसे मौकों पर जहाँ रपटे की पाड़ के लिए गुंजाइश न हो, भारी सामान चढ़ाने और मामूली मसाला पहुँचाने के लिए, दो रूखी पाड़ बाँधकर उस पर बेलन चरखिया बाँधते हैं और उनके ज़रिए रस्सियों से भारी अशया ऊपर खींचते है इसी पाड़ को इस्तिलाहन बेलन की पाड़ कहते है। ऊपर की मंज़िल की पाड़ जिस का नीचे की मंजिल या सतह–ए–ज़मीन से कोई लगाव न हो और ऊपर की तामीर में ऊपर ही ऊपर मुख्तसर बाँधी जाए, गुजारे की पाड़ कहलाती है।

पैट या पैंट (स्त्री) देखें पाड़।

पैटी (स्त्री) पाड़ की लकड़ी या लकड़ियाँ जिस पर मेअमार के बैठने और मसाला रखने को ठड़ी, तख्ता वगैरह डाला जा सके, इसको कमर पट्टी भी कहते हैं। **डालना, बाँधना** के साथ बोला जाता है।

तुक्का (पु0) टेकन पट्टी (पाड़ के अरज़ की लकड़ी) के सहारे की लकड़ी जो उसके नीचे खड़ी बतौर टेक बांधी जाती है। **देना, लगान, भरना** के साथ बोला जाता है।

तवलन (स्त्री) देखें थूनी और तुक्का।

थूनी (स्त्री) तुक्का, पाड़ की बल्ली या चाली की झोक (लचक) को रोकने वाली लकड़ी, जो टेक के तौर बांधी जाये।

थामों (स्त्री, पु0) देखें लाग।

टांड़ (पु0) देखें पाड़।

टड़ी (स्त्री) देखें ठड़ी और चाली, लफ़्ज़ टट्टी से टड़ी बन गया है।

टेकन (स्त्री) देखें तुक्का।

ठड़ी (स्त्री) चाली, पाड़ पर मेअमारो बैठने का बाँसो का बना हुआ ठीया, जिसे 8–10 बाँस बराबर–बराबर पुश्तीवानों से बाँधकर तैयार करते है। ठड़ी ठाठ से बना है। **देखें** पेशःछप्पर बंदी, **डालना, चढ़ाना** के साथ बोला जाता है।

चाली (स्त्री) देखें ठड़ी, चाली दरअसल साबित बाँसो–सी टट्टी की वज़अ पर मेअमारो के पाड़ पर बैठने और मसाला रखने के लिए बनाई जाती है। शिमाली हिन्द के मेअमारों में ठड़ी और टड़ी के नाम से और वस्ते हिन्द और दकन में चाली के नाम से मौसूम की जाती है। पहला नाम ग़ालिबन टट्टी का इस्म तस्ग़ीर है और दूसरा झेलना से जिसके माने बोझ उठाना है। यह बिगड़ कर चाली बन गया है।

दाब (स्त्री) सांगड़ा देखें आटकी। **प्रयोग** शहतीर के सिरे को दाब देकर या लगाकर उभारो।

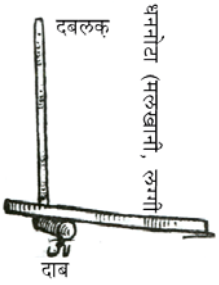

दबलक़ (स्त्री) (दाब+लाग) दाब की लाग वह छोटा या बड़ा टेकन, जो दाब के सिरे के नीचे अश्या का वज़न बाँटने के लिए लगाया जाये। इस लाग (टेकन) से बड़ी से बड़ी वज़नी शय् बआसानी और कम ताक़त से उभर या उछल जाती है। **देखें** दाब। दाब के सिरे पर की खड़ी बल्ली या खम जो दाब के दबाव से ऊपर के वज़न को उभार दे या उठा दे। इस्तिलाह में धन नोटा, मलखानी और लग्गी कहलाता है, और उस खम्भे को भी कहते है जिसके सिरे पर दराबी (चरखी) बाँधकर वज़नी अश्या ऊपर खींची जाती है। **लगाना, देना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** दासे को दबलक़ देकर उठाओ।

दराबी (स्त्री) आला ज़रे–ए–सक़ील चर्खी, बेलन, कुच्ची जिसके ज़रीआ़ वज़नी सामान खींचकर ऊपर बुलंदी पर चढ़ाया जाता है।

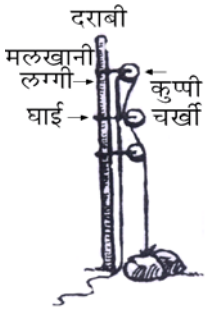

दहता, दहजाना (क्रिया) कड़ाडे की मट्टी या कच्ची दीवार वगैरह का फिसल जाना, गिर जाना। **प्रयोग** बारिश से सारी दीवार ढह गई।

धन नोटा (पु0) मलखानी, लग्गी, **देखें** दबलक़।

टोहलू (पु0) बेलन जो बरंगे के ऊपर अर्ज़ में डाला जाए जो वज़नी चीज़ को ऊपर लिए हुए बरंगे पर घूमता हुआ आगे पीछे। **देखें** बरंगा **देना, लगाना, रखना** के साथ बोला जाता है।

रपटा (पु0) मज़दूरों के पाड़ पर चढ़ने उतरने और तामीरी मसाला ऊपर पहुँचाने के लिए पाड़ से मिला कर बांस बल्ली वगैरा का तैयार किया हुआ ढलवा रास्ता। **देखें** पाड़। **बनाना, बांधना** के साथ बोला जाता है।

रपटे की पाड़ (स्त्री) वह पाड़ जिस के साथ रपटा बना हुआ हो, **देखें** पाड़ और रपटा।

ज़ीना (पु0) नसैनी, **देखें** सीढ़ी।

सांगड़ा/संगड़ा (पु0) देखें आटकी और दाब भारी पत्थर उठाने के लिए टेका देने छोटी बल्ली।

संदली (स्त्री) मखरूती शक्ल की चौरुख़ी सीढ़ी (ज़ीना) जिस के सिरे पर काम करने वाले के बैठने को एक मुरब्बअ़ तख्ता जड़ा होता है। बिला सहारे हर जगह खड़ा करके काम किया जा सकता है।

स़ंदली (सं़दली) (स्त्री) फारसी में छोटी चौकी और छोटे तख़्ते को कहते है। उर्दू में इसका मफ़हूम बिल्कुल जुदा है। इसलिए उर्दू के मफहूम के लिए इमला (स) से की है। **देखें** संदली।

सीढ़ी (स्त्री) बैठसार, पाड़ पर चड़ने उतरने और मामूली खांगी ज़रूरत का चोबी या बांस का बना हुआ उठाऊ जीना, आगरा और अवध के इलाक़े से नसैनी भी कहते है। **रेखते** यानी चुनाई के ज़ीने की एक ठोकर।

कैंची (स्त्री) देखें अड़ंगा। **लगाना, देना, फंसाना** के साथ बोला जाता है।

कुप्पी (स्त्री) चरखी, **देखें** दराबी। कमरपट्टी **देखें** पट्टी।

कमंद (स्त्री) रस्सो का बनाया हुआ ज़ीना।

गुचारे की पाड़ (स्त्री) देखें पाड़।

घाई (स्त्री) दराबी की रस्सी या रस्सी का हल्क़ा जिसमें दराबी डाल कर मस्तूल के सिरे पर बांधा जाता है। **देखें** दराबी **डालना, बांधना** के साथ बोला जाता है।

लाग (स्त्री) देखें दबलक़।

लाग (स्त्री) पोली ज़मीन के गढ़े के पाखो की मिट्टी के रोक की आड़। बाज़ कारीगर थामू कहते है। यह लकड़ी के शहतीर या तख़्ते होते है जो पाखे से लगाकर जमा दिए जाते है ताकि पाखे की मिट्टी ढहने न पाये।

लग्गी (स्त्री) देखें धननौटा।

लपेट (स्त्री) देखें आंट।

मचान (पु0) देखें पाड़।

मलखानी (स्त्री) देखें धननौटा और दबलक़।

नसैनी (स्त्री) देखें सीढ़ी (संस्कृत निश्रेणी)।

10. पेशा–ए–मेअ़मारी

आबचाक (पु0) झूत, सीरी, दो मकानों की छत या छप्पर और खपरैल की औलती का पानी गिरने की तंग जगह। **गलियारा, छोड़ना, निकालना** के साथ बोला जाता है।

उपरौनी कोठरी (स्त्री) बाखर, बखार, बखारी (बुखारी) कोलकी।

उपरैचा (पु0) दीवार का इख्तितामी सिरा जिस पर छत की कड़िया रखी जायें या मुंडेर बनाई जायें।

उपरौटा (पु0) संस्कृत अट्टा–ऊपर की मंजिल, बाला ख़ानः कोठा, छोटी किस्म की अटारी या अटरया कहते है।

आतश खानः (पु0) अकिनगर, हमाम की सतह, फर्श के नीचे बनी हुई भट्टी जो हमाम गर्म करने को ज़मीन दोज़ बनाई जाती है।

आतश दान (पु0) गुर्सी, अंगीठी, कमरे की दीवार के आसार में बनी हुई अंगीठी जो सर्द मुमालिक में जाड़े के मौसम में कमरा गर्म रखने को रौशन की जाती है। **रखना, छोड़ना** के साथ बोला जाता है। इस अंगीठी का धुआं निकालने को दीवार के आसार में बतौर चिमनी जो मोखा बना दिया जाता है उस को इस्तिलाह में दूदकश, धुवांरी या धूवाली कहते हैं।

उथली डाट या उथलवां डाट– गुम्बदी डाट से मिलती जुलती फैलवां (मुँहफट) दहन की डाट जो मकान के सदर दरवाज़े को दीदारु बनाने के लिए रुकार पर दीवार के पाखों से ज़रा आगे को बढ़ा कर बनाई जाती है। इसी वजह से इस को ताज भी कहते है और इस किस्म का डाटदार दरवाज़ा ताजदार दरवाज़ा कहलाता है। देखो गुम्बदी डाट और ताजदार दरवाज़ा और तस्वीर डाट, पे0।

अट्टा (पु0) बाला खाना, कोठा। मकान की छत पर बना हुआ मकान, यह इस्तिलाह इब्तिदाई इमारत के ऊपर के मकान के लिए मखसूस है, मामूली और छोटे को अटारी कहते हैं। **बनाना।**

अटारी (स्त्री) देखें उपरौटा।

अटरया (इस्म तस्गीर) देखें उपरौटा।

आसार (पु0) दीवार का अर्ज़, चौडाई, बुनियाद के मअ़नों में भी बोलते है। **देखें** बुनियाद। **भरना** तैयार करना, चुन्ना, हमवार करना **छोड़ना, काटना** बुनियाद के आसार की चौड़ान से कुछ हिस्सा छोड़कर ऊपर की चुनाई करना आसार छोटा करना। **प्रयोग** तीन इंच आसार छोड़कर दीवार की चुनाई शुरु की जाए। **प्रयोग** दो मंजिलः दीवार का आसार तीन इंच काट दिया जाए। **निकालना** दीवार के अर्ज़ के लिए गुंजाइश रखना **रखना, रंगना** आसार की चौडान क़ायम करना बुनियाद डालना, सही करना, निशान डालना।

इजारा या इज़ार (पु0) पैकार–इमारत की दीवारों की सतह फर्श से तीन सवा तीन फुट तक ऊँची तैयार की हुई हद, खिड़की या ताक़ की हद तक चुनाई। **प्रयोग** इजारा रेख़ते का तैयार किया हुआ है।

अहाता (पु0) घेर, अ़िमारत के अतराफ की महदूद ज़मीन, कुशादः सहन, चौहद्दी, अराज़ी। **छोड़ना** इमारत के अतराफ खुली ज़मीन रखना।

आख़री गेह (स्त्री) देखें गेह।

अद्धे की डाट (स्त्री) निस्फ़ दायरे की शक्ल की डाट, इस को इस्तिलाह में गोल डाट कहते है और डाट की बनावट में इस का दर्जा सब से अव्वल समझा जाता है। **देखें** डाट व तस्वीर डाट।

गोल डाट (अद्धे की डाट)

इज़ारा (पु0) देखें इजारा।

अस्तरकारी (स्त्री) लिपाई, छपाई, पलस्तर–दीवार की सतह पर चूने वगैरह की चड़ाई हुई तह अ़मूमन चूने की तह चढ़ाने को इस्तिलाह में अस्तरकारी कहा जाता है। **करना** के साथ बोला जाता है।

उस्तरी (स्त्री) देखें बंगड़ीदार डाट। प्रयोग व तस्वीर डाट।

आफताबी माहताबी (स्त्री) चबूतरे के सहन के वस्त में आगे बढ़ा हुआ और चबूतरे के सहन की सतह से किसी क़दर बुलंद छोटा मुस्ततील चबूतरा, जो मौसम–ए–सर्मा की धूप और गर्मा की चाँदनी रात का मज़ा उठाने को उमरा के क़दीम तर्ज़ के मकानात में बनाया जाता है। सिर्फ माहताबी भी कहते हैं।

स्थाल (स्थान) (पु0) तारिक–उद–दुनिया (ज्ञानियों) लोगों के गुज़र बसर करने की इमारत, इसी से लफ़्ज़ आसताना, थाना और थान बने है। उर्दू में पहला मुतबर्रक मुक़ाम (इमारत) के लिये, दूसरा पुलिस की चौकी के लिये और तीसरा घोड़े के बाँधने की जगह के लिये मख़्सूस है।

इक पटा दरवाज़ह (पु0) मालुम से छोटा एक पटा (किवाड़) का दरवाज़ह।

इक पोलिया (पु0) शारेअ़ आ़म पर बनी हुई एक दरी मेहराब रास्ते या सड़क पर बनी हुई एक दरी मेहराब।

इक छली चुनाइ (स्त्री) दीवार की एक तरफ की चुनाई। दीवार के दो रुख़ों में से किसी एक रुख़ की तैयारी की बाक़ाइदह बंदिश, इसको एक दौरिया चुनाई भी कहते हैं। जो अ़मूमन चिफ़्श दीवारों में की जाती है। **देखें** चिफ़्श दीवार।

इक दरा (पु0) एक मेहराबदार दर की दालान की वज़अ़ की इमारत। इसको मुख़्तसरन में दरा कहते हैं। **देखें** दालान।

इक दौरिया चुनाई (स्त्री) देखें इकछली चुनाई।

इक गही इमारत (स्त्री) इकहरी, यानी सिर्फ एक दर्जे इमारत। **देखें** इकहरी इमारत।

इक मंजिला इमारत (स्त्री) वहिद इमारत। वह इमारत, जो न किसी इमारत की छत पर बनी हो, न इसकी

छत पर कोई दूसरी इमारत यानी सतह ज़मीन पर अपनी ज़ात से वाहिद हो।

अकिनगर (स्त्री) (अग़नी + घर) **देखें** आतश खाना–ज़मीं दोज़ भट्टी, जैसी कि हम्मानों के फर्श के नीचे बनाई जाती है। कमरे की दीवार में बनी हुई अंगीठी को भी कहते हैं। जिसे आमतौर से आतशदान कहा और समझा जाता है।

इकहरी इमारत (स्त्री) एक गही (एक मंजिला) इमारत यानी वह इमारत जो आगे पीछे दर दार न बनी हो।

अगरय्यी (पु0) सीधा साधा मेअ़मारी काम करने वाला कुम्हार देहली के मुसलमान मेअमार हिन्दू मेअमारों को अगरय्यी कहते हैं। आगरा और नवाह आगरा के मेअमार जो शाह जहानी देहली के तामीर के वक्त देहली आये, ग़ालिबन उनका नाम अगरय्या मशहूर हो गया।

अगली गेह (**देखें** गेह)

अगवाड़ा (पु0) मकान के दरवाज़े के बाहर का चौक (सहन)।

आला (पु0) छोटा ताक़ **देखें** ताक़।

मसल– दीवार खोई आलों ने।
घर खोया सालों ने।।

आलन (पु0, स्त्री) कैगल–कच्ची दीवारों की छपाई के लिये भस मिलाकर तैयार किया हुआ गारा।

इमाम बाड़ा (पु0) आशूर ख़ाना, मजलिस ख़ाना, वह इमारत जो इमाम हुसैन के नाम से मौसूम की जाये और जो इमाम मौसूफ की नौहा ख़्वानी के लिए वक़्फ़ हो, और जिसमें मुहर्रम के महीने के शुरु के दस दिन तक उनकी याद में ताजियादारी की जाये, इसी लिये आ़शूर ख़ाना भी कहलाता है।

अमला (पु0) तामीरी मसाला जो इमारत की तैयारी में काम आये बशक़्ल इमारत, मकान में लगा हुआ मसाला, लकड़ी, पत्थर, ईंट, चूना वगैरह वगैरा। **प्रयोग** सरकारी ज़मीन पर अमला डालने की इजाज़त नहीं है। **प्रयोग** पट्टेदार ने मीआ़द ख़त्म होने पर अमला उठा कर ज़मीन ख़ाली कर दी। **प्रयोग** इस इमारत का अमला बहुत पुराना है। **उठाना** ज़मीन पर से ताअ़मीरी मसाला हटा लेना, बना हुआ हिस्सा तोड़ देना।

आमनी की डाट (स्त्री) देखें चुग्गे की डाट। **देखें** तस्वीर डाट।

आमनी चुग्गे की डाट (स्त्री) वह अद्धे की डाट जिस का मयाना यानी दरमियानी हिस्सा ज़रा उभार कर उल्टे आम की शक्ल का बना दिया जाये। **देखें** डाट।

आंगन (स्त्री) अँगनाई, बाखल, चौक, सहन, चौतरफ़ा इमारत के बीच में खुली हुयी कुशादह ज़मीन देहाती आँगन और शहरी अँगनाई कहते हैं। **शेर दहन आंगन** वह आँगन जो दरवाज़े की जानिब चौड़ा और सदर इमारत की तरफ सिकुड़ा हो, हिन्दुओं में मन्हूस ख़्याल किया जाता है। **गऊ मुंख आंगन** वह आंगन जो दरवाज़े की तरफ तंग और असल इमारत की तरफ चौड़ा हो, हिन्दुओं में मुबारक समझा जाता है। **रखना, छोड़ना** इमारत के दरमियान खुली जगह रखना।

अँगनाई (स्त्री) देखें आँगन।

आवाज़ बंद छत (स्त्री) गुँग छत, ऐसी तामीर शुदह छत जिसमें आवाज़ न गूंजे; इस छत की तैयारी में हवा की आमदो रफ़्त के रास्ते ऐसे मौकए से बनाये जाते है कि आवाज़ बाज़ गश्त नहीं होती।

आहक पाशी (स्त्री) पुताई, मकान की दीवारों पर क़लई करना, यानी सफेदी का पानी फेरना, सफेदी करना, चूना डालना।

आइना महल (पु0) शाहीमहल की वह इमारत जिसके अंदरूनी हिस्से में दीवारों और छत पर आइनाकारी हुई हो यानी आइनों से मुरस्सअ़ हुई हो।

ईंट बिठाना (क्रिया) चुनाई में रद्दे के अंदर ईंट ठीक जमाना।

ईंट तेज करना (क्रिया) चुनाई में रद्दे के अंदर ईंट को जो किसी क़दर अंदर को हटी हुई हो, आगे को लाना ताकि दूसरी ईंटों के साथ एक ख़त में हो जाये। (ईंट को रद्दे की सीध से निकलती रखना।)

ईंट धमकना (क्रिया) चुनाई में ईंट का बावजह वज़न अपनी सतह से किसी क़दर नीचे को दब जाना। (ठोक कर नीचे करना।)

ईंट खींचना (क्रिया) चुनाई के रद्दे में से ईंट बाहर निकालना।

ईंट गलाना (क्रिया) चुनाई में दो ईंटों के दरमियान तंग जगह में ईंट फंसाना, जैसे–डाट के म्याना की चुनाई में।

ईंट मंदी करना (क्रिया) चुनाई में सीध से बाहर निकली हुई ईंट को अंदर के रुख करना, तेज करने की ज़िद।

बादामी पख़ (स्त्री) देखें पख़।

बादामी डाट (स्त्री) छः मास की डाट यानी दायरे के मुहीत़ के छँटे हिस्से की गोलाई की शक्ल की डाट, जिसका उठान बादाम के छिल्के से मुशाबहत की वज़ह से बादामी कहलाता है और यही वजह तस्मिया है। इस किस्म की डाट को बैज़वी डाट भी कहते हैं। **देखें** डाट।

बादरिया (बाद+रियाह) हवा या धुएं के निकलने को छत में बना हुआ मोखा, जो अ़मूमन खपरैलों या नीची छतों के मकानों में छत में बना दिया जाता है। **देखें** रौशनदान।

बादल गरज छत (स्त्री) आवाज़ गूँजने वाली छत गुंजीली छत।

बारा (पु0) रंदा या रुंदा ग़नीम को देखने या बंदूक चलाने को किला या फसील की दीवार में बना हुआ मोखा। **प्रयोग** मक़बरे की फ़सील में क़िले के तूर पर बुर्ज और बारे बने हुये हैं। (आसार–उस–सनादीद) (**देखें** रुंद रुंदा)

बार जा (पु0) खिड़की के आगे खुश नुमाई के लिये बना हुआ छोटा सा बरामदह, जो खिड़की की दहलीज़ को थोड़ा सा बढ़ाकर बनाया गया हो, सुराहीनुमा बने हुये रौशनदान का घूँघटनुमा बना हुआ झब्बा (आड़ या परवा) जैसा की लालकिला देहली की फसील़ में कहीं–कहीं बने हुए हैं। परौठा या परौंठा भी कहते हैं।

बारह दरी (स्त्री) चारो तरफ मेहराबदार कुशादा दरों वाली मुरब्बअ़ शक्ल की इमारत हर सम्त में कम से कम तीन–तीन कुशादा दर होते हैं। इसीलिए बारहदरी कहलाती है।

बाड़ा (पु0) अहाता, चार दिवारी, कटहरा। घर, मकान।

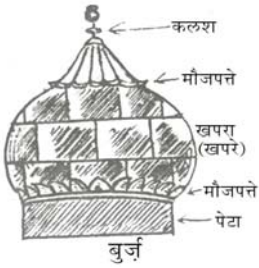

बोखल (स्त्री) देखें आंगन, सत घरा, डोरों के बंद करने का बाड़ा।

बालाखाना (पु0) देखें अट्टा, मकान की छत पर बना हुआ मकान, उपरौटा।

बालाई मंजिल (पु0) उपरौटा, **देखें** बला ख़ाना, अट्टा।

बुखार (पु0) चुनाई के रद्दों के दरमियान की झिरियां या खँदाने जो रद्दों की तह में भरपूर चूना या गारा न होने से खाली रह जायें **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

बुखारी (स्त्री) देखें कोल्की। बुखारी दरअस्ल पखवाई यानी दीवार के पाखे के अंदर ख़ानादारी का मामूली सामान रखने को बनाई हुई जगह का बिगाड़ा हुआ है, जो मुसलमान कारीगरों में ज़बान ज़द होकर आ़म फहेम हो गया और गँवारी ज़बान में बाखर, बुखार और बखारी कहलाने लगी। इसी तरह पाखे से पख़ बन गया है।

बदररु (स्त्री) देखें मोरी (मुहरी)

बदगुनिया (सिफत) खिलाफ–ए–ज़ाविया क़ाइमा **होना, करना** के साथ बोला जाता है।

बद गुनिया आसार (पु0) ऐसी दो दीवारें जिनका कोना ज़ाविया क़ाइमा न हो।

बदगुनिया इमारत (स्त्री) वह इमारत, कमरा, दालान, कोठरी वगैरह जिसके अंदरूनी या बैरुनी गोशे या कोई गोशा ज़ाविया क़ाइमा न हो–

बर आमदह (पु0) इमारत की रुकार का साइबान, जो इमारत की हैसियत के मुताबिक़ कुशादा और शानदार बनाया जाता है। **डालना** बरामदह तैयार करना, बनाना। **निकालना, छोड़ना, रखना** के साथ बोला जाता है। बर आमदह की जगह छोड़ना यानी जगह क़ायम करना। **खड़ा करना, तैयार करना**।

बुर्ज (पु0) गुम्बद, कुब्बा, शलजमी वज़अ़ की बनी हुई छत नेज़ वह पूरी इमारत जो गुम्बद के नीचे होती है। मजाज़न बुर्ज या गुम्बद कहलाती है। **प्रयोग** हुमायूँ के मक़बरे का बुर्ज फ़न–ए–तातीर कला का बेहतरीन नमूना है। **प्रयोग** आगरा के क़िले में समन बुर्ज, एक मशहूर इमारत है।

बुर्जी (स्त्री) बुर्ज की वज़अ़ की मगर उससे छोटी इमारत (**देखें** बुर्ज) (बुर्ज या गुम्बद की तरह बुर्जी रहने के क़ाबिल इमारत नहीं होती है, बल्कि बुर्ज की शक्ल की बनी हुई होने की वजह से बुर्जी कहलाती

है, जो किसी मीनार के सिरे पर बनी होती है या क़िले के दरवाज़े की दीवार पर बनाई जाती है।

बर्क़ रुबा (पु0) बिजली गिरने के सदमा से इमारत को महफ़ूज़ रखने के लिए आहनी सह शाख़ जो इमारत के सबसे बुलंद हिस्से की चोटी पर लगाया जाये और इसका सिलसिला ज़मीन से नीचे उतारा जाये।

बरोठा (बरौंठा) (पु0) खिड़की के सामने का छोटा बरामदह जो बौछार की रोक के लिए बना लिया जाये। **देखें** बारजा, बरामदह, मकान की रुकार, गुलाम गर्दिश, पेश दालान।

ब्रह्म स्थान (पु0) किसी पेशवा ब्राह्मण की यादगार में बनाई हुई इमारत, जिस तरह इमाम बाड़ा।

बसूली (स्त्री) ईंट काटने, छाँटने, का बसूले की वज़अ़ का मेअ़मार का अवज़ार **देखें** तस्वीर।

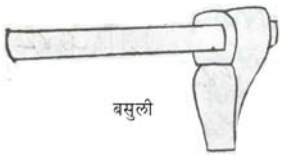

बग़ली इमारत (स्त्री) सदर इमारत से लगी हुई दायीं–बायीं ओर बनी हुई कोई इमारत।

बखारी (स्त्री) देखें बुखारी बाज़ गँवार बाखर और बखार भी कहते हैं।

बंद (पु0) देखें पुशता।

बंगड़ी (स्त्री) अद्धे की डाट के दहन में बनी हुई क़ौसो में से कोई एक क़ौस। **देखें** बगड़ीदार डाट।

बंगड़ीदार डाट (स्त्री) अदधे की किस्म की डाट जिसके दहन में क़ौस नुमा गोलाइयां बनी हुई हो। शुरुअ़ की क़ौस को जो आँगड़ेनुमा और साँप के फन से मुशाबा होती है, नाग कहते हैं और इसके नीचे की चुनाई जिसको डाट का पैर कहना चाहिये उस्तरी कहलाता है। जो लफ़्ज़ उस्तवार (सीधी चुनाई) का बिगड़ा हुआ है। **देखें** तस्वीर डाट। **सह बँगड़ी डाट** वह अद्धे की डाट जिसके दहन में तीन कौंसे बनी हों या जिसका दहन तीन–तीन कौसों से मुरक्कब हो। **सतबंगड़ी डाट** वह अद्धे की डाट जिसके दहन में इधर उधर तीन–तीन क़ौसें और म्याना में माँगदार क़ौस हो जिसको इस्तिलाहन चुग्ग कहते हैं। इस

किस्म की डाट आम तौर से शाहजहानी डाट के नाम से मौसूम जाती है। **देखें** डाट व तस्वीर डाट।

बंगलः (पु0) देखें पेशा छप्पर बंदी।

बुनियाद बुंयाद (स्त्री) नीव, असास, जड़।

आसार दीवार या मकान का पाया, जड़ जो सतह–ए–ज़मीन से नीचे एक मुकर्ररिह तक बनाई जाती है। बाज़ मुकाम पर जमूवाट या जमौट और नीवार भी कहते हैं। **उखेड़ना** मकान के पाये की चुनाई तोड़ना **बैठाना** बवज़ह ज़्यादती वज़न या नर्मी सतह–ए–ज़मीन का नीचे धंसना। **भरना** बुंयाद की चुनाई करना, बुनियाद चुनना **दबना, धमकना** बुनियाद के भराव में नुक़्स वाक़ेअ़ होना या नुक़्स आ जाना। **कायम करना, रखना, डालना** बुनियाद का निशान बनाना, जगह मुक़र्रर करना इबतिदा करना। **निकलना** दीवार या मकान के पाये चुनाई का ज़ाहिर होना। **खोदना** दीवार या मकान के पाये के लिए जगह बनाना। गड्ढा खोदना। **पड़ना** बुनियाद तैयार हो जाना, क़ायम हो जाना। **हिलना** बुनियाद में नुक़्स आ जाना, दब जाना, धस जाना।

बैठक (स्त्री) मुलाक़ात का कमरा **देखें** दीवान ख़ाना।

बैज़वी डाट (स्त्री) देखें बादामी डाट।

बैल (स्त्री) सीध–सीधा ख़त या लकीर। **लेना** चुनाई के रद्दों की सीध देखना, मिलाना। **रखना** चुनाई के रद्दों को सीध यानी ख़त–ए–मुस्तक़ीम में रखना। **होना, चलना** सीधी चुनाई करना, यानी चुनाई के रद्दों का एक सीध में जमाना। **प्रयोग** चुनाई में कोने की ईंट बेल के बाहर है। **प्रयोग** चुनाई बेल में हो रही है। **प्रयोग** चुनाई की बेल ले लो।

बेलनी मिनार (पु0) मुदव्वर, यानी गोल शक्ल का बना हुआ मीनार।

भराव (पु0) भरती–दीवार के आसार के बीच की भरती। मल्बा जो मकान के नशेब कुर्सी या गढ़े वगैरह के भरने को दरकार हो। **प्रयोग** कूड़े का भरावा अच्छा नहीं होता। **प्रयोग** मकान के सहन या कुर्सी में भराव की ज़रूरत है। **प्रयोग** दीवार के भराव में कच्ची ईंट भर दी जाये।

भरती (पु0) देखें भराव।

भम्बाक़ा (पु0) दीवार या छत का बेतरतीब टूटा हुआ मोखा। **प्रयोग** छत गिरने से दीवार में

भम्बाक़ा पड़ गया। **प्रयोग** तख़्ते निकलने से छत में भम्बाक़े पड़ गये

भीत (भिट) (स्त्री) दीवार, चार दीवारी।

क्हावत (तुक) *ईतर के घर तीतर,*
अंदर बाँधू या भीतर।

भितूरी (पु0) मकान का किराया, लगान, अराज़ी, सकनी, महसूल, नज़ूल, हाउस टैक्स।

भूल भुलय्या (स्त्री) पेंच दर पेंच रास्तों और मुताद्दिद दरवाजों की इमारत, जिसके अन्दर अजनबी शख्स जाने के बाद वापसी का रास्ता भूल जाये हुमायूँ बादशाह का मक़बरा में वाकेअ़ देहली में इस किस्म की इमारत बनी हुई है।

भंवरा (पु0) तलघर, तहख़ाना, आबादी से दूर आम निगाहों से ओझल, गैर मारूफ सूनसान मुकाम पर ज़ेर–ए–ज़मीन बनी हुई इमारत।

भीत (स्त्री) देखें दीवार।

पाटशाला या पाठशाला (पु0) मकतब, बच्चों की तालीम का इब्तिदाई मदरसा पाठ बमाने–नौजवान या नौ उम्र। (क़बिल–ए–तालीम बच्चे)

पाराबंदी (स्त्री) खुरंड–बड़े और भारी पत्थरों की खुश्क यानी बग़ैर चूने या गारे के बतौर पुश्ता बंदिश जो अमूमन पानी की मार के मौका पर नदी, नाले या तालाब के किनारों के पुश्ते पर की जाती है।

पारे की दीवार (स्त्री) बहुत बड़े और वज़नी पत्थरों की दीवार जो पहाड़ी जंगी क़िलों में बतौर फसील बनाई जाती है।

पाखा (पु0) दरवाज़े का बग़ली आसार या उसकी बगली दीवार जो दालान के दर की हद या दरवाज़े की चौखट के बाजू तक हो। दरवाज़े के बाजुओं की दीवार या दीवारें मामूल से छोटे दरवाज़े यानी खिड़की की बग़ली दीवार को पखवाई कहते हैं।

'पाखे पछैत सो रहे छप्पर फिसल पड़ा' **(नज़ीर)**

प्रयोग दरवाज़े के पाखे चुने जा रहे हैं। खिड़की की पखवाईयां तैयार हो गईं।

पान (पु0) मेअमारी इस्तिलाह में इंच का 1/3 या 1/4 हिस्सा जो गालिबन पाव से पान हो गया है। **प्रयोग** रद्दों के दरमियान पान भर चूना दिया जाये।

पाये पेशानी या पेशानी (स्त्री) दीवार की अस्तरकारी में खुशनुमाई के लिये, मुस्ततील, मरबअ़ या बैज़वी शक्ल के हौदक के नमूने पर बने हुये नक़्श–जब यह नक़्श दीवार के सिरे पर सिर्फ तूल में बने होते हैं तो पेशानी कहलाती है, और जब तूल और बुलंदी में बने होते हैं, तो पाये पेशानी के नाम से मौसूम किए जाते हैं। पत्थर में इस काम के बेहतरीन नमूने बनाये जाते हैं। (तस्वीर के लिये **देखें** पेशा–ए–संगतराशी लफ़्ज़ मरग़ोल)

पाया (पु0) देखें बुनियाद, **भरना, खोदना, रखना** के साथ बोला जाता है।

पुताई (स्त्री) देखें पोतना।

पट (स्त्री) घुमेरी ज़ीने की सीढ़ी, **देखें** घुमेरी ज़ीना।

पटाव (पु0) दरवाज़े के सिरे को ढ़कने या पाटने का सामान। **प्रयोग** पत्थर के मुक़ाबले में लकड़ी का पटाव ज़्यादा मज़बूत और देरपा होता है। **रखना और डालना** के साथ बोला जाता है।

पटाव की डाट (स्त्री) देखें मुस्तक़ीम डाट।

पटदार रौशन दान (पु0) देखें रौशनदान।

पटका (पु0) ईंट गारे की चुनाई के चंद रद्दो के दरमियान रेख़ते का रद्दा, जो चुनाई की मज़बूती के लिये चंद रद्दो के बाद लगाया जाता है **भरना, चुनना** के साथ बोला जाता है।

पटवां दरवाज़ा (पु0) वह दरवाज़ा जिसके सिरे को बजाये डाट के पटाव डाल कर बंद किया हो।

पुचारा (पु0) देखें पोता।

पुचारी (स्त्री) देखें कूंची।

पचदरा (पु0) पांच मेहराबों का दालान, जैसे–सहदरा।

पचदरा दालान (पु0) पांच दर का दालान। **देखें** दालान।

पच दुवार (स्त्री) पांच दर या दरवाज़ों की इमारत जैसे–पचदरा या पचदरा दालान।

पिछली गेह (स्त्री) देखें गेह।

पिछैत (स्त्री) इमारत का पिछला रुख या पिछली दीवार यानी चेहरा इमारत की पुश्ता।

पाखे पिछैत सो रहे छप्पर फिसल पड़ा–(नज़ीर)

पिछैत की दीवार (स्त्री) इमारत की पुश्त की दीवार।

पख़ (स्त्री) पाखे का कोई एक ज़िला रुख या पहलू इस्तिलाह में पख़ कहलाता है, जो दरअसल पाखे के इस्म तस्ग़ीर पख से पख़ हो गया है जिससे पाखे का कोई एक रुख़ या जिला मुराद होता है।

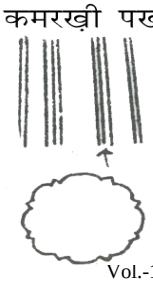

संगतराशों की इस्तिलाह में सुतून या लाट के पत्थर के पहलू को पख़ कहते हैं, जिसके किनारों की तरह तरह से तराश कर खुशनुमा मुदव्वर शक्ल बनाते हैं। **मारना** पख़ के किनारो को हस्बे ज़रूरत गोल या चपटा बनाना। **कमरख़ी पख़** मीनार या सुतून के पाख़े की कमरख़ (एक फल का नाम) के फल की वज़अ़ पर तराश जो मुसल्लसनुमा मखरूती शक्ल का होता है और यही वजह तस्मिया है। **बादामी पख़** बादाम के खोल के मानिंद क़ौस नुमा तराश की पख़ जैसा कि आ़म तौर से संगीन सुतून पर बनी होती है।

पुख़्ता छत (स्त्री) रेख़्ते की छत चूने कंकर की तह डाल कर तैयार की हुई छत।

पुरा (पु0) मुहल्ला सरबस्ता–सिलसिला मकानात (सतधरा, नौ घरा)

परनाला (पु0) छत के पानी के निकास की मोरी–बनावट के लेहाज़ से इस के मुख्तलिफ हस्बे ज़ेल नाम है। **जंगी परनाला** वह परनाला जिसके मुंह पर लकड़ी, लोहे या मिट्टी का फुट डेढ़ फुट लम्बा नल्वा बाहर को निकला हुआ, पानी के दीवार से हट कर गिरने को लगा हुआ हो। **खस्सी परनाला** झरना वह परनाला जिस के मुंह पर कोई नलवा न हो, और उसका पानी दीवार के सहारे उतरे जिस के लिये दीवार पर अस्तरकारी का पुख़्ता रास्ता बना दिया जाता है। **देखें** तस्वीर। **कुल्फी दार परनाला** वह परनाला जिस के पानी के निकास के लिये दीवार के आसार बंद नाली बनी हो, जिसकी जगह अब लोहे का परनाला लगाया जाता है।

परेता या फरेता (पु0) देखें फिरका (पेशा–ए–नज्जारी पृ0)

पस्त डाट (स्त्री) अद्धे की क़िस्म की बे क़ादिह गोलाई की डाट, जिसकी गोलाई तंगी के बवजह सही न हो, किसी क़दर फैली हो **देखें** डाट तस्वीर डाट।

पन साल (पु0) सावनी, फर्श सतहे की हमवारी और ढ़ाल देखने का आला **लगाना, देखना** के साथ बोला जाता है।

पुश्त (पु0) बंद, दो साही, बुलंद दीवार की झोंक रोकने के लिये उस की पुश्त से मिलाकर सलामीदार (ढ़ालू) चुना हुआ पाखा या पाया। **बांधना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

दो साही (स्त्री) पुश्तः दीवार जो उसकी झोक की हिफाज़त को चुना गया हो। **देखें** पुश्ता।

पलस्तर (पु0) प्लास्टर (अंग्रेजी) अस्तरकारी, छपाई, **देखें** अस्तरकारी।

पखवाई (स्त्री) देखें पाखा और पख़।

पखवाई डाट (स्त्री) वह डाट जो पाखों के जोड़ पर चुनाई का कोता काटने और इसकी तरकीब बदलने के लिये लगाई जाये, गुम्बद की दीवारों के कोनों पर गोलाई पैदा करने को मुख्तलिफ किस्म की पखवाई डाटें लगाई जाती हैं। **देखें** डाट।

पोता (पु0) पुचारा दीवार पर सफेदी वगैरह फेरने का बान या सन का लच्छा, कपड़े की साफी, फेरना।

पोत्ना (क्रिया) क़लई करना, आबक पाशी करना, सफेदी, खरिया या किसी क़िस्म के रंग के पानी से दीवारों को उजलाना।

पोला आसार (पु0) वह नींव या बुनियाद जिस का भराव या चुनाई खूब ठोस और जमौट न हो और बोझ पड़ने से नीचे दबे, जिस तरह पोली ज़मीन वज़न से दबती है।

पोली नीव (स्त्री) देखें पोला आसार।

पेटा बुर्ज (पु0) हाशिया गुम्बद, गुम्बद की चुनाई का निचला हिस्सा जो एक मुक़रिरह हद तक उस्तवार यानी सीधा उठवा (उमूदी) चुना जाता है।

पेंश (पु0) इमारत का चेहरा, रूकार, **देखें** रूकार।

पेश ताक़ (पु0) मेहराब, मस्जिद की पिछैत के वस्त में इमाम के खड़े होने को बनी हुई गुम्बदी मेहराब इस्तिलाहन पेशताक़ कहलाती है।

पैकार (स्त्री) दरवाज़ों की चौखट की बुलंदी तक यानी सतहे फ़र्श से क़रीब 6 या 7 फुट ऊंचा इमारत की चुनाई का तैयार शुदा काम। **प्रयोग** पैकार तैयार हो गयी है अब दरवाज़ों के ऊपर का काम शुरु होगा।

फाटक (पु0) किसी बड़ी इमारत, महल, मुहल्ले या क़िला वगैरह में दाखिले का बहुत कुशादह बुलन्द दरवाज़ा जो अमूमन दुहरा और ऊपर से पटा हुआ होता है। मामूल से छोटे तंग और पस्त फाटक को जो बतौर ड्योढ़ी हो छत्ता कहते हैं। मजाज़न हर दरवाज़ह जो मामूल से ज़्यादा कुशादह हो–शारेह

आम के दोनों तरफ गुज़र बंद करने को जैसे रेल का फाटक।

फड़ (स्त्री) नींव या बुनियाद की चुनाई का सतहे ज़मीन पर निशान जहाँ से दीवारों की चुनाई शुरु होती है। **निकलना, साफ करना** के साथ बोला जाता है।

फक्सा (पु0) देखें पेशा बेलदारी।

ताब्दान (पु0) देखें रौशनदान।

हमारे दिल में है यूं उसके तीर का रौज़न।
अँधेरे घर में है जिस तरह ताब्दाँ होता।।

ताज (पु0) देखें उथली डाट। उथली डाट के पाखों से किसी कदर बाहर निकले हुये हिस्से को जिस पर खुशनुमाई के लिये किसी किस्म की मुनब्बतकारी भी बनाई जाती है, इस्तिलाहन ताज कहते हैं।

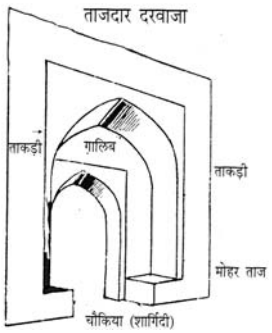

ताजदार दरवाज़ा (पु0) वह दरवाज़ा जिसके पेश यानी चेहरे पर उथलवाँ डाट बनी हो और पाखों में चौकियां। **देखें** उथलवा डाट। ताजदार मेहराब, सजीली कमान।

ताजदार दीवार (पु0) दरवाज़े की मुंडेर के बीच में और सिरों पर बने हुये गुलदस्ते, या इस किस्म का जदीद वज़अ का कोई और खुशनुमा बना हुआ नमूना।

ताक्ड़ी (स्त्री) ताजदार दरवाज़े के ताज के पाखे में बना हुआ छोटा सा त़ाक़ या उसका निशान दोनों पाखों में एक–एक होता है। **देखें** ताजदार दरवाज़ा।

तिजाई (स्त्री) देखें कोपरी।

तिरपोलिया (पु0) संस्कृत त्रिगोपुरा बमाने तीन दरवाज़ों का घर यानी सहदरा या फाटक तीन दरी कमान (मेहराब) या तीन दरा फाटक **देखें** दर और दरा। आगरा के एक मुहल्ले का नाम।

तसू (पु0) इमारती गज़ का चौबीसवां हिस्सा 1/1/3 इंच **देखें** इमारती गज़।

नल–धर (पु0) भंवरा, तहख़ाना, ज़मींदोज़ बना हुआ घर। सतहे ज़मीन पर बनी हुई इमारत के नीचे बनी हुई इमारत।

तलैटी (स्त्री) देखें तलैचा।

तलैचा (पु0) तलैटी–छत से नीचे का कुल तामीरी काम। छत की दीवारें। **प्रयोग** तलैचा तैयार हो गया है। सिर्फ छत पड़नी बाक़ी है।

तनब्बी (स्त्री) हैदराबाद (दकन) में छोटी किस्म के दरवाज़े को जो बतौर खिड़की बनाया जाये– तनब्बी कहते हैं।

तूरन (स्त्री) ताजदार मेहराब या दरवाज़ा, सजीली कमान **देखें** ताजदार दरवाज़ा।

तोड़ा पट्टी (स्त्री) चुनाई में एक ईट की लम्बान और दूसरी की चौड़ान मिलाकर बना हुआ रद्दा।

तोड़े पट्टी की चुनाई (स्त्री) तोड़ा पट्टी के रद्दों की चुनाई **देखें** तोड़ा पट्टी–चुनाई की मुख्तलिफ क़िस्मों के लिये **देखें** लफ्ज़ चुनाई।

तिहाई की डाट (स्त्री) गोल यानी अद्धे की डाट की किस्म जिसकी गोलाई दायरे की एक तिहाई 1/3 क़ौस के बराबर हो। **देखें** डाट व तस्वीर डाट पृ0।

तह बंगड़ी रौशनदान (पु0) तीन मिली हुई क़ौसो की शक्ल का बना हुआ रौशनदान। **देखें** रौशन दान।

तहख़ाना (पु0) भौंरा, **देखें** तल घर।

तहदरी (स्त्री) देखें सहदरी।

तह दरज़ी (स्त्री) फर्श या छत की सतह की दुरुस्ती या तैयारी, तह बनाना असल लफ्ज़ तहदुरुस्ती बिगड़ कर तहदरज़ी हो गया है।

तह डालना (क्रिया) छत या फर्श की सतह को चूने से पुख़्ता करना (चूने की सतह तैयार करना)।

तह लगाना (क्रिया) देखें तह डालना।

तह मिलाना (क्रिया) फर्श या छत की सतह का ढाल ठीक करना, परनाले की तरफ तदरीजी उतार बनाना।

तीख़ (स्त्री) रैंच, तिरछापन, बदगुनिया, कलीनुमा टुकड़ा वह अराज़ी जो नक़्श–ए–इमारत से खारिज हो (असल लफ्ज़ तीखा से तीख़ हो गया है।) **पड़ना, आना** के साथ बोला जाता है।

तीख़ी खरंजा (पु0) खजूर की शाख़ की पत्तियों की वज़अ पर खड़ी ईंट जमाकर तैयार किया हुआ फर्श, खरंजे की मुख्तलिफ किस्मों के नामों के लिये **देखें** लफ्ज़ खरंजा।

तिरकश चुनाई (स्त्री) वह चुनाई जिसके रद्दे बीच में से अन्दर के रुख दबे हुये और सिरों पर से निकले

हुये हो जिसकी वजह से उसके बीच में खम पड़ता हो **देखें** चुनाई।

तेज़ चुनाई (स्त्री) बेल यानी ख़त–ए–मुस्तक़ीम से किसी क़दर आगे को निकली हुई चुनाई **देखें** चुनाई।

तेग़ा (पु0) चुनाई का पैवंद, जो दरवाज़े या दीवार के बड़े मोखों को बंद करने के लिये लगाया जाये। **लगाना, चुनना, करना** दरवाज़े या दीवार के बड़े मोखे को चुनाई से बंद करना। **प्रयोग** सड़क की तरफ के दरवाज़े में तीग़ा लगा दिया है। **खोलना, तोड़ना, निकालना** तीग़ा न रखना, हटा देना। **प्रयोग** बाग़ की तरफ के दरवाज़े का तीग़ा तोड़ दिया है।

थाक–(थूक) (पु0, स्त्री) ढ़ोई–दो मुख्तलिफ शहरों या इलाक़ों की सरहद पर बना हुआ पुख्ता मीनार, जो इनके हुदूद की तफ़रीक़ ज़ाहिर करने को बतौर अलामत बना दिया जाये।

थाना (पु0) देखें स्थाल (स्थान)

थानियत (पु0) थाने में रहने वाला, चौकीदार, मुहाफ़िज़।

थापी (स्त्री) अस्तरकारी यानी दीवारों पर लगाई हुई चूने की तह को

थापी (कोबा)

थपकने का चोबी औज़ार, फारसी में कोबा कहलाता है। जो थापी से बड़ा होता है। उर्दू में बड़ी और वज़नी थापी को जो सतहे फर्श कूटने के काम आयें, कोबा कहते हैं।

थोपना (क्रिया) कच्ची दीवारों के खंदानों में गीली मिट्टी (गारा) भरना। मिट्टी की दीवार को छापना।

थोती ज़मीन (स्त्री) देखें पोली ज़मीन।

टिकती/तिकटी (स्त्री) देखें सावनी।

टीप (स्त्री) ईंट के रद्दे के जोड़ों की दर्ज़बंदी अस्तरकारी न करने की सूरत में, चुनाई के रद्दों या पत्थर के फर्श की दर्ज़ों को बारीक चूने या सीमेंट से भर कर बराबर कर देना, टीप कहलाता है। इसके तैयारी के मुख्तलिफ तरीक़ा–ए–हस्बे ज़ेल नाम है। **करना** रद्दों की दर्ज़ों में चूना वगैरह भर कर उनको हमवार करना। **डंडेदार टीप** रद्दों की दर्ज़ों में मसाला भर कर ऊपर से बराबर और किनारे काट कर खत–ए–मुस्तक़ीम की शक्ल में बनाना–इसका दूसरा नाम मिलन की टीप है। **कटवा टीप** डंडेदार टीप जिस की दर्ज़ पर कटाव यानी धारी का निशान बनाया जाये। **लिस्वां टीप** मामूली टीप जिसमें रद्दे के दरमियान के मसाले को फैलाकर दर्ज़ छिपा दी जाये।

ठाड़ (पु0) घुमेरी ज़ीना का मर्कज़ी हिस्सा जो चोबी या आहनी थम होता है, जिसके चारों तरफ पट लगे होते हैं। **देखें** जीना।

ठाड़ पट (स्त्री) ज़ीने की सीढ़ी की बुलन्दी को ठाड़ और उसके ऊपर पैर रखने की मुसत्तह जगह पट कहलाती है और दोनों को मिलाकर ठाड़ पट कहते हैं। **देखें** जीना।

ठस्सा (पु0) दलक अस्तरकारी में फूलबूटे बनाने का क़लम की शक्ल का बना हुआ आहनी मुँह का औज़ार तस्वीर।

ठोकर (स्त्री) देखें ज़ीना।

सम्मन बुर्ज़ (पु0) गुंम्बदी छत की हश्त[1] पहल बनी हुई इमारत आगरा के क़िले में उसका बेहतरीन नमूना बना हुआ हैं। ([1]आठ)

अस्तरकारी जाल (पु0) अस्तकारी की बारीक दर्ज़ें जो अस्तरकारी खुश्क होने से सतह पर रगों[1] की तरह पैदा हो जाती हैं। **पड़ना** के साथ बोला जाता है। ([1]नसों)

जाली की चुनाई (स्त्री) हवा और रौशनी की आमद के लिए कटवां, रद्दों की चुनाई जो जाली की शक्ल बन जाये। चुनाई की मुख़्तलिफ[1] क़िस्मों के नामों के लिए **देखें** लफ्ज़ चुनाई। ([1]विभिन्न प्रकार)

जट करना (क्रिया) देखें घर भरौनी।

जिलौ ख़ाना (पु0) शाही महलात में उमरा[1] व अरकान–ए–सलतनत[2] से मुलाक़ात का मकान जो अ़मूमन[3] हमामख़ाना[4] से मुत्तसिल[5] होता है, और जहाँ खास–खास लोग ही बारयाब होते हैं। ([1]अमीरों, [2]शासकीय सदस्य, [3]प्रायः, [4]स्नानागार, [5]सम्बद्ध)

जमवाट (जमौट) (स्त्री) देखें नींव, बुनियाद

जवाबी इमारत (स्त्री) इमारत के मुक़ाबिल[1] उसी वज़अ़[2] क़तअ़ की बनी हुई दूसरी इमारत। एक ही नमूने की आमने–सामने बनी हुई दो इमारतें। ([1]सामने का, [2]ढ़ंक एवं आकार)

जवाबी काम (पु0) किसी इमारत में एक ही क़िस्म[1] की आमने–सामने बनी हुई सन्अ़त्कारी[2]। ([1]प्रकार, [2]कारीगरी)

जंगी परनाला (पु0) देखें परनाला।

जुनूब रूया (रूयः) इमारत (स्त्री) वह इमारत जिसका सदर[1] रूख़ जुनूब[2] की तरफ हो। ([1]मुख्य पृष्ट, [2]दक्षिण)

जीबी चुनाई (स्त्री) कच्ची पक्की चुनाई जिसकी छल यानी सामने के रद्दे चूने से और अन्दर भराव गारे यानी मिट्‌टी से चुना जाये। इसका दूसरा नाम जैनी चुनाई है–चुनाई के मुख़्तलिफ[1] किस्मों[2] के नामों के लिये **देखें** लफ्ज़ चुनाई। पे0 ([1]विभिन्न, [2]प्रकार)

जैनी चुनाई (स्त्री) देखें जीबी चुनाई।

झरप (स्त्री) दालान के बगली पाखें का मुंह (सिरे का रूख) जिससे मिलाकर अलैन (एक रूखा बना हुआ संगीन सुतून) खड़ी की जीती है। मजाज़न[1] अलैन को भी कहते हैं। **॒मारना** झरप की कोरें किनारे काट कर गोल या चपटे करना। ([1]लक्षितार्थ)

झरोका (पु0) रुंद क़िले या महल की दीवार में मैदान या दरिया की जानिब[1] सैर व तफ़रीह के लिए बनी हुई खिड़की या छोटा दरीचा। ([1]ओर)

राम झरोके बैठ के सबका मुजरा ले।
जैसी जाकी चाकरी वैसा वाको देय।।

झूमरी (स्त्री) अस्तरकारी के चूने को ठोकने का थापी की वज़अ़[1] का चोबी[2] औज़ार। ([1]आकार, [2]लकड़ी)

झड़प (स्त्री) पखवाई दरवाज़े के पाखे की चौड़ान यानी दरवाज़े के दहन[1] के पाखे की चौड़ान जिससे मिलाकर चौखट या अलैन खड़ी की जाय। **देखें** झरप **॒मारना** दरवाज़े का किवाड़ पूरा खुलने को झड़प तिरछी (किवाड़) बनाना। ([1]मुँह)

झिल्‌मिली की चुनाई (स्त्री) झिल्‌मिली की वज़अ़[1] की चुनाई। **देखें** झिल्‌मिली, पेशा संग तराशी। पृ0 ([1]आकार–प्रकार)

झिल्‌मिलीदार मेहराब (स्त्री) वह मेहराब जिसके दहन में चोबी[1] या संगीन[2] झिल्‌मिली बनी हो। ([1]लकड़ी, [2]पत्थर)

झूत (स्त्री) आपचक तंग क़त्‌आ[1] अराज़ी जो नक़्शा–ए–इमारत से ख़ारिज[2] हो और जिसमें कोई बड़ी तामीर[3] न हो सके। या इमारत के दो ज़िलओं[4] के दरमियान[5] की तंग क़त्‌आ़ अराज़ी। **प्रयोग** मकान का ज़ीना झूत में बना हुआ है। **प्रयोग** झूत में पाख़ाना[6] और ग़ुस्लख़ाना[7] बना हुआ है। ([1]भू–भाग, [2]अलग, [3]निर्माण, [4]भाग, [5]मध्य, [6]शौचालय, [7]स्नानागार)

चालीचुनाई (स्त्री) सीधी–साधी मामूली और मुक़र्रिरह[1] तरीक़ा की चुनाई। चुनाई के मुख़्तलिफ़[2] नामों के लिए **देखें** चुनाई। ([1]निश्चित, [2]विभिन्न)

चाँदनी या चान्नी (स्त्री) वस्‌त[1] हिन्द और दकन के बाज़[2] इलाकों में छत की बालाई[3] सतह को इस्‌तिलाहन[4] चाँदनी (चान्नी) कहते हैं। **प्रयोग** चाँदनी झाड़कर पानी छिड़क दो। **प्रयोग** बच्चे चान्नी पर कूद रहे हैं। यानी भागदौड़ कर रहे हैं। ([1]मध्य, [2]कुछ, [3]ऊपरी, [4]परिभाषन)

चाउड़ी (स्त्री) चौपाल गाँव या क़स्बा वालों का मुश्‌तरिका[1] मकान, पंचायती इमारत जिसमें पंचायत और दूसरे मुआ़मलाते–क़ज़ीया[2] अंजाम पायें। ([1]जिस पर सभी का अधिकार हो, [2]विवादास्पद)

चबूतरा (पु0) अंगनाई या सहन का बुलंद बना हुआ हिस्सा जो मकान की गुरसी के बराबर ऊँचा और सदर इमारत के फर्श से मिला हुआ हो इसको सहन–ए–चबूतरा भी कहते हैं। संस्कृत चतवरा ;बैंजअंतंद्ध यानी सतह ज़मीन से किसी क़दर ऊँची मुरबअ़[1] शक्‌ल[2] की बनी हुई सतह। **॒छोड़ना, रखना** ([1]चौकोर, [2]आकृति)

चरीला (पु0) (चार+ईला) चार सुराख़ वाला रौशनदान **देखें** चौगुला रौशनदान।

चश्मा (पु0) छत की कड़ियों का दरमियानी[1] फ़ास्‌ला[2] जो सिरों पर चुनाई से पुर[3] कर दिया जाता है। **॒भरना** दो कड़ियों के दरमियानी फ़ासले में चुनाई करना। **प्रयोग** कड़ियों के चश्मों में अबाबीलों ने घर बना लिए हैं। **प्रयोग** दालान का हर एक दर। **प्रयोग** बड़ी मस्जिदों के दालान अ़मूमन पाँच चश्मों के बनाये जाते हैं। ([1]मध्य, [2]दूरी, [3]भर)

चफ़्ती (स्त्री) देखें मिस्तर।

चफ़्श–दीवार (स्त्री) वह दो दीवारें जिनकी पिछैत (पुश्‌त) बाहम[1] मिली हुई हों। ([1]एक दूसरे में)

चुग्गा (पु0) देखें बंगड़ीदार डाट और आमनी चुग्गे की डाट।

चुग्गे की डाट (स्त्री) वह डाट जिसका वस्‌ती[1] हिस्सा माँग नुमा यानी ऊपर को उठा हुआ नुकीला हो, बरख़िलाफ़ अद्‌धे की डाट के जो निस्‌फ़[2] दायरे की शक्‌ल की होती है। इसको आमनी की डाट भी कहते

हैं जिसकी वजह–तसमिया[3] उल्टे आम की शक्ल से मुशाबहत्[4] है। **देखें** डाट व तस्वीर डाट। ([1]बीच का, [2]आधे, [3]नामकरण का कारण, [4]मिलता जुलता)

चुनाई (स्त्री) दीवार की तैयारी के लिए ईट या गढ़े हुए पत्थर की चूने या गारे के साथ तले ऊपर तह बतह बाक़ाअ़िदा[1] बंदिश। **लगाना** चुनाई का काम शुरू करना। चुनाई की हर तह को रद्दा और रद्दों के घटे बढ़े सिरों को डाड़ा (डाढ़ा) कहते हैं। चुनाई के मुख़्तलिफ़[2] क़िस्मों[3] के नाम जिनकी तश्रीह[4] अल्फाज़[5] के सिलसिले में की गयी, हस्बे[6] ज़ेल हैं।

1. एक छली चुनाई (एक दौरिया चुनाई) **2.** तीर कश चुनाई **3.** तेज़ चुनाई **4.** पाराबंदी (खुरंड) **5.**तोड़े पट्टी की चुनाई **6.** जाली की चुनाई **7.** जीबी चुनाई (जैनी चुनाई) **8.** झिलमिली की चुनाई **9.** चाली चुनाई **10.** छल्ले की चुनाई **11.** दर्ज़कट चुनाई (मिलन की चुनाई) **12.** रपटवाँ चुनाई (सलामी दार चुनाई) **13.** रेख़ते की चुनाई **14.** गुलदार चुनाई **15.** गिली चुनाई **16.** गंगा चुनाई **17.** गंगा जमुनी चुनाई **18.** गमड़ी चुनाई **19.**गूँधे की चुनाई। ([1]नियमानुसार, [2]विभिन्न, [3]प्रकार, [4]व्याख्या, [5]शब्दों, [6]निम्नांकित)

चन्दरस (पु0) एक लैसदार[1] मुरक्कब जो अहक पाशी यानी क़लई[2] करने में चिपकाव के लिए इस्तेमाल किया जाता है। ([1]लुग़दी [2]निकिल)

चंगेर (स्त्री) सदर ताक़ के लब[1] के नीचे गुलदस्ता की शक्ल की बनी हुई मुनब्बतकारी[2]। **देखें** सदरताक़। ([1]होंठ, [2]बेलबूटे)

चोब (स्त्री) इमारत के किसी तामीर[1] शुदह हिस्से का मस्नूअ़ी[2] जवाब, जो किसी मुक़ाबिल[3] की दीवार पर बतौर जवाबी इमारत बना दिया जाय। मसलन[4] एक जानिब[5] सहदरा है उसके मुकाबिल सहदरा की गुनजाइश नहीं है। सिर्फ दीवार है तो सहदरा की मस्नूअ़ी शक्ल बनाकर जवाब दिखा दिया जायेगा। ([1]निर्मित, [2]नक़ली, [3]सामने, [4]उदाहरणार्थ, [5]तरफ)

चौबारा/चौबाला (पु0) चौमंज़िला इमारत (चौ+बार) बालाई[1] इमारत की चौथी मंज़िल मजाज़न[2] बालाख़ाना[3] मुराद होता है। ([1]ऊपरी, [2]लक्षितार्थ, [3]ऊपरी मंजिल)

मसल[1]–मोरी की ईंट चौबारे चढ़ी। ([1]कहावत)

चौबंगढ़ी रौशनदान (पु0) चौगुला रौशनदान। **देखें** रौशनदान

चोबीछत (स्त्री) देखें कड़ी तख़्ते की छत।

चौपाल/चौपाड़ (स्त्री) देखें चादड़ी।

चौपड़ी खरंजा (पु0) छोटे मुरब्बओं[1] की शक्ल में बना हुआ ईंट का बना हुआ फर्श। खरंजें की मुख़्तलिफ़[2] क़िस्मों[3] के नामों के लिए **देखें** खरंजा। ([1]चौकोर, [2]विभिन्न, [3]प्रकार)

चौफुल्ला रौशनदान (पु0) देखें चरीला या चौबंगड़ी रौशनदान।

चोरख़ाना (पु0) दीवार के आसार, छत या ज़ेर–ए–फर्श[1] सामान या नक़दी छिपानें की पोशीदा[2] बनी हुई जगह। ([1]फर्श के नीचे, [2]गुप्त)

चोरदरवाज़ा (पु0) पोशीदा[1] या छिपवां रास्ता जो अ़वाम की नज़र से ओझल और नामालूम हो। ([1]गुप्त)

चौरस ज़मीन (स्त्री) (चौ+रस) चारों सम्त यानी सब तरफ से मुसत्तह[1] व हमवार[2] क़तअ़–ए–अ़राज़ी[3] जिसमें भराव और कटाव की ज़ुरूरत न हो। ([1]समतल, [2]फैला, [3]ऊ–षग)

चौक (पु0) देखें आँगन।

चौकी (स्त्री) ताजदार दरवाज़े के ताज के हर पाखे में बनी हुई एक–एक संगी[1] निशस्त[2], इस्तिलाहन[3] चौकी जमअ़[4] चौकियां कहलाती हैं। **देखें** ताजदार दरवाजा (शागिरदी)। ([1]पत्थर, [2]चौकी, [3]तकनीकि शब्द, [4]बहुवचन)

चौखंडी (स्त्री) चार सुतूनों[1] पर मुरब्बअ़[2] शक्ल में बना हुआ औसत दर्जा का गुम्बद जो अमूमन[3] क़िला या किसी बड़ी इमारत[4] की फ़सील[5] के कोनों पर बनाये जाते हैं। ([1]ख़म्बों, [2]चौकोर [3]प्रायः [4]ष्वन [5]चारदीवारी)

चूना फेरना (क्रिया) सफेदी फेरना, सफेदी की पुताई करना।

चूना फैलाना (क्रिया) चूना डालना, छत या फर्श की सतह पर चूनाकारी करना, चूने की तह लगाना।

चूना छापना (क्रिया) अस्तरकारी करना **देखें** अस्तरकारी।

चूना डालना (क्रिया) देखें चूना फेरना और चूना फैलाना।

चौसठ खम्बा (पु0) चौसठ सुतूनों पर 32 गज़ मुरब्बअ़ बनी हुई इमारत जिसमें 4–4 गज़ के चौसठ मुरब्बअ़ और चारों सम्त में 8–8 दर होते हैं, देहली में हज़रत निज़ाम–उद–दीन की दरगाह के पास शाही मक़बरा के तौर पर संगमरमर का एक चौसठ खम्बा बना हुआ है।

चेहरा–ए–इमारत (पु0) पेशा **देखें** रूकार।

चेहरा बनाना (क्रिया) इमारत की रूकार यानी सामने का खुशनुमा हिस्सा बनाना।

चहका (पु0) सतह फर्श पर मसाले में जमाई हुई ईंटों की तह **लगाना** के साथ बोला जाता है।

चीरना (पु0) अस्तरकारी में बने हुए फूल बूटों को साफ करने और कोर, किनारा जमाने और थपकने का थापी की वज़अ[1] का छोटा औज़ार। **देखें** थापी ([1]आकार)

चीनीकारी (स्त्री) काशीकारी। इमारत की अस्तरकारी पर चीनी का काम बनाना। **प्रयोग** आगरा में अल्लामा अफ़ज़ल खान का मक़बरा काशीकार बना हुआ है और चीनी के रौज़ा[1] के नाम से मशहूर है। ([1]समाधि स्थल)

छत (स्त्री) धाबा, कमरे, दालान या दीगर[1] इमारत का पटाव, छावन या पोशिश[2]। छत की मुख़्तलिफ़[3] क़िस्मों[4] की इस्तिलाही[5] नाम, जिनकी तश्रीह[6] अल्फ़ाज़[7] के सिलसिले में की गई है हस्बे[8] ज़ेल हैं। **1.** आवाज़ बन्द छत (गुंग छत)। **2.** बादल गरज छत। **3.** पुख़्ता छत। **4.** दो चिल्ला छत (दो पलिया)। **5.**कच्ची छत। **6.** चोबी छत (कड़ी तख़्ते की छत)। **7.** लदाव की छत (डाट की छत)। **8.** कश्ती की छत। **पाटना, डालना, बनाना। उतारना, निकालना, गिराना, तोड़ना** के साथ बोला जाता है। ([1]दूसरी, [2]कवर, [3]विभिन्न, [4]प्रकार, [5]तकनीकी, [6]व्याख्या, [7]शब्द, [8]निम्नलिखित)

छतरी (स्त्री) चौखंडी की वज़अ पर खुशनुमा बनी हुई बुर्जी जो किसी बड़े हिन्दू राजा या सरदार की हड्डियों के मदफ़न[1] पर बतौर यादगार बना दी जाए। जैसे मुसलमानों में मक़बरा बनाया जाता है। **देखें** चौखंडी नवाहे[2] देहली में एक चौखंडी नीली छतरी के नाम से मशहूर है। ([1]कब्र, [2]आसपास)

छिपाई (स्त्री) लिपाई, **देखें** अस्तरकारी।

छत्ता (छत्तः) (पु0), देखें फाटक। भिड़ या शहद की मक्खियों का घर। **प्रयोग** जाँनिसार खाँ के छत्ते से फ़ैज़ बाज़ार तक एक वीराना हो गया है।

छज्जा (पु0) इमारत के चेहरे के ऊपर बारिश और धूप से रूकार[1] की हिफ़ाज़त को छत का बक़द्र–ए–ज़रूरत[2] आगे को निकला हुआ हिस्सा। इसकी दो हस्बे[3] ज़ेल क़िस्में[4] होती हैं। **चोबी छज्जा** यह कड़ी तख्ते का बिलकुल छत की वज़अ[5] पर बक़द्र–ए–ज़रूरत आगे को निकला हुआ होता है। **संगीन छज्जा** यह पत्थर की सिलों को बकद्र–ए–ज़रूरत आगे को ढालवाँ निकली हुई जमाकर तैयार किया जाता है और अमूमन[6] पुख़्ता और संगीन[7] इमारतों में बनाया जाता है। **छज्जा तोड़ेदार** वह संगीन छज्जा जिसकी सिलों के नीचे संगीन तोड़े गये हों यानी तोड़ों पर क़ायम[8] हो। ([1]मुख्य पृष्ठ, [2]आवश्यकतानुसार, [3]निम्नलिखित, [4]प्रकार, [5]आकार, [6]प्रायः, [7]पत्थर)

छजली (स्त्री) मामूल[1] से छोटा संगीन[2] छज्जा। ([1]परम्परा, [2]पत्थर)

छल (स्त्री) दीवार की रूकारी, चुनायी या रूकार[1] के रद्दे। **प्रयोग** दीवार की एकतरफ की छल गिर गयी, दूसरी तरफ की फूल रही है। **प्रयोग** सामने की छल भरकर (चुनकर) फिर पिछली छल निकाली जाये। **भरना, चुन्ना, दुरुस्त करना** के साथ बोला जाता है। **फूलना** दीवार में अंदरूनी कमज़ोरी की वजह से छल (बैरूनी[2] रद्दे) का बाहर को निकल आना, अपनी जगह छोड़ देना। **निकालना** दीवार की छल यानी रूक़ार की जगह छोड़े हुए रद्दों को गिरा देना। ([1]मुख्य पृष्ठ, [2]बाहरी)

छल्ले की चुनाई (स्त्री) इकहरे रद्दे की मुदव्वर[1] चुनाई, जो अद्धे की डाट (गोल मेहराब) या कुँयें की कोठी में की जाती है। चुनाई की मुख़्तलिफ़[2] क़िस्मों[3] के लिए **देखें** लफ़्ज़[4] चुनाई। ([1]गोलाकार, [2]विभिन्न, [3]प्रकार, [4]शब्द)

छोपना (क्रिया) देखें छिपाई।

हाशिया गुम्बद (पु0) देखें पटिया बुर्ज।

हुजरा (हुजरह) (पु0) देखें कोठरी। उर्दू में लफ़्ज़[1] हुजरा मस्जिद में तालिब–ए–इल्म[2] वग़ैरा के रहने की कोठरी के लिए मख़्सूस[3] हो गया है। मकान की कोठरी को हुजरा नहीं कहते। अलबत्ता दकन के क़दीम बड़े शहरों में मुसलमान, घर की कोठरियों के लिए भी हुजरा बोलते हैं। ([1]शब्द, [2]विद्यार्थी, [3]निश्चित)

हवेली (स्त्री) दरोबस्त, बड़ा और पुख़्ता मकान (अरबी लफ़्ज़[1] हवाली से हवेली बन गया है, लेकिन उर्दू में इस लफ़्ज़ का मफ़्हूम[2] ख़ास हिन्दुस्तानी क़िस्म[3] के ऐसे मकान के लिए मख़्सूस[4] हो गया है, जिसमें चारों तरफ पुख़्ता इमारत बनी हुई हो। सहन, मुरब्बअ[5] और तंग दरवाज़ा मज़बूत और शानदार हो। शहर

और क़स्बात के हिन्दू बनिये और महाजन इस क़िस्म के मकानात बनाते और हवेली के नाम से मौसूम[6] करते हैं। ([1]शब्द, [2]आशय, [3]प्रकार, [4]विशेषकर, [5]चौकोर, [6]जाने जाते है)

ख़ाक रेज़ (पु0) बुनियाद के सतह ज़मीन से ऊपर निकले हुए हिस्से का संग–ए–ख़ारा से सलामीदार[1] बनाया हुआ पुश्ता। ([1]झुका हुआ)

ख़ानक़ाह (स्त्री) धर्मशाला, दरवेशों, दीनी तअ़लीम[1] हासिल करने वालों, अल्लाह वालों और तारिक–ए–दुनिया[2] लोगों के रहने का मकान। ([1]शिक्षा, [2]संयासी)

ख़स्सी परनाला (पु0) देखो परनाला।

ख़स्सी डाट

ख़स्सी डाट (स्त्री) दीवार की चुनाई के अन्दर अद्धे की क़िस्म[1] की चुनी हुई डाट जो बुनियाद की कमज़ोरी की वजह से दीवार के आसार[2] की चुनाई में लगाई जाती है ताकि ऊपर का वज़न डाट पर रुके। **देखें** डाट। इसका दूसरा नाम वस्ली डाल है। ([1]प्रकार, [2]चौड़ाई)

खुश्क चुनाई (स्त्री) सूखी चुनाई **देखें** पारा बन्दी।

दाग़ बेल (स्त्री) नींव या बुनियाद का निशान जो बतौर अ़लामत[1] ज़मीन पर लगाया जाय। बुनियाद का खाका[2] **डालना, पड़ना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** आज बुनियाद की दाग़ बेल डाली गई है। **प्रयोग** नींव की दाग़ बेल पड़ जाए, तो खुदाई का काम शुरु हो। ([1]निशानी, चिन्ह, [2]रेखाचित्र)

दालान (पु0) मेहराबदार दरों की कुशादा[1] रू[2] इमारत[3], जिसमें कम से कम तीन दर होना जुरूरी है, जो इस्तिलाह[4] मे चश्में कहलाते हैं, इसी वज़अ़[5] के लिए लफ़्ज़[6] दालान बोला जाता है। **बड़े दालान** पाँच, सात, नौ और उससे ज्यादा दरों के लिए भी होते हैं। दालान के दर हमेशा ताक़[7] बनाये जाते हैं, मगर एक दर वाले को दालान नहीं कहते, बल्कि इस्तिलाह मे दरह (दरा) या कमांचा कहते हैं। **दालान दर दालान** दोहरा दालान यानी आगे–पीछे बने हुए दो या ज़्यादा दालान। **सदर दालान** दोहरे यानी दालान दर दालान का पिछला दालान जहाँ मसनद–ए–तकिया लगाया जाय या सदर के बैठने की जगह हो। **सहदरा** दालान क़िस्म[8] की इमारत, आमतौर से इसका मफ़हूम[9] मामूल[10] से छोटा और अदना[11] क़िस्म का तामीरशुदा[12] दालान होता है। इसमें बाज़[6] बग़ैर मेहराबी दरों का मामूली[14] लकड़ी के खमों पर बना होता है। **दोहरा दालान** दो गहा दालान– दालान दर, दालान। ([1]फैली हुई, [2]चेहरा, [3]ष्वन, [4]तकनीकी रूप में, [5]आकार, [6]शब्द, [7]विषम, [8]तरह, [9]आशय, [10]परम्परा, [11]तुच्छ, [12]निर्मित, [13]कुछ, [14]साधारण)

दर (पु0) मेहराब के पाख़ों या सुतूनों[1] के दरमियान[2] की कुशादह[3] जगह और मजाज़न[4] दालान के सुतूनों को भी दर कहते हैं। **प्रयोग** दालान के दर संगमरमर के हैं। **प्रयोग** दर खड़े कर दिए गए हैं। डाटें लगना बाक़ी हैं। ([1]खम्बो, [2]मध्य, [3]फैली, [4]लक्षितार्थ)

दरा (पु0) देखें दालान। (मेहराब के अन्दर की महदूद और मुसक्कफ़ जगह–इसको खाँचा भी कहते हैं।)

दर्ज़कट चुनाई (स्त्री) चाली चुनाई, मलन की चुनाई। वह आम चुनाई जो मुक़र्रिरह[1] और मुअ़य्यना[2] तामीरी[3] उसूल पर की जाए। चाली से मुराद मुरव्विजह[4] और मलन से मक़सद चुनाई के रद्दों का बाहम[5] इस तरह जमा कर लगाना कि रद्दों की दर्ज़ें एक–दूसरे की सीध में न आएँ, जो चुनाई का नुक्स समझा जाता है। कारीगर मलन की मीम को ज़ेर[6] के साथ बोलते हैं। सही लफ़्ज़[7] मीम[8] के ज़ेर से है, जो मस्दर[9] मिलना से मुश्तक़[10] है। **(चुनाई की मुख़्तालिफ़ क़िस्मों के नामों के लिए देखें चुनाई)** ([1]निर्धारित, [2]निश्चित, [3]निर्माणीय, [4]प्रचलित, [5]एक दूसरे में, [6]इकारांत, [7]शब्द, [8]म, [9]धातु, [10]निकला हुआ)

दरम्यानी गेह (स्त्री) देखें गेह।

दरवाज़ा (पु0) किसी इमारत या हिस्सा–ए–इमारत[1] में दाख़िल[2] होने का दरोबस्त[3] रास्ता यानी जो हस्बे[4] जुरूरत खोला या बन्द किया जा सके। ([1]भवन, [2]प्रवेश, [3]इंतज़ाम, [4]आवश्यकतानुसार)

दरीचा (पु0) छोटा दर या बग़ैर पट का छोटा दरवाज़ा।

दफ़्तर (पु0) सरकारी या अंजुमनहाय[1] मुत्तहिदा का कारोबर अंजाम देने और उनकी अम्सिला[2] रखने की इमारत (मजाज़न)। **खुलना, बन्द होना** के साथ बोला जाता है। ([1]गैरसरकारी संस्था, [2]नक़ल)

दलक (पु0) ठस्सा, रऊद अस्तरकारी में फल–पत्ते काटने और मुनब्बतकारी[1] का काम बनाने का अहनी[2] फल का मेअ़मारी[3] औज़ार। ([1]बेलबूटे, [2]लोहे, [3]राजगिरी)

दो पटा दरवाज़ा (पु0) दो पटों (किवाड़ों का मामूली[1] दरवाज़ा। ([1]साधारण)

दो पल्लिया छत (स्त्री) देखें दो चिल्ला छत।

दो चिल्ला छत (स्त्री) खपरैल की वज़अ़ की दो तरफ ढालू बनी हुई छत, जिसका दूसरा नाम दो पल्लिया छत है।

दो छती (स्त्री) दो छतों के दरमियान पस्त[1] जगह, जो ज़ीने के आसार में या दो मन्ज़िला मकान की कुर्सी में बनाई जाती है। (जब दो मन्ज़िला मकान में एक हिस्सा दूसरे हिस्से से ऊँचा बनाना होता है, तो हस्बे[2] जुरूरत कुर्सी देकर एक और छत बनाते हैं। इस तरह दो छतों के दरमियान जो जगह निकलती है, वह इस्तिलाह[3] में दो छती कहलाती है। **डालना, बनाना** के साथ बोला जाता है। ([1]दबी हुई, [2]आवश्यकतानुसार, [3]तकनीकी रूप से)

दो साही (स्त्री) देखें पुश्ता।

दुकान (स्त्री) शारेह[1] आ़म पर तिजारती[2] सामान के ख़रीदो–फ़रोख़्त[3] और दीगर बंज[4] ब्योपार के लिए मख़सूस[5] इमारत। **देखें** पेशा बंज व्यापार ([1]राजमार्ग, [2]व्यावसायिक, [3]क्रय–विक्रय, [4]वाणिज्य व्यापार, [5]विशेष भवन)

दो गही इमारत (स्त्री) वह इमारत, जिसमें आगे–पीछे दो हिस्से हों यानी आगे–पीछे दो दर्जों की इमारत[1]। ([1]भवन)

दो मन्ज़िला इमारत (स्त्री) दोहरी इमारत तले ऊपर बनी हुई इमारत। **देखें** बाला[1] ख़ाना। (ऐसी इमारत दर्जों की तादाद[2] के लिहाज़[3] से मौसूम[4] की जाती है। **देखें** मन्जिल ([1]ऊपरी मंज़िल, [2]संख्या, [3]हिसाब, [4]जानी जाती)

दोहरा दालान (पु0) देखें दालान।

दोहरी इमारत (स्त्री) दो मन्ज़िला इमारत, बाला[1] ख़ाना दार इमारत । ([1]ऊपरी मंजिल)

दीवार (स्त्री) भेत। रेख़्ते या गारे मिट्टी का बना हुआ छत का पाया या मकान का पर्दा। **उठाना,** खड़ी करना, चुनना, बनाना, दीवार तामीर[1] करना के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** पड़ोसी ने बीच की दीवार खड़ी कराकर हदबन्दी कर ली। **बैठना** दीवार का किसी हादसा से दफ़्अ़तन्[2] ऊपर से नीचे तक गिर जाना। **प्रयोग** बुनियाद में पानी मरने से दीवार बैठ गयी। **फूलना** दीवार की छल। (बैरूनी सतह) का किसी अन्दरूनी नुक़्स[3] की वजह से बाहर को उभर आना। **प्रयोग** पानी मरने और भराव के ढीला होने से दीवार फूल गयी है यानि दीवार का पेटा निकल आया है। ([1]निर्माण, [2]अचानक, [3]दोष)

दीवान ख़ाना (पु0) मर्दाना मकान, बैठक, मुलाक़ात का कमरा। (दीवान ख़ाना का असल मफ़हूम[1] अब मतरूक[2] है।) दीवान ख़ाना दरअ़स्ल रियासत के माली कारोबार के मुन्तज़िम[3] के दफ़्तर का नाम था, जो बादशाह व रईस या अ़मीर की क़यामगाह[4] से मुत्तसिल[5] होता था। ([1]आशय, [2]परित्यक्त, [3]प्रशासनिक, [4]निवास स्थान, [5]सटा हुआ)

धाबा (पु0) देखें छत।

धज्जी की दीवार (स्त्री) एक ईंट के आ़सार के पर्दे की हल्की और मामूली दीवार।

धरमसाला (धर्मशाला) (पु0) देखें ख़ानक़ाह।

धुस (पु0) क़िला या फ़सील[1] की दीवार के नीचे की तह पर रपट्वाँ बना हुआ पुख़्ता पुश्ता, जो पानी की मार से बुनियाद की हिफ़ाजत[2] के लिए बना दिया जाता है; जैसा कि लाल क़िला देहली के फ़सील के बाहर चारों तरफ बना हुआ है। ([1]चार दीवारी, [2]सुरक्षा)
उर्दू मुहावरे में धौंसना–ज़दोकोब से लुटा देने को कहते हैं।

डाट (स्त्री) मेहराब। ईंट पत्थर वगैरह की बनाई हुई कमान डाट। दरअस्ल मेहराब की चुनाई के दरमियानी[1] यानी दहन के बीच के उस इख़्ततामी[2] रद्दे को कहते हैं जो मेहराब के दहन के दोनों रूखों की चुनाई के बीचोबीच बतौर डाट फसाया जाता है। जिस पर कुल्लियतन्[3] मेहराब[4] की चुनाई का इस्तेहकाम[5] व क़याम[7] बल्कि मेहराब के वजूद[8] का दारोमदार[9] होता है। इस अहमियत की वजह से उर्दू मुहावरे में मेहराब का इस्तिलाही[10] नाम डाट मशहूर हो गया है जिसकी मुख़्तलिफ[11] बनावटों के लिए हस्बे ज़ेल नाम मशहूर हैं जिनकी तश्रीह, अल्फ़ाज[12] के सिलसिले में कर दी गयी है। 1. उथली डाट, 2. अद्धे की डाट, 3. आमनी की डाट, 4. आमनी चुग्गे की डाट, 5. बादामी डाट (वैज़वी डाट), 6. बंगड़ीदार डाट (शाहजहानी डाट), 7. पस्त डाट, 8. पखवाई डाट, 9. तिहाई की डाट, 10. चुग्गे की डाट, 11. ख़स्सी डाट, 12. कश्ती की डाट, 13. गोल डाट, 14. मुस्तक़ीम डाट, 15. वस्ली डाट। ([1]मध्य, [2]अर्थात,

[3]अंतिम, [4]सम्पूर्ण, [5]गुम्बद, [6]मज़बूती, [7]अस्तित्व, [8]आधार, [9]तकनीकी, [10]विभिन्न, [11]निम्नलिखित, [12]शब्द)

डाट की छत (स्त्री) देखें लदाव की छत।

ढाडा या ढाड़ा (पु0) देखें चुनाई। **छोड़ना, रखना** के साथ मिलाकर बोला जाता है। **काटना** चुनाई में रद्दों के सिरों को आगे–पीछे रखना यानी आगे की चुनाई का जोड़ मिलाने का जगह रखना। **मिलाना** चुनाई के छूटे हुए रद्दों को आगे की चुनाई के रद्दों में पैवस्त[1] करना। **फटना** चुनाई का जोड़ इलाहिदा[2] हो जाना। जोड़ में नुक़्स[3] आ जाना। ([1]जोड़ना, [2]अलग, [3]दोष)

ढंडा (पु0) पर्दे की छोटी दीवार अहाता की चारदीवारी। **प्रयोग** जानवरों की रोक के लिए बागीचे के चारो तरफ डंडा खिंचवा दिया है। **प्रयोग** पुख़्ता जीने की हरएक सीढ़ी। **खींचना, उठाना** पर्दे की दीवार बनाना या किसी जगह की आड़ करना। **प्रयोग** गली के रुख दीवार पर चार फिट का ढंडा उठाकर छत का पर्दा कर लिया है।

ढंडेदार टेप (स्त्री) देखें टेप।

ड्योढ़ी (स्त्री) घर में आने–जाने का मुसक्क़फ़[1] रास्ता, दहलीज़। उमरा[2] के महलात या मकानात का इहाता[2], जो चारों तरफ से महदूद[4] और इसमें आमदो[5] रफ़्त के लिए फाटक हो। उमरा के महलात का बैरूनी[6] इहाता जिसमें मुलाज़्मीन[7] वगैरा के रहने के मकान बने हुए हों। ([1]पाटा गया, [2]अमीरों, [3]चौहद्दी, [4]सीमित, [5]आवागमन, [6]बाहरी, [7]नौकर)

ढूला (पु0) गुमक। डाट का क़ालिब[1] कैंडा जो डाट के दहन[2] की वज़अ़[3] का गारे मिट्टी का कच्चा बना लिया जाता है और डाट की तैयारी के बाद निकाल दिया जाता है। डाट की चुनाई कैंडे (ढ़ोले) के सहारे की जाती है। ([1]दिल, [2]मुँह, [3]आकार)

ढूई (स्त्री) देखें थाक (थूक)। **बाँधना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

ढ़ीम (पु0) गिरी हुई इमारत के मलबे (ईंट मिट्टी वगैरा) का ढेर, तोदह।

राज (पु0) मेअ़मार[1], सलावट, ओढ़। इमारत[2] की चुनाई का काम करने वाला कारीगर। (अरबी लफ़्ज़ राज़ से राज उर्दू बन गया है) ([1]राजगीर, [2]ष्वन)

राजमंदिर (पु0) किला, शाही मकान, ऐवान–ए–हुकूमत, दरबार–ए–खास।

रपटा (पु0) शहर पनाह या क़िले की फ़सील पर चढ़ने का ढ़लवाँ बना हुआ पुख़्ता रास्ता, जिस पर तोप और सवार आसानी से चढ़ जाए।

रपटवा चुनाई (स्त्री) सलामीदार या ढ़लुवाँ चुनाई, जो नीचे से ऊपर की बतद्रीज ऊँची हो। चुनाई की मुख़्तलिफ[1] क़िस्मों[2] के लिए **देखें** लफ़्ज़[3] चुनाई। ([1]विभिन्न, [2]प्रकार, [3]शब्द,)

रद्दा (पु0) चुनाई के हरएक तह ख्वाह ईंट की हो या पत्थर की मुसल्सल[1] हो या मुन्क़तअ़[2]। **जमाना, रखना, क़ायम करना, लगाना** चुनाई की तह बनानी शुरू करना या चुनाई की तह लगाना। **छोड़ना** चुनाई में बक़द्र[3] एक रद्दे की जगह छोड़ना। **काटना, तोड़ना, निकालना, खींचना** चुनाई की किसी तह को बवजह–ए–खराबी खारिज[4] करना। **मिलाना** चुनाई की तह को तह के साथ सही करना। ([1]लगातार, [2]टुकड़ों में, [3]मात्र, [4]अलग)

रंगमहल (पु0) ऐवाने[1] शाही की मख़्सूस[2] इमारत का नाम। ([1]शाही सदन, [2]विशेष)

रौशनदान (पु0) शमसह, शबकह[1], ताब्दान, बादरीया, कमरे, कोठरी या किसी महदूद[2] मुसक़्क़फ़[3] जगह में हवा और रौशनी की आमदो–रफ़्त के लिए छत के नीचे दीवारों में मुख़्तलिफ[4] वज़अ़[5] का बनाया हुआ मोखा। बनावट के लिहाज़ से इसकी मशहूर किस्में[6] हस्बे ज़ेल हैं। **तहबंगड़ी रौशनदान** जो तीन क़ौसों[7] के मिले हुए सिरों की शक्ल का बना हुआ हो। **चौबंगड़ी रौशनदान** वह रौशनदान जो चार कौसों के मिले हुए सिरों की शक्ल बनाया गया हो, इसको चरीला, चौगुला और चौफुल्ला रौशनदान भी कहते हैं। **पट्दार रौशनदान** जदीद[8] वज़अ़[9] का दरीचा की शक्ल का बना हुआ रौशनदान जिसमें शीशेदार पट खुलने, बंद होने को लगाया जाता है। **छोड़ना, रखना, निकालना** दीवार में रौशनदान बनाना कायम[10] करना। ([1]बड़ा सुराख, [2]सीमित, [3]पाटी गई, [4]आवागमन, [5]विभिन्न, [6]प्रकार,, [7]धनुषीय, [8]आधुनिक, [9]आकार, [10]स्थापित)

रुंद (रुंदा) (पु0) बारा। शहर या किले की दीवार में दुश्मन को देखने के लिए चुनाई में बने हुए मोखे। **देखें** बारा।

क्या खाई ख़ंदक़ रुंद बड़े क्या बुर्ज कंगूरा अनमोला।
गढ़ कोट रहकलह[1] तोप किलअ़ क्या सीसा दारू और गोला।। ([1]तोप रखने की गाड़ी)

रूद (पु0) दलक। ठस्सा अस्तरकारी में मुनब्बतकारी[1] करने का चाकू के फल की शक्ल[2] का औज़ार इसको क़लम भी कहते हैं ([1]बेलबूटे, [2]आकृति)

रूदकशी (स्त्री) अस्तरकारी में फूल पत्ते बनाने का काम जो अस्तरकारी पर सफ़ेदी की तह को छील कर तैयार किया जाता है।

रौज़न (पु0) छोटा रौशनदान। रूंदा सुराख।

रूकार (स्त्री) इमारत में सामने का बना हुआ काम। चेहरा या पेश–ए–इमारत, सामने का दीदारू और खुशनुमा[1] काम। ([1]सुंदर)

रेख़ते की चुनाई (स्त्री) पुख़्ता चुनाई, ईंट पत्थर और चूने की चुनाई (चुनाई के मुख्तलिफ़[1] क़िस्मों[2] के नामों के लिए **देखें** लफ़्ज़[3] चुनाई ([1]विभिन्न, [2]प्रकार, [3]शब्द)

रैंच (स्त्री) देखें तीख़।

ज़िह (स्त्री) कगर, कच्छ, कस्का। दीवार या मुंडेर के आसार (अर्ज़[1]) को तंग या चौड़ा करने या खुशनुमाई[2] को चुनाई में छोड़ा हुआ छोटा कस्का। **देखें** कस्का और कच्छ। ([1]चौड़ाई, [2]सुंदरता)

ज़ीना (पु0) ऊपर के मकान यानी कोठे पर जाने का कस्केदार या कटवां चढ़ाव का तामीर[1] किया हुआ रास्ता। सीढ़ी ऊपर चढ़ने को ज़ीने का हर एक चढ़ाव जिसको इस्तिलाह[2] में ठोकर या डंडा भी कहते हैं। हर सीढ़ी की उठान (ऊचाई) को ठाड और उसके उपर की मुसत्तह[3] जगह को पट और दोनों को मिलाकर ठाड पट कहते हैं। घुमेरी ज़ीना–लाट या मीनार के अन्दर बना हुआ मुदव्वर[4] ज़ीना। चक्करदार ज़ीना ख्वाह[5] इमारत के अन्दर बना हुआ हो। जैसे लाट या मीनार के अन्दर या अ़लाहिदा[6] बना हुआ हो, लोहे या लकड़ी के चक्करदार ज़ीने के बीच के खम[7] को जिसके सहारे पट लगी होती है, ठाड कहते हैं। ([1]निर्मित, [2]तकनीकी रूप में, [3]समतल, [4]गोलाकार, [5]चाहे, [6]अलग, [7]खम्बा)

सावनी (स्त्री) टिकती, गुनिया। सतह ज़मीन की हमवारी[1], ढाल और ज़ाविया[2] क़ाइमा[3] देखने का पुरानी वज़अ़[4] का आल:[5] इसको पंसाल भी कहते हैं (सतह ज़मीन पर टिका कर और बीच हिस्से पर सौल लटका कर पंसाल और हमवारी–ए–फर्श देखते हैं) **˛लगाना, मिलाना**। (समतल)

सावन–भादों (स्त्री) वह गुंम्बदी[1] इमारत जिसके चारों तरफ संगीन[2] जालियां इस ढंग से लगी हों कि उनमें से किसी एक तरफ से दूसरी तरफ देखने में बरसात का समा नज़र आए। देहली और आगरे की बाज़[3] क़दीम[4] शाही इमारतों में ऐसे नमूने बने हुए हैं। ([1]भवन, [2]पत्थर की, [3]कुछ, [4]प्राचीन)

सइबान (पु0) आसरा। बारिश और धूप के असर से इमारत की रूकार[1] को बचाने के लिए मामूली किस्म की बनाई हुई छावन। यह लफ़्ज़[2] आहनी[3] चादरों से बनी हुई छावन के लिए मख़्सूस[4] हो गया है। **˛डालना, जड़ना, बनाना, तैयार करना**। ([1]मुख्य पृष्ठ, [2]शब्द, [3]लोहे, [4]निमित्त)

सत्घरा (पु0) सात घरों का महदूद[1] अहाता[2]। यानी एक अहाता में तक़रीबन एक ही क़िस्म के बराबर बराबर बने हुए सात घर। ([1]सीमित, [2]चार दीवारी)

सजीली कमान (स्त्री) देखें तूरन और ताजदार दरवाज़ा।

सराय (स्त्री) होटल, मुसाफ़िर ख़ाना। वह इमारत जो मुसाफ़िरों के आ़रज़ी[1] कयाम[2] के लिए वक़्फ़ हो यानी बगैर किसी मुआ़विज़ा[3] और रोक–टोक के मुसाफ़िर उसमें ठहर सके। ([1]अस्थाई, [2]विश्राम, [3]शुल्क)

सरू (पु0) मिट्टी या चीनी के सुराहीदार नलुवों की बनी हुई मुंडेर। **˛बनाना प्रयोग** दो मंज़िले पर चीनी के खूबसूरत सरू बनी हुई है। सफ़ेदी फेरना/सफेदी करना (**क्रिया**) **देखें** अहक पाशी।

सलामी (स्त्री) फर्श या छत की सतह का ढ़ाल।। परनाला या मोरी की तरफ दीवार के उपरैचे यानी उपर की सतह की एक तरफ की ढ़लवाँ बनावट। **˛देना, रखना प्रयोग** छत की सतह में सलामी कम है इसलिए पानी रुकता नहीं।

सलामीदार चुनाई (स्त्री) देखें रपट्वां चुनाई।

सलामीदार मुंडेर (स्त्री) वह मुंडेर जिसका सिरा दोनों तरफ सलामीदार[1] हो। ([1]ढालवां)

सिंज (स्त्री) एक ईंट के आसार[1] की दीवार। **देखें** धज्जी की दीवार (सिंज इस्तिलाह[2] में लकड़ी के उस चौक्टे को कहते हैं जो एक ईंट के आसार की चुनाई को थामने के लिए होता है। यानी चुनाई उसके अन्दर भरी जाती है और वह चारों तरफ बतौर आड़ के होता है मगर मुहावरे में एक ईंट के आसार के चुनाई मुराद ली जाती है। अस़ल फ़ारसी लफ्ज़ संजाफ़ बमानी[3] हाशिया और मेअ़मारी[4] में सिंज हो गया है। ([1]चौड़ाई, [2]तकनीकी रूप से, [3]जिसका अर्थ, [4]राजगीरी)

संदला फेरना/संदला करना (क्रिया) अस्तरकारी को चिकनाने के लिए बारीक चूने की पुताई करके घुटाई करना।

संदलाकारी (स्त्री) देखें संदलाकारी।

सूत (पु0) मेअ़मारी[1] इस्तिलाह[2] में इंच के करीब 1/4 हिस्सा को सूत कहते हैं **देखें** इमारती गज़। ([1]निर्माणीय, [2]तकनीकी रूप में)

सौल (पु0) साहूल, सुहावल। दीवार की बुलंदी की सीध यानी अुमूदन[1] सही देखने का आल:[2] जो डोरी में बंधा हुआ किसी धातु या पत्थर का बना हुआ लट्टू होता है जिसको इस्तिलाह[3] में गोला कहते हैं। लट्टू के वतर के मसावी[4] लकड़ी या किसी धातु की बनी हुई पट्टी होती है। इसको इस्तिलाह में कैंडा कहते हैं। कैंडे के बीचोंबीच छोटा सा सुराख होता है इसको लट्टू की डोरी में पिरो दिया जाता है। इस कैंडे को दीवार की चुनाई के किसी रद्दे पर लटका कर लट्टू लटकाया जाता है इस अ़मल[5] से दीवार की सीध मअ़लूम होती है। ([1]सीध, [2]यंत्र, [3]तकनीकी रूप से, [4]बराबर, [5]प्रक्रिया)

सहबंगड़ी डाट (स्त्री) वह अद्धे की डाट जिसमें तीन क़ौसें[1] बना दी जाएँ। (**देखें** डाट व तस्वीर डाट) ([1]धनुषीय)

सहबंगड़ी रौशनदान (पु0) देखें रौशनदान।

सहदरा (पु0) देखें दालान।

सहदरी (स्त्री) मामूल से छोटे क़िस्म का दालान जो आमतौर से बड़े दालान की बग़लियों या सहन, चबूतरे के उपर आमने–सामने बनाया जाता है।

सहगही इमारत (स्त्री) आगे पीछे तीन दर्जों की इमारत। जैसे दो गही इमारत। **देखें** दोगही इमारत।

सीढ़ी (स्त्री) देखें ज़ीना। मजाज़न[1] काठ के ज़ीने को भी सीढ़ी कहते हैं। **प्रयोग** चोर दीवार पर बांस की सीढ़ी लगाकर ऊपर चढ़ गये। **छोड़ना, बनाना, काटना** के साथ बोला जाता है। ([1]लक्षितार्थ)

शाहजहानी डाट (स्त्री) देखें बंगड़ीदार डाट।

शर्क़ रूया इमारत (स्त्री) जिसका सदर[1] रुख़ मश्रिक़[2] की जानिब[3] हो। ([1]मुख्य भाग, [2]पूरब, [3]ओर) श

शषपहल मीनार (स्त्री) वह मीनार जिसकी बैरूनी[1] बनावट शषपहल यानी छः पाखी हो या जिसमें छः पखें बनी हुई हों। जैसे कुतुबमीनार। ([1]बाहरी)

शिकम (पु0) देखें गुंम्बदी डाट।

शल्जमी गुंम्बद (पु0) शल्जम की शक्ल का गुंम्बद।

शिमाल रूया इमारत (स्त्री) वह इमारत जिसका सदर रुख़ शिमाल[1] के जानिब[2] हो। ([1]उत्तर, [2]ओर)

शम्स बुर्ज (पु0) लालकिला देहली के एक बुर्ज का नाम।

शम्सा (शम्स:) देखें रौशनदान।

शिवाला (पु0) शिवजी की मूरत रखने की मन्दिर के अन्दर बनी हुई मेहराब या ताक़ जो आमतौर पर मन्दिर के मानों पर मुस्तअ़मिल[1] है। ([1]प्रचलित)

शहरपनाह (स्त्री) फ़सील, शहर के अत़राफ[1] की संगीन[2] दीवार। ([1]चारों ओर, [2]पत्थर)

शह नशीन (स्त्री) बार्जा, सदर दालान या दरबारी ऐवान की पिछली दीवार में बादशाह के बैठने को सतह–ए–फर्श से किसी क़दर[1] ऊची बनी हुई निशस्त[2] गाह। ([1]कुछ, [2]चौकी)

शेरदहन आंगन (पु0) देखें आंगन।

शीशमहल (पु0) ऐवान–ए–शाही[1] की मख़्सूस[2] इमारत का नाम। ([1]सदन, [2]विशिष्ट)

स़हन (पु0) देखें आंगन।

स़हन–ए–चबूतरा (पु0) देखें चबूतरा।

स़हनची (स्त्री) सहन–ए–चबूतरा के वस्त[1] में चौतरफ से खुली हुई या बड़े दालान की बग़लियों में बनी हुई खूबसूरत सह दरी[3]। ([1]बीच, [2]तीन)

सदर दालान (पु0) देखें दालान।

सदर दरवाज़ा (पु0) मकान का अस्ली और बड़ा दरवाज़ा जो बड़े मकानों में आमतौर से खुशनुमा ताजदार बनाया जाता है।

सदर दीवार (स्त्री) दालान के पिछैत यानी पिछली बड़ी दीवार जो दालान के मेहराबों के जवाब में होती है और जिसमें पेश–ए–ताक़ या सदर ताक़ होता है। **प्रयोग** दालान की सदर दीवार गिरने से छत बैठ गई।

सदर रुख़ (पु0) इमारत के सामने का रूकारी–रुख़[1]। **प्रयोग** साहूकारों की हवेली का सदर रुख़ बहुत दीदारू[2] और पायदार[3] होता है। ([1]सुंदर, देखने योग्य, [2]देखने योग्य, [3]टिकाऊ)

सदर ताक़ (पु0) सदर दालान की दीवार के वस्त[1] का बड़ा ताक़ जो दूसरे ताक़ों की बनिस्बत बड़ा और खुशनुमा बनाया जाता है, इसके नीचे मसनद–ए–तकिया लगाया जाता है और सदर के बैठने की जगह होती है। इसके लब[2] के नीचे चंगेर बनाई जाती है जिस पर खुशनुमाई[3] के लिए कटाव का काम भी बना दिया जाता है। चंगेर की नोंक को जो मख़रूती[4] शक्ल की होती है, इस्तिलाह[5] में गाजर कहते हैं। ([1]बीच, [2]होंठ, कगर, [3]सुंदरता, [4]शुंडाकार, [5]तकनीकी रूप से)

स़ंदला कारी या संदलाकारी (स्त्री) **निहायत बारीक पिसे हुए चूने की अस्तरकारी पुताई। संदला स़ंदल की तरह बारीक पिसे हुए अस्तरकारी को चिकनाने के लिए इसके ऊपर फेरा जाता है और यही इसकी वजह[1] तसमिया है।** ([1]नाम रखने का कारण)

सदर इमारत (स्त्री) **इमारत का सबसे बेहतर और कुशादह बना हुआ हिस्सा, इमारत का ख़ास हिस्सा।**

ज़िलअ़ (पु0) **तैयार इमारत का कोई एक रुख़।**

त़ाक़ (पु0) **आला, दीवार के आस़ार में ख़ानादारी की मामूली चीज़े रखने को मेहराबदार बनी हुई जगह।**

आ़शूर ख़ाना (पु0) देखें **इमाम बाड़ा।**

इ़बादत ख़ाना (पु0) **इ़बादत करने का मकान, वह जगह जो अल्लाह की याद, ध्यान ज्ञान के लिए मख़सूस हो।** मस्जिद।

इ़मारत (स्त्री) **इंसान के रहने सहने या कारोबार–ए–ज़िंदगी अंजाम देने का हस्बेख़्वाहिश[1] व ज़रूरत तैयार करदा ठिकाना।** प्रयोग **देहली और आगरा में शाही इ़मारतें काबिल–ए–दीद[2] बनी हुई है।** ([1]इच्छानुसार, [2]देखने योग्य)

इ़मारती गज़ (पु0) **मेअ़मारी[1] गज़, मेअ़मारों का मुरव्वजा[2] कदीम[3] गज़ जो अंग्रेज़ी गज़ से बक़द्र–ए–चार इंच छोटा यानी बत्तिस इंच का होता है जिसके हस्बे[4] ज़ेल हिस्से मेअ़मारों में मशहूर है।** ([1]राजगीरी, [2]प्रचलित, [3]प्राचीन, [4]निम्नलिखित)

4 सूत = एक पान

4 पान = एक तस्सू (1 1/3″)

24 तस्सू = 1 गज़ करीब 14 गिरह अंग्रेज़ी गज़ का ।

ग़र्ब रूया इ़मारत (स्त्री) **वह इ़मारत जिसका सदर रुख़ या हिस्सा मग़रिब[1] की जानिब हो।** ([1]पश्चिम)

गुलाम गर्दिश (स्त्री) **शह नशीन में आने जाने का ओटदार यानी अंदर ही अंदर बना हुआ रास्ता।**

फ़सील (स्त्री) **शहर पनाह, शहर या क़िला की मुहाफ़िज़[1] व मुस्तहकम[2] चहार दीवारी।** ([1]संरक्षक, [2]सुदृढ़)

क़ालिब (पु0) देखें **ढूला।**

क़िला (किलअ़) (पु0) **कोट, गढ़ बादशाह, और इसकी ख़ास फौज की क़याम[1] के लिए महदूद[2] व महफ़ूज़[3] और मुस्तहकम[4] बनी हुई जंगी इ़मारत[5]।** ([1]विश्राम, [2]सीमित, [3]सुरक्षित, [4]सुदृढ़, [5]घन)

कुल्फ़ीदार परनाला (पु0) देखें **परनाला।**

कुल्फ़ीदार डाट (स्त्री) **वह मेहराब जिसके दहन[1] का कोई एक रुख़ छल (एक ईंट की चुनाई का पर्दा) चुनकर बंद कर दिया गया हो।** ([1]मुँह)

क़लम (स्त्री) देखें **रूद।**

कारख़ाना (पु0) **वह इ़मारत जहाँ किसी क़िस्म का सन्अ़ती[1] काम किया जाये।** ([1]औद्योगिक)

काशी कार (पु0) देखें **चीनी कार।**

कानस (स्त्री) **कार्नस (अंग्रेज़ी)** गरदना। देखें **कनगनी।**

कट्वां टेप (स्त्री) देखें **टेप।**

कजक या कजरात (स्त्री) **नाज़ुक क़िस्म की मुनब्बतकारी[1] की घुटाई (चिकनाने का अ़मल) करने**

का बारीक मुँह का कर्नी की क़िस्म का औज़ार। ([1]बेलबूटे)

कच्ची छत (स्त्री) वह छत जिसके ऊपर चूने की तह न लगाई गई हो यानी पुख़्ता[1] न की गई हो, मिट्टी डालकर हमवार[2] कर दी गई हो। देखें छत ([1]पक्का, [2]बराबर)

कच्छ (स्त्री) कसका, बुनियाद या पाया–ए–दीवार की चुनाई का दीवार के आसार से ख़ारिज[1] किया हुआ हिस्सा, कटा हुआ आसार जो दीवार की चुनाई के बाहर छोड़ दिया गया हो। दीवार का आसार बुनियाद के आसार से हमेशा कुछ कम रखा जाता है इस कटे यानी बाहर को छोड़े हुए आसार को इस्तिलाह[2] में कच्छ कहते है। रेख़ते की संगीन इमारतों में इस हिस्से पर पत्थर का दासा लगाया जाता है। छोड़ना, काटना के साथ बोला जाता है। नक्शा–ए–इमारत से ख़ारिज[3] शुदा ज़मीन का नुक्कड़, खुटा यानी छोटा सा कोना भी कच्छ कहलाता है। देखें तस्वीर –143 ([1]अलग, [2]तकनीकी रूप से, [3]अलग किया हुआ)

कछौटा (पु0) कच्छ + औट दीवार के नुक्कड़ की हिफ़ाज़त[1] को कोने से मिलाकर खड़ा किया हुआ पत्थर जो गाड़ी वग़ैरा की टक्कर से कोने को महफ़ूज़[2] रखे। ([1]सुरक्षा, [2]सुरक्षित)

कुर्सी (स्त्री) सतह ज़मीन से फर्श–ए–इमारत या सतह इमारत तक बुनियाद या पाये का भराव यानी बुलंदी जो हस्बे–ज़रूरत[1] और इमारत की हैसियत के लिहाज़ से रखी जाती है। प्रयोग जामा मस्जिद दिल्ली की कुर्सी फ़ने[2] तामीर का बेहतरीन नमूना है। ्देना, रखना मकान की बुनियाद को हस्बे–ज़रूरत सतह ज़मीन से ऊँचा बनाना। ्उठाना, चुनना कुर्सी तामीर[3] करना तैयार करना। ([1]आवश्यकतानुसार, [2]वास्तुकला, [3]निर्मित, निर्माण)

करनी (स्त्री) चुनाई के काम में रद्दों पर गारा या चूना फैलाने और दीवार वग़ैरा पर चूना छापने (अस्तरकारी) का औज़ार, सफेदी या संदला घोटनें की छोटी किस्म की करनी को नैला कहते है जो गालिबन[1] नहर से बना है और बाज़[2] मुक़ामात[3] पर गिरमाला बोलते है। ([1]शायद, [2]कुछ, [3]स्थान)

कड़ी तख्ते की छत (स्त्री) चोबी छत। वो छत जो कड़ी तख्ते पाट कर तैयार की जायें। बरखिलाफ़ लदाऊ की छत। छत की मुख्तलिफ[1] क़िस्मों[2] के नामों के लिए देखें लफ़्ज़ छत। ([1]विभिन्न, [2]प्रकार)

कस्का (पु0) देखें कच्छ और ज़िह। कच्छ और कस्का एक ही चीज़ है मगर मफ़हूम[1] में यह फर्क है कि कच्छ मख्सूस[2] है बुनियाद के ख़ारिज[3] शुदह आसार के लिए और कस्का मुंडेर या दीवार के कटे हुए आसार के लिए इस्तेमाल होता है जो खुशनुमाई या आसार को तंग, चौड़ा करने के लिए हो। देखें तस्वीर ्काटना, छोड़ना, देना दीवार का आसार कम करने को असल आसार में से हस्बे–ज़रूरत[4] ख़ारिज[5] कर देना। ([1]आशय, [2]विशिष्ट, [3]निकाला गया, [4]आवश्यकतानुसार, [5]अलग)

कश्ती की छत (स्त्री) देखें लदाव की छत।

कश्ती की डाट (स्त्री) मुस्तक़ीम[1] या हमवार[2] डाट। बाज़[3] कारीगर पटाव की डाट कहते है। देखें मुस्तक़ीम डाट। ([1]सीधा, [2]फैली, [3]कुछ)

कगर (स्त्री) देखें ज़िह।

कलस (पु0) बुर्ज की चोटी यानी वह गाजरनुमा हिस्सा जो बुर्ज के सिरे पर बिल्कुल बीचों बीच बनाया जाता है। यह हिस्सा पीतल या सोने का खुश–वज़अ[1] कटावदार बनाकर भी लगाया जाता है। ([1]सुंदर)

कमान (स्त्री) देखें मेहराब।

कमानचः (स्त्री) देखें दरह और दालान ।

कमरह (कमरा) (पु0) दालान की क़िस्म[1] की इमारत[2] जिसके दरों में चौखटें मअ् किवाड़ लगी हों अ़मूमन[3] तीन दरों का होता है। मग़रिबी[4] इमारतों में इस का शुमार[5] किया जाता है। ([1]तरह, [2]भवन, [3]प्रायः, [4]पश्चिमी, [5]गणना)

कम्रख़ी मीनार (स्त्री) वह मीनार जिसकी बैरूनी[1] सतह कम्रख़ी पख नुमा बनी हुई हो देखें कम्रख़ी पख़। ([1]बाहरी)

कमरकोट (स्त्री) (कमर+कोट)–मकान के इहाता[1] की चार दीवारी जो कमर के बराबर यानी तीन साढ़े तीन फिट ऊँची बनी हुई हो। ([1]घेरा)

कन्गनी (स्त्री) दीवार और उसकी मुंडेर के दरमियान[1] हस्बे–ज़रूरत[2] व हैसियत[3] दीवार किसी क़दर बाहर को निकालकर लगाया हुआ चुनाई का रद्दा जो

दीवार और मुंडेर की हद्–ए–फासिल[4] ज़ाहिर करें। देखें तस्वीर। कस्केदार बनी हुई कमोबेश नौ इंच चौड़ी कन्गनी को गर्दना कहते है। जो जदीद[5] इस्तिलाह[6] में कानिस के नाम से मशहूर हो गई है जिसको खुशनुमा[7] बनाने के लिए इसकी चुनाई में कई कई कस्के छोड़ते है। मग़रिबी[8] वज़अ़[9] की इमारतों[10] में इसी क़िस्म[11] के नमूने बनाने का रिवाज हो गया है। इस बनावट का दूसरा मक़सद मुंडेर के पानी से दीवार की सतह की हिफ़ाज़त[12] भी है। ्रखना, छोड़ना कन्गनी तामीर[13] करना, कायम करना। ([1]मध्य, [2]आवश्यकतानुसार, [3]क्षमता, [4]सीमा, [5]आधुनिक, [6]परिभाषा, [7]सुंदर, [8]पश्चिम, [9]दंग, [10]भवनों, [11]प्रकार, [12]सुरक्षा, [13]निर्माण)

कंगूरा (पु0) फसील या दीवार की मुंडेर में मेहराब की शक्ल के बने हुए कटाव में का हर एक कटाव।

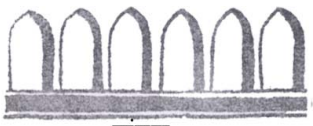
कंगूरा

कोबा (पु0) देखें थापी।

कोपरी (स्त्री) तजाई, चौखट की रूकार के चारों तरफ दरवाज़े की चुनाई का बकद्र दो तीन इंच बतौर हाशिया[1] बाहर को दिखायी देता हुआ हिस्सा। तजाई के मुरादी[2] माने छोड़ी हुई जगह के है इसलिए कोपरी को तजाई ष कहते है। ([1]किनारा, [2]समानार्थी)

कोट (पु0) संस्कृत कट्टा बमाने[1] किला, देखें किला, मामूल[2] से छोटा कोट्ला कहलाता है। ([1]जिसका अर्थ है, [2]परम्परा)

कोटला (पु0) देखें कोट।

कोठा (पु0) देखें बाला ख़ाना, अट्टा ऐसी बालाई इमारत जिसके साथ सहन न हो या बहुत मुख़्तसर[1], क़रीब नहीं के हो। बड़ा हुजरह या कोठरी जो सब तरफ से बंद सिर्फ एक दरवाज़ा की हो, मामूल[2] से छोटा कोठरी कहलाता है। ([1]छोटा, [2]परम्परा)

कोठरी (स्त्री) हुजरा, देखें कोठा।

कोठी (स्त्री) मग़रिबी[1] वज़अ़[2] की बनी हुई सकनी इमारत (घर) जिसमें बजाय दालान और दरों के कमरे हों और उनके दरमियान सहन (आंगन) न हो, बर ख़िलाफ इस के बाहर के रुख़ चारों तरफ खुली ज़मीन हो, इस इमारत के वस्त में सहन न होने की वजह से उर्दू में इसका नाम कोठी मशहूर हो गया। ([1]पश्चिमी, [2]शैली)

कौला (पु0) दरवाज़े की चौखट के बाजू से मिला हुआ दीवार के पाखे का सिरा। चूल्हे की पखवाई यानी उसके दहन का बग़ली रुख़। प्रयोग चोर रात को किवाड़ के पीछे कौले से लगकर छुप गया।

कौलकी (स्त्री) चौड़े आसार की दीवार के कौले में हस्बे गुंजाइश बनी हुई जगह जिस में मामूली[1] घरेलू सामान रख दिया जाये, कोलकी को मुसलमान बुख़ारी और हिन्दू बखारी ष कहते है जो दरअसल लफ़्ज़[2] पाखे से बिगड़ बिगड़ा कर बुख़ारी और बखारी बन गया है। देखें बुखारी ([1]साधारण, [2]शब्द)

कूँचा (पु0) गली, मकानों के दरमियान आमदो[1] रफ़्त का मुश्तरिका[2] रास्ता। ([1]आवागमन, [2]पंचायती)

कूँचा सर बस्ता (बस्तः) (पु0) वह कूँचा जिस में आमदो–रफ़्त[1] का एक ही रास्ता हो। दूसरी तरफ निकलने का रास्ता न हो। ([1]आवागमन)

कूंची (स्त्री) पुचारी, मकान की दीवारों पर सफेदी फेरने (क़लअ़ी करना) का घांस वग़ैरा का बना हुआ बुर्श नुमा औज़ार।

कैगल (स्त्री) (काह+गिल) देखें आलन। आल, पानी की उस नमी को कहते है जो बारिश के असर से सतह ज़मीन के अंदर बाक़ी हो। आलन बमाने[1] पानी मिलकर लैसदार बनी हुई मिट्टी, कीचड़, गारा। ([1]जिसका तात्पर्य)

कैंडा (पु0) सौल (साहूल) के लट्टू के वतर की नाप की लकड़ी या किसी घास की बनी हुई पट्टी जो लट्टू के साथ डोरे में पड़ी रहती है। **देखें** सौल।

खांचा (पु0) खुटा, कली। **देखें** रैंच।

खुटा (पु0) देखें खांचा और रैच।

खरंजा (पु0) संस्कृत खंडा बमाने[1] खंदानेदार बना हुआ फर्श। ईंट जमा कर पुख़्ता बनाया हुआ इमारत का फर्श जो अ़मूमन[2] दर्ज़दार और खुरदुरा रहता है। बनावट के लिहाज़ से उसके हस्बे[3] ज़ेल नाम है जिनकी तश्रीह[4] अल्फाज़[5] के सिलसिले

में कर दी गई है। 1. तीखी खरंजा 2. चौपड़ी खरंजा 3. लौज़ाती खरंजा 4. लहरू खरंजा। ([1]अर्थात्, [2]प्रायः, [3]निम्नलिखित, [4]व्याख्या, [5]शब्दों)

खिड़की (स्त्री) तनब्बी। चौखट और पटदार मामूल[1] से छोटा दरवाज़ा जो रौशनी, हवा और कहीं मामूली आमदो–रफ्त[2] के लिए बना दिया जाये। ([1]साधारण, [2]आवागमन)

गुमक (स्त्री) देखें **ढूला**। गुमक दकनी ज़बान में उभरवाँ यानी मुदव्वर[1] शक्ल की चुनाई को कहते है इसी लिए ढूले को भी कहते है। ([1]गोलाकार)

गुम्बद (पु0) कुर्रह[1] नुमा बनी हुई छत। बुर्ज और गुम्बद उर्दू में एक ही मानों[2] में इस्तेमाल होते है कभी वह पूरी इमारत जो बुर्ज या गुम्बद के आसार में बनी हो मुराद[3] ली जाती है। तस्वीर। दुनिया का सबसे बड़ा गुम्बद बहमनी सलतनत का बनाया हुआ बीजापुर (दकन) में है। ([1]मंडल, गोला, [2]अर्थों में, [3]आशय)

गुम्बदी छत (स्त्री) ऐसी लदाव की छत जो मामूल[1] से ज्यादा मुदव्वर[2] यानी निस्फ़[3] या निस्फ़ से कम दायरे की शक्ल की हो जैसी गिरजा या बाज़[4] बड़े हाल की बनायी जाती है। इस क़िस्म की छत बग़ली दीवारों के आसारों पर कायम की जाती है। ([1]परम्परा, [2]गोलाकार, [3]आधे, [4]कुछ)

गुम्बदी डाट (स्त्री) निस्फ़[1] गुम्बद के शक्ल की बनी हुई डाट दिल्ली की जामा मस्जिद के दालान के वस्त[2] में उसका बेहतरीन नमूना बना हुआ है और दूसरा लखनऊ की एक क़दीम[3] (बड़ा इमामबाड़ा) बनी हुई इमारत[4] में है। इस डाट की गहराई को इस्तिलाह[5] में शिकम कहते है। तस्वीर ([1]आधा, [2]बीच, [3]प्राचीन, [4]भवन, [5]तकनीकी रूप से)

गंगा जमुनी चुनाई (स्त्री) पत्थर की ऐसी चुनाई जिसमें तीन चार रद्दों के बाद एक दो रद्दे ईंट के लगाये जाते है।

गुंग छत (स्त्री) वह छत जिसमें आवाज़ न गूंजे। छत की मुख्तलिफ[1] किस्मों[2] के नामों के लिए देखें **लफ्ज़ छत**। ([1]विभिन्न, [2]प्रकार)

गुनिया (पु0) सावनी, टिकटी। (देखें **सावनी**) गुनिया असल में अ़रबी लफ्ज़[1] अलकोनिया था आगरा और दिल्ली के मेअ़मार[2] ज़ाविया[3], क़ाइमा[4] देखने के औज़ार को जो ऐसे ज़ाविया, क़ाइमा की शक्ल का जिसकी दोनों साक़ें[5] बराबर और समा–सह की वज़अ़[6] का बना हुआ होता है सावनी कहते है और संग तराश उसी औज़ार को गुनिया कहते है। दकन के मेअ़मारों का गुनिया सावनी से मुख्तलिफ[7] वज़अ़ का विलायती साख़्त का होता है जिसकी एक साक़ लम्बी और एक छोटी होती है। लगाना, मिलाना के साथ बोला जाता है। ([1]शब्द, [2]राजगीर, [3]आधार, [4]लम्ब, [5]भुजायें, [6]आकार, [7]विभिन्न)

गोदाम (पु0) कोठा। तिजारती[1] सामान भरने की इमारत[2]। ([1]व्यवसायिक, [2]भवन)

गोला (पु0) गोल शक्ल की बनी हुई कन्गनी। देखें **कन्गनी**।

गोल डाट (स्त्री) देखें **अद्धे की डाट**।

गौंधे (पु0) देखें **फकसा**।

गौंधे की चुनाई (स्त्री) मिट्टी के लोंदों की चुनाई जिसमें ईंट पत्थर न हो। चुनाई के नामों की तफ्सील[1] के लिए देखें **लफ्ज़ चुनाई**। ([1]विस्तार)

गौंधे की दीवार (स्त्री) मिट्टी के लोंदों की बनी हुई दीवार। देखें **गौंधे और गौंधे की चुनाई**।

गऊ मुख सहन (पु0) देखें **आंगन**।

गैह (स्त्री) फ़ारसी लफ्ज़ गाह बमाने[1] जगह से मेअ़मारी[2] इस्तिलाह[3] में गह हो गया जिससे इमारत[4] का आगे पीछे बना हुआ हर एक दर्जा मुराद[5] लिया जाता है और मुहावरे में अगली गैह पिछली गैह और एक गही, दो गही वग़ैरा इमारत बोला जाता है। ([1]जिस का अर्थ, [2]निर्माण, [3]तकनीकी रूप, [4]भवन, [5]आशय)

घट्टा (पु0) देखें **गट्टा**।

घुटाई (स्त्री) चूने की अस्तरकारी या अस्तरकारी पर सफेदी की तह को करनी से चिकनाने का अ़मल।

घर (पु0) बाड़ी, मस्कन, बाखर, मकान इंसान के रहने और बसने की इमारत[1]। ([1]भवन)

प्रयोग घर न बार
मियां मुहल्ले दार।

प्रयोग बाबा सोयें जा घर में
पांव पसारे व घर में।
प्रयोग पर घर नाचें तीन जने
ओछा, वैद, दल्लाल।

घर भरौनी (स्त्री) नये घर में आबाद होने और रहने बसने की रस्म जो आ़म तौर से मकान में आने से क़ब्ल[1] ग़ुरबा[2] को मकान में जमा कर के और खाना वग़ैरा खिला कर अदा की जाती है। करना के साथ बोला जाता है। ([1]पहले, [2]ग़रीबो)

घुड़ नअ़लडाट

घुड़ नअ़ल डाट (स्त्री) घोड़े के नअ़ल की शक्ल की वज़अ़[1] पर बनाई हुई डाट जो अद्धे की डाट के मानिंद[2] मगर बग़लियों पर से किसी क़दर[3] भिंची हुई और दरमियान[4] से उठी हुई होती है। देखें डाट व तस्वीर डाट ([1]आकार, [2]समान, [3]कुछ, [4]मध्य)

घुमेरी ज़ीना (पु0) देखें ज़ीना।

घूंघट (पु0) देखें खोगस।

घूंघट दार दरवाज़ा (पु0) जिसके सामने कोई आड़ इस तरह बनी हुई हो कि दरवाज़ सामने से नज़र न आये और ओट में रहे।

घेर (पु0) देखें अहाता। प्रयोग साहब रेज़िडेंट की कोठी का घेर बहुत वसीअ़[2] है। चार दीवारी भी मुराद ली जाती है। ([1]वाक्य प्रयोग, [2]लम्बा–चौड़ा)

लाट (स्त्री) मीनार। बतौर–ए–यादगार नुमाइश या अ़लामत[1], बेलन की शक्ल की बनी हुई इ़मारत जिसकी बुलंदी[2] और घेर ज़रूरत और मौके के लिहाज़ से मुख्तलिफ[3] जसामत[4] का होता है। घेर की बनावट में भी तरह तरह की ईजाद[5] की गई हैं। इस तामीर[6] का दुनिया में बेहतरीन नमूना नवाहे[7] देहली में बना हुआ कुतुब साहब की लाट के नाम से मअ़रूफ[8] है और हिन्दुस्तान के मुसलमान हुक्मरानों[9] की यादगार है। ([1]निशानी, [2]ऊँचाई, [3]विभिन्न, [4]स्थूलता, [5]अविष्कार, [6]निर्माण, [7]आसपास, [8]प्रसिद्ध, [9]शासक)

लिपाई (स्त्री) देखें अस्तरकारी।

लिपाई पुताई (स्त्री) देखें अस्तरकारी व आहक पाशी। प्रयोग मकान लिपाई पुताई से बिल्कुल दुरुस्त और मुकम्मल[1] है। ([1]परिपूर्ण)

लट्टू (पु0) सौल का लटकन, देखें सौल।

लदाव (पु0) रेख़ते की तैयार की हुई छत जो डाट के उसूल पर बनाई जाये। डालना के साथ बोला जाता है। प्रयोग मक़बरा सफदरजंग (देहली) की तमाम छतें लदाव की बनी हुई है।

लदाव की छत (स्त्री) डाट की छत। डाट की चुनाई की वज़अ़[1] पर तैयार की हुई रेख़ते की छत। छतों की मुख्तलिफ[2] किस्मों[3] के नामों के लिए देखें लफ़्ज़ छत। ([1]ढंग, [2]विभिन्न, [3]प्रकार)

लिस्वाँ टेप (स्त्री) देखें टेप।

लौज़ाती खरंजा (पु0) लौज़ात की शक्ल का ईंट का बना हुआ फर्श। खरंजे की मुख्तलिफ[1] क़िस्मों[2] के नामों के लिए देखें लफ़्ज़ खरंजा। ([1]विभिन्न, [2]प्रकार)

लवा (पु0) देखें सौल।

लौंदा (पु0) फक्से का छोटा ढीम। रद्दा जो मिट्टी की दीवार के बनाने को तैयार किया जाता है। देखें गौंदा, फक्सा।

लौंदे की दीवार (स्त्री) गारे के तैयार किये हुए कच्चे लौंदो से चुनी हुई दीवार। देखें लौंदा।

लोनी (स्त्री) दीवार की ईंटों का शोर जो तामीर[1] में खारदार मिट्टी या खारे पानी के इस्तेमाल से पैदा हो। लगना के साथ बोला जाता है। शोर की वजह से दीवार के रद्दो की ईंटों का गिरना। ([1]निर्माण)

लहरु खरंजा (पु0) लहरियेदार बना हुआ। ईंट का बना हुआ फर्श। नामों की तफ्सील[1] के लिये देखें लफ़्ज़ खरंजा। ([1]व्याख्या)

लेव (पु0) लिपाई या छिपाई की मोटी या बद डोल तह। चढ़ाना के साथ बोला जाता है। प्रयोग अस्तरकारी क्या की है? चूने के लेवे के लेवे चढ़ा दिये है।

महताबी या मेहताबी (स्त्री) देखें आफताबी, महताबी।

मुसम्मन बगदादी (पु0) अठ पहल मुहज्जर (जंगला संगीन)।

मजलिस ख़ाना (पु0) देखें इमाम बाड़ा।

मेहराब (स्त्री) देखें डाट।

मेहराबी दर (पु0) मेहराब दार दरवाज़ा। वह दरवाज़ा जिसके ऊपर मेहराब बनी हो यानी जिसका मेहराबी पटाव हो।

महल (पु0) निहायत आला और वसीअ़[1]। उमरा[2] के रहने का मकान। ([1]लम्बा–चौड़ा, [2]अमीरों)

महल सरा (स्त्री) उमरा की बेगमात के रहने का मकान।

मुहल्ला (पु0) देखें कूँचा।

मदत (स्त्री) असल लफ़्ज़[1] मदद है लेकिन मज़दूर और अ़वाम "ते" से तलफ़्फ़ुज़ करते है। वह कारीगर और मज़दूर जो इ़मारत की तामीर[2], दुरुस्ती या मरम्मत पर मुकर्रर[3] और लगे हुए हों या लगाये जायें। प्रयोग पहली तारीख से मकान की तामीर[4] पर मदत लगा दी जायेगी। प्रयोग हस्बे–ज़रूरत[5] मदद बढ़ा और घटा दी जाती है।

मुरादन[6] तामीरी[7] काम। ([1]शब्द, [2]निर्माण, [3]सुनिश्चित, [4]निर्माण, [5]आवश्यकतानुसार, [6]आशय, [7]निर्माणीय)

मदरसा (पु0) पाठशाला, पढ़ाई घर। बच्चों को तालीम[1] व तरबियत[2] देने की इ़मारत[3]। ([1]शिक्षा, [2]दीक्षा, [3]भवन)

मद्धी चुनाई (स्त्री) नर्म चुनाई। चुनाई के वह रद्दे जो चुनाई में सीध से किसी–कदर[1] अंदर को दब गये हो। चुनाई के मुख़्तलिफ[2] नामों के लिए देखें लफ़्ज़ चुनाई। ([1]कुछ, थोड़ा, [2]विभिन्न)

मरम्मत (स्त्री) इ़मारत के टूट फूट की दुरुस्ती। प्रयोग सरकारी इ़मारतों की सालाना मरम्मत होती है।

मसाला (पु0) तामीरी[1] अश्या[2] जो इ़मारत की तैयारी में काम आयें। प्रयोग मसाला जमा हो जायें तो मदद बुलायी जायें। ([1]निर्माणीय, [2]अतिरिक्त सामाग्री)

मिस्तर (पु0) अस्तरकारी की सतह को हमवार[1] करने कि चिफ़्ती, लम्बी चोबी तख्ती तामीरी[2] गज़। ([1]बराबर, [2]निर्माणीय)

मिस्तरी (पु0) इ़मारत का नक्शा बताने वाला और तामीरी[1] काम की निगरानी करने और मजदूरों और कारीगरों को हिदायत देने वाला। तामीरी काम से वाक़फ़ियत[2] रखने वाला शख्स। ([1]निर्माणीय, [2]ज्ञान)

मुस्तक़ीम डाट (स्त्री) सीधी डाट जो दरवाज़े के पटाव के लिए लगायी जाये। इसमें गोलाई और ख़ास तरीके से लगायी जाती है। बाज़[1] लदाव की छतें भी मुस्तक़ीम[2] डाट की वज़अ़[3] पर बनायी जाती है। ([1]कुछ, [2]सीधी, [3]ढंग)

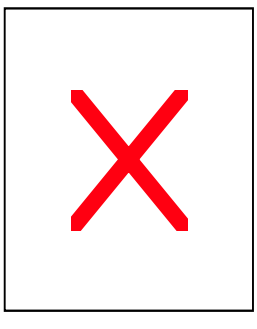

मेअ़मार (पु0) देखें राज।

मेअ़मारी गज़ (पु0) देखें इ़मारती गज़

मक़बरा (पु0) क़ब्र के ऊपर बनी हुई इ़मारत।

मिलन की टेप (स्त्री) देखें टेप।

मिलन की चुनाई (स्त्री) देखें दर्ज़ कट चुनाई।

मम्टी (स्त्री) ज़ीने का पटाव जो सीढ़ियों के चढ़ाव के हिसाब से ऊपर को उठा हुआ बनाया जाता है।

मिम्बर (पु0) वाअ़िज़[1] के खड़े होने का सतह ज़मीन से हस्बे–ज़रूरत[2] बुलंद[3] मुख़्तसर[4] मगर खुशनुमा[5] बना हुआ चबूतरा। ([1]उपदेशक, [2]आवश्यकतानुसार, [3]ऊँचा, [4]संक्षिप्त, [5]सुंदर)

मंझोला (पु0) करनी की क़िस्म का मगर उससे छोटा अस्तरकारी करने का मेअ़मारी[1] औज़ार। देखें करनी। ([1]निर्माणीय)

मंदर (पु0) देखें शिवाला।

मुंडेर (स्त्री) दीवार की चोटी, बालाई सिरा। देखें तस्वीर। संस्कृत लफ़्ज़[1] मूंड बमाने[2] सर से मुंडेर बना है। मामूल से छोटी को मुंडेरी कहते हैं। ([1]शब्द, [2]जिसका तात्पर्य)

मुंडेरी (स्त्री) देखें मुंडेर।

मंज़िल (स्त्री) क़याम गाह। ठहरने की जगह। क़ाफ़िला उतरने का मुक़ाम, मुराद घर, मकान, इ़मारत जो बालाई[1] तामीर[2] की तादाद से मंज़िला, दो मंज़िला, सह मंज़िला[3] वग़ैरा वग़ैरा कहलाती है। प्रयोग बडे शहरों में तंगी–ए–जगह की वजह से कई कई मंज़िला इ़मारत बनाई जाती है। ([1]ऊपरी, [2]निर्माण, [3]तीन)

मोखा (पु0) संस्कृत मूशा। दीवार का ऐसा सुराख जिसमें से दूसरी तरफ को झांका जा सके और जो आदमी के सिर के बराबर चौड़ा हो। हवा का रौज़न[1]। ([1]झरोका, झाकी)

मोरी/मोहरी (स्त्री) घर के अंदर का बरसाती और इस्तेमाली[1] पानी के निकास के लिए बनाया हुआ रास्ता। ([1]प्रयोगीय)

महताबी/माहताबी (स्त्री) देखें आफताबी व महताबी।

मोहरा (पु0) ताजदार दरवाज़े की मेहराब का आगे को निकला हुआ हिस्सा। देखें ताजदार दरवाज़ा।

मैमिए (पु0) (मैमंद, मैमून, मयामीन, बाबरकत– लोग[1]) देहली के मुसलमान क़दीम[2] पेशेवर मेअ़मार[3] (राज) मैमिए कहलाते है। जो बज़ाहिर ऐसा ही लफ़्ज़ है जैसे मेहतर बहिश्ती, खलीफ़ा वग़ैरा। मुज़ाफ़ात[4] ग़ज़नी में मैमंद एक कस्बा का नाम है मुमकिन है कि उन लोगों के अजदाद[5] ग़ज़नी फ़तूहात[6] में हिन्दुस्तान में आकर आबाद हो गये हों और शाहजहानाबाद की तामीर[7] के वक़्त देहली आकर बस गये हों और मैमंद की निस्बत[8] से अपने को मैमिए कहते हों। ([1]श्रेष्ठ लोग, [2]प्राचीन, [3]राजगीर, [4]आसपास के गाँव, क़स्बा, [5]पूर्वज, पुर्खे, [6]विजय, [7]निर्माण, [8]संबंध)

मीनार (स्त्री) देखें लाट, छोटे को मीनारा कहते है।श

मीनारा (पु0) देखें मीनार।

नासक (स्त्री) नुक्कड़। दीवार के पाखे की कोर, कगर। पाखे का बग़ली रुख़ जिस पर पाखे की चुनाई खत्म हो। बांधना चुनाई के रद्दों में ढाड़ा न छोड़ना और पाखे के इख़्तितामी रद्दे लगाना।

नाग (पु0) देखें बंगड़ी दार डाट।

नर्म चुनाई (स्त्री) देखें मद्धी चुनाई।

नुक्कड़ (पु0) देखें नासक।

नलिया (स्त्री) देखें गलियारा।

निम चाक (पु0) डाट की तैयारी करने के लिए लकड़ी का बनाया हुआ कैंडा क़ालिब[1]। ([1]सांचा, ढांचा)

नैला (पु0) औसत दर्जे की करनी। छोटी करनी जिससे कटाव का काम बनाया जायें। देखें करनी तस्वीर। नैला दरअसल नहरनी (नाखून काटने का आलः) से बिगड़ कर नहला और फिर नैला हो गया है।

नींव (स्त्री) नींव, आर। जमोट। देखें बुनियाद।

वस्ली डाट (स्त्री) देखें ख़स्सी डाट।

हश्त पहल मीनार (पु0) वह मीनार जिसकी बैरूनी[1] शक्ल आठ पहलू हो। ([1]बाहरी)

हमवार डाट (स्त्री) देखें मुस्तक़ीम डाट।

होटल (पु0) चार ख़ाना। सरायें, मुसाफिरों के क़याम[1] व त़आ़म[2] की जगह, आ़रज़ी[3] तफरीह गाह। ([1]विश्रामालय, [2]भोजनालय, [3]अस्थाई)

हैकल (स्त्री) बुत–ख़ाना[1]। इबादत ख़ाना। ([1]मंदिर)

दूसरी फ़स्ल
तहज़ीब ओ आराइश–ए–इमारत
पेशा–ए–रंगकारी

अस्तरकारी (पु0) कोट। रंगों–रौगन[1] करने से पहले लकड़ी की सतह को चिकनाने और रेखों को भरने का सरेश में बना हुआ मसाला जो रौग़नी रंग करने से पहले बतौर–ए–तह लगाया जाता है इसको तह और ज़मीन ष कहते है। फेरना, लगाना, करना, देना के साथ बोला जाता है। ([1]चिकनाई)

बालूची/बरौंची (स्त्री) बुर्श। बलकुची इमारती काम पर रंगो–रोग़न फेरने का बालों का बना हुआ कुचारा या कूची।

बुर्श (पु0) देखें बालूची।

बलकूची (स्त्री) (बाल + कूंची) देखें बालौंची।

बूरी (स्त्री) लकड़ी की दर्ज़ों में ष्रने का मसाला जो लकड़ी के बुरादों से बनाया जाता है। भरना के साथ बोला जाता है।

पूचारा (पु0) देखें बालूची और बुर्श।

पहला कोट (स्त्री) एक मर्तबा का लगाया हुआ अस्तर यानी पहली मर्तबा मसाला ष्रकर लकड़ी की दर्ज़े बंद करने का अ़मल[1] ([1]प्रक्रिया)

पी (स्त्री) सरेश और खरिया मिट्टी का मसाला जो बतौर अस्तर लगाया जाता है। फैलाना, लगाना के साथ बोला जाता है।

पी स़फा (पु0) पी के खुरदुरे पन को साफ करने वाला और लकड़ी की सतह को चिकनाने वाला रेगमाल जो सींग का बना हुआ होता है।

तह बट्टी करना (क्रिया) अस्तर लगा कर किसी चिकने बट्टे (पी सफा) से रगड़ना इसको सुताई करना ष कहते है।

तैयारी का रंग (पु0) रौगन करने के बाद चमक पैदा करने वाला राल का बना हुआ मसाला जो अखीर में लगाया जाता है वार्निश होता है। इसको इस्तिलाह[1] में तैयारी का हाथ और हाथ फेरना ष कहते है। ([1]तकनीकी रूप से)

चंदी मंदब (पु0) मकान की दीवारों पर रंगीन नक़्शो–निगार व तस्वीर वग़ैरा बनाने का काम।

छोप (स्त्री) लुप्पन। लुक। लकड़ी की दर्ज़ों में ष्रने का मसाला जिससे दर्ज़ों और सुराख बेमालूम कर दिये जाते है। लगाना, ष्रना के साथ बोला जाता है।

राल (स्त्री) लाख की क़िस्म की एक निबाताती[1] शय्[2] जिससे वार्निश बनायी जाती है। ([1]वनस्पति, [2]वस्तु, चीज़)

रंगारी (पु0) इमारती[1] काम पर रौग़नी रंग फेरने वाला कारीगर। ([1]निर्माणीय)

रंगा मेज़ी (रंग आमेज़ी) (स्त्री) लकड़ी वग़ैरा पर रंग व रौगन करने और रंगीन फूल बूटे बनाने की सिन्अ़त[1]। ([1]कारीगरी)

रंग साज़ (पु0) लकड़ी, लोहे वग़ैरा की अश्या[1] पर रौग़नी रंग फेरने वाला कारीगर। विलायती रौग़नी रंगों की ईजाद[2] ने इसको आ़म और घरेलू बना दिया है। ([1]वस्तुओं, [2]आविष्कार)

रौगनी रंग (पु0) अलसी के तेल में सफ़ेदे को हल[1] करके और किसी क़िस्म का रंग मिलाकर तैयार किया हुआ रंग। ([1]मिला)

रेगमाल (पु0) लकड़ी की सतह का खुरदुरापन साफ करने का खुरदुरा कागज़।

ज़मीन (स्त्री) देखें अस्तर।

ज़मीन बनाना (क्रिया) लकड़ी की सतह रौगन लगाने के लिए दुरुस्त करना।

सुताई (स्त्री) देखें तह बट्टी और तह बट्टी करना।

सरेश (पु0) गाय, भैंस के पट्ठों से बना हुआ मसाला जो रौग़न[1] चिपकने के लिए इस्तेमाल[2] किया जाता है। ([1]चिकनाई, [2]प्रयोग)

मुंदरस (पु0) एक क़िस्म का गोंद जिससे एक क़िस्म की वार्निश बनायी जाती है। ([1]प्रकार)

सींख़िया ख़त (पु0) झाड़ू की सींक (सींख़) के मानिंद[1] रंग की बनाई हुई बारीक लकीर। ([1]समतुल्य)

सूफ (पु0) रौग़न[1] फेरने का सन के रेशों का बना हुआ कुचारा। ([1]चिकनाई)

स़फाई का कोट (पु0) देखें सफाई का हाथ।

कोट (पु0) देखें अस्तर।

लुप्पन (स्त्री) लुक। देखें छोप (लुप्पन उर्दू में नहीं बोलते द्रावणी ज़बान में बोलते है।

लुक (स्त्री) देखें छोप।

लकोटा (पु0) लाक का बनाया हुआ रौग़नी–रंग[1] जो पहले ज़माने में लकड़ी के ऊपर किया जाता था। ([1]चिकनाई)

वार्निश (स्त्री) एक क़िस्म[1] का रौग़न[2] राल से बनाया जाता है और लकड़ी की रंगाई को चमकाने के लिए फेरा जाता है। ([1]प्रकार, [2]चिकनाई)

वार्निश का हाथ (पु0) वार्निश का पुचारा फेरना।

पेशा–ए–आराइश साज़ी

अबरक़ (अबरक) (स्त्री) एक मअ़दनी[1], परत दार शय्[2] जिस के परत बारीक शीशे की तरह शफ़्फ़ाफ़[3] और कागज़ की तरह लचकदार होते है उससे फानूस, फूल, बूटे और दीगर[4] आराइशी[5] खुशनुमा[6] चीज़े बनायी जाती है। ([1]खनिज, [2]वस्तु, [3]चमकदार, [4]दूसरे, [5]सजावटी, [6]सुन्दर)

अबरकी कंवल (पु0) दग़दग़ा। अबरक[1] का बना हुआ कवंल के फूल की शक्ल बना हुआ आराइशी[2] फानूस। ([1]चमकीला पदार्थ, [2]सजावटी)

आराइश (स्त्री) काग़ज़ी बाग़ो–बहार मुख्तलिफ[1] क़िस्म[2] के रंगीन काग़ज़ और इसी क़िस्म की दूसरी सजीली चीज़ों का बनाया हुआ आराइशी[3] सामान जो एहले–हुनूद[4] में शादी ब्याह के मौके पर खुसूसन[5] और मकानों के सजाने को अमूमन[6] इस्तेमाल किया जाता है। दीवाली के त्यौहार की तक़रीब[7] में आमतौर से दीवारों पर और छतों पर रंग बिरंग के खुशनुमा व खुशवज़अ़[8] कागज़ मंड़ने और अबरकी व कागज़ी फूल, गुलदस्ते और फानूस सजाने का रिवाज है। देहली, आगरा और अवध के इलाक़े में इसका चलन आ़म है। प्रयोग जब बरात दुल्हन के घर पहुँची तो आराइश लुटी। ([1]विभिन्न, [2]प्रकार, [3]सजावटी, [4]हिन्दू लोग, [5]विशेषकर, [6]प्रायः, [7]उत्सव, [8]सुन्दर आकृति)

आराइश साज़ (पु0) आराइश यानी कागज़ी बाग़ो–बहार[1] बनाने वाला कारीगर। ([1]रंगबिरंगे फूलों से सजाना)

आराइशी तख़्ता (पु0) अबरकी गुलदस्तों और रंग बिरंग के कागज़ी फूलों से सजी हुई अबरकी चौकी जो बाराती जुलूस के साथ बतौर–ए –नुमाइश और मकानों में आराइश[1] के लिए रखते है इसी क़िस्म की आराइश दीवार पर लटकाने के लिए बनायी जाती है आराइशी टट्टी कहलाती है। ([1]सजावट)

आराइशी टट्टी (स्त्री) देखें आराइशी तख्ता।

आराइशी छड़ी (स्त्री) काग़ज़ी व अबरकी फूलों से सजायी हुई छड़ी जो शादी ब्याह की तकरीब पर मकान की आराइश और बारात की सजावट के लिए बनायी जाती है।

तांम्बड़ ताम्ड़ा (पु0) देखें जगजगा।

टट्टी गुल–ए–अबरक (स्त्री) अबरकी चौपतिया बने हुए फूलों से तैयार की हुई दीवार पर लटकाने की टट्टी।

ठाटर (पु0) कागज़ व अबरक[1] के बने हुए आराइशी[2] फूल बूटे जमाने की बांस की खपच्चियों की बनी हुई टट्टी। ([1]अभ्रक, [2]सजावट)

जगजगा (पु0) ताम्बड़ और ताम्बड़ा डाक पत्तर। आराइशी[1] फूल बूंटे बनाने का पीतल या तांबे का बारीक वरक़[2] जिसकी सतह को हस्बे–ज़रूरत[3] रौग़नी रंग से रंग कर चमकदार बना दिया जाता है। अबरक और कागज़ के मुक़ाबले में इसके फूल देरपा[4] और करारे रहते है। ([1]सजावटी, [2]परत, [3]आवश्यकतानुसार, [4]स्थाई)

जुगनू (पु0) अबरक का बना हुआ एक क़िस्म[1] का आराइशी[2] कवंल। फानूस के साथ बोला जाता है। ([1]प्रकार, [2]सजावटी)

चीना क़ंदील (स्त्री) देखें क़ंदील खिलौना।

दग़दगा (पु0) कंवल। कंवल के फूल की शक्ल का अबरक या रंगीन कागज़ का बना हुआ फानूस जो चराग़ां[1] के मौके पर इस्तेमाल किये जाते है। जिस तरह आज कल बिजली की कुप्पियां।। ([1]दीपोत्सव)

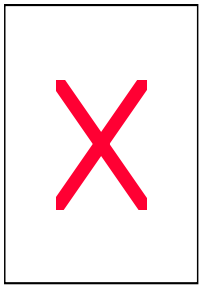

डाक पत्तर (पु0) देखें जगजगा।

रौशन चौकी (स्त्री) कंवल फानूस से सजी हुई चौकी की शक्ल का बना हुआ आराइशी[1] तख्ता जो बारात की नुमाइश और मकानों की आराइश के लिए बनाया जाता है। बुर्जी दार चौकी जो नौबत[2] के लिए सजायी जाती है और बरात के आगे चलती है। ([1]सजावट, [2]नक़्क़ारा)

सजाना (क्रिया) मकान को मुख्तलिफ[1] खुशनुमा चीज़ो और फर्श फरूश[2] से आरास्ता[3] करना, खुशनुमा बनाना। ([1]विभिन्न, [2]सुन्दर, [3]सज़ाना)

सजावट (स्त्री) खूबसूरती व आराइश–ए–इमारत, आरास्तगी[1] ([1]साज–सज्जा)

सिजल (विशेषण) अच्छा। उम्दा (उम्दह)। अरास्ता, सजा हुआ। खुशवज़अ[1]। ([1]सुन्दर)

कागज़ मढना (क्रिया) बांस की खपच्चियों के ठाठ और मकान की दीवारों और छतों वग़ैरा पर सजावट के लिए आराइशी[1] कागज़ चिपकाना। ([1]सज़ावटी)

किरन रेज़ा (पु0) जगजगे और बादले के बारीक रेज़े[1] जो अबरकी फूलों और कवंल के पाखों पर चिपकाये जाते है। ([1]किरन के टुकड़े)

खपचार (स्त्री) देखें पेशा छप्पर बंदी।

कुलावा (पु0) गुलू। गर्ज़ की शक्ल का बना हुआ कुमकुमा या क़ंदील, इसकी शक्ल गुलाब की कली की सी होती है। शायद लफ़्ज़[1] गुल से गुल्वा और फिर कुल्वा और कुलावा हो गया है। ([1]शब्द)

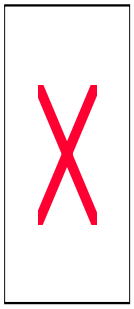

तस्वीर–कलावा,

कुमकुमा (पु0) बेलन की शक्ल की कागज़ की बनी हुई क़ंदील जो मकान के आराइश[1] और शादी ब्याह की तक़रीब[2] के मौके पर नुमाइश के लिए रंग बिरंग के कागज़ की बना कर सजायी जाती थीं। ([1]सजावट, [2]उत्सव)

क़ंदील (स्त्री) चिराग़ का कागज़ी या शीशे का बना हुआ मुख्तलिफ[1] शक्लों का ख़ाना। (लालटेन)। देहली व नवाहे[2] देहली, लखनऊ व आगरा वग़ैरा में कागज़ की बनी हुई लालटेन के लिए जो बतौर आराइश[3] या खिलौना बनाई गई हो मखसूस[4] है। दकन में शहर हैदराबाद और दीगर मशहूर मुक़ामात में क़ंदील का लफ़्ज़ लालटेन के लिए आम है। ([1]विभिन्न, [2]आस–पास, [3]सजावट, [4]विशिष्ट)

कंदील खिलौना (स्त्री) चीना क़ंदील कुमकुमें की वज़अ[1] की वह क़ंदील जिसके अंदर कागज़ी तस्वीरों का बनाया हुआ हल्क़ा[2] लगाया जाता है जो हवा से घूमता है और चिराग़ की रौशनी में क़ंदील के कागज़ पर उसका अक्स[3] पड़ता हुआ खुशनुमा[4] मालूम होता है। ([1]आकार, [2]घेरा, [3]छाया, [4]सुन्दर)

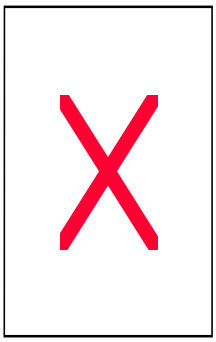

गुले अबरक (पु0) अबरक के बनाये हुए फूल।

गुल्वा (पु0) देखें कुलावा।

लेई (स्त्री) कागज़ के फूल पत्ते चिपकाने को मैदे की बनाई हुई लेसदार चिपक्वाँ चीज़। लगाना के साथ बोला जाता है।

पेशा–ए–घड़ी साज़ी

अद्धे की बाज़ (स्त्री) वक़्त बताने के लिए हर आधे घंटे पर बजने वाली घंटे की आवाज़।

अर्रा (पु0) घड़ी के चक्कर की तान जो गाड़ी के पट्टे के मानिंद चक्कर के मुहीत[1] और मरकज़ी[2] हिस्से[3] के दरमियान[4] बंदिश होती है। ([1]घेरा, [2]केन्द्रीय, [3]भाग, [4]मध्य)

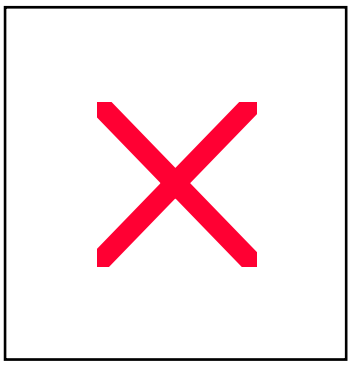

बाज (स्त्री) घंटे का बजने वाला पुर्ज़ा, जो मजमूआ[1] होता है चार हस्बे[2] ज़ेल पुर्ज़ों का। ([1]संग्रह, [2]निम्नलिखित)

1. पंखा।
2. मकड़ा।
3. घनचक्कर।
4. घन देखें तस्वीर घड़ी।

बाज का फ़नर (पु0) बाज को हरकत में लाने वाला पुर्ज़ा। देखें फ़नर।

बाल कमानी (स्त्री) बगैर लंगर वाले घंटे या घड़ियों को मुतहर्रिक[1] रखने वाला पुर्ज़ा जो बारीक और चपटे फौलादी तार का कुंडली की शक्ल का बना होता है और फ़नर की कुव्वत[2] से हरकत[3] करता है। यह कुंडली एक चक्कर के साथ वाबस्ता[4] होती है जिसको फूलचक्कर कहते है। लगाना, चढ़ाना के साथ बोला जाता है। ([1]गतिशील, [2]शक्ति, [3]गति, [4]जुड़ी)

देखें तस्वीर, घड़ी पे0–

बटन (पु0) लौंग। देखें कीलस।

बैर (पु0) वक़्त, ज़माना।

पास (पु0) रेत घड़ी की क़िस्म का औक़ात[1] शुमारी[2] का ज़र्फ़[3]। यह प्याले की शक्ल का पेंदे में बारीक सुराख बना हुआ ज़र्फ होता है। इसको पानी पर तैराते है इस तरह की पानी सुराख में से एक मुकर्ररिह[4] मिक़दार[5] में उसके अंदर दाखिल होता रहे और ठीक तीन घंटे में प्याला पानी से भरकर डूबे। इस तीन घंटे की मुद्दत[6] को जिसका एलान पासबान घड़ियाल बजाकर करता है इस्तिलाह[7] में पहेर कहते है। ([1]समय, [2]गणना, [3]पात्र, [4]सीमित [5]मात्रा, [6]अन्तराल, [7]तकनीकी रूप से)

पासबान (पु0) पहरवा, घड़ियाल बजा कर वक़्त का एलान करने वाला। घड़ियाली देखें पास।

पल (पु0) सानिया, मिनट एक घंटे का वक़्त (मुद्दत) का सांठवां हिस्सा। प्रयोग पल की पल में कुछ का कुछ हो जाता है।

पंसाल (पु0) घंटा रखने (खड़ा करने) की मुस्तहि[1] जगह जिस पर उसके लंगर का ठहराव बिल्कुल उमूदी[2] रहें। ([1]समतल, [2]लम्बवत)

पंखा (पु0) क़रीब दो इंच लम्बी एक इंच चौड़ी पत्ती की शक्ल का बाज का एक पुर्ज़ा। देखें बाज।

पहेर (पु0) दिन रात के वक़्त का आठवां हिस्सा। (तीन घंटे की मुद्दत)। देखें पास।

पहरा (पु0) निगहबानी, चौकीदारी जो एक मुकर्ररिह[1] वक़्त तक हो। ([1]निश्चित)

पहरवा (पु0) देखें पासबान।

पहरेदार (पु0) पासबान, चौकीदार, निगहबान, घड़ियाली।

फुल्ली (स्त्री) घंटे या घड़ी की सुइयों की दाब जो एक छोटी सी टिकली होती है और सुइयों को लाट के साथ जमाने को लगाई जाती है।

फुलचक्कर (पु0) देखें बालकमानी।

तारीख़ की सुई (स्त्री) तारीख़ बताने वाले घंटे या घड़की की तारीख़ का हिन्दसा[1] बताने वाली सुई। ([1]संख्या)

तील सिल्ली (स्त्री) नर्म क़िस्म के पत्थर की बनी हुई बारीक सलाई जिससे घड़ीसाज़ घड़ी के चक्कर का सुराख दुरुस्त करते हैं शायद लफ़्ज़ तीली से तील बना लिया है।

टाइमपीस (पु0) (अंग्रेजी) मेज पर रखने का छोटे क़िस्म का घंटा जो बाजदार और बगैर बाज दोनों तरह का होता है

सानिया (पु0) देखें पल।

जगार (पु0) गजर, अलार्म, नींद से होशियार करने या जगा देने वाली घण्टे की बाज लगाना, बजना के साथ बोला जाता है।

जतर–मतर (पु0) रसदगाह। देखें (पेशा–ए– मेआमारी) पे0 न0–

जेबी घड़ी (स्त्री) जेब में रखने की छोटी साख्त[1] की घड़ी। ([1]आकार)

चाल का फ़नर (पु0) देखें फनर।

चक्कर (पु0) घण्टे या घड़ी का हर एक पहिया। 1. लाट, चक्कर का मर्कज़ी[1] कीला। 2. गुर्चक (गुर्ज़क) लाट के दाँते, जिसमें दूसरे पहिये के दाँते पैवस्त होते हैं। इस तरह एक चक्कर की हरकत से घड़ी के कुल चक्कर हरकत में आ जाते हैं। 3. दाँता, चक्कर के दौर पर बराबर, मुसलसल[2] और यकसाँ[3] बने हुए कटाव। 4. चुल, चक्कर की लाट का बारीक बना हुआ सिरा। ([1]केन्द्रीय, [2]क्रमबद्ध, [3]एक जैसा)

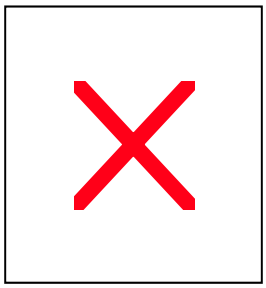

चूड़ी (स्त्री) घण्टे या घड़ी के ढकने के शीशे का धातु का बना हुआ हल्क़ा, जिसमें शीशा बिठाया जाता है। चढ़ाना, लगाना के साथ बोला जाता है।

चूल (स्त्री) देखें चक्कर। बिठाना के साथ बोला जाता है।

चेहरा (पु0) डायल (अंग्रेजी) चीनी घण्टे या घड़ी का वक़्त बताने वाला नक्शा जिसपर घण्टे, मिनट और सेकेण्ड के निशान बने होते हैं और सुइयाँ घूमती हैं।

चीनी (स्त्री) देखें चेहरा।

दाँता (पु0) देखें चक्कर–3।

दड़ी (स्त्री) प्लेट (अंग्रेजी) घोड़ी, घड़ी के चक्कर की चूल के सुराख़ का तवा या पर्दा। देखें तस्वीर घड़ी पे0

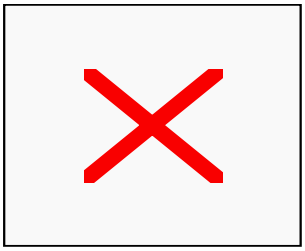

दस्ती घड़ी (स्त्री) हाथ की कलाई पर बांधने की बहुत छोटी बनी हुई घड़ी।

दक़ीक़ा (पु0) सेकंड (अंग्रेज़ी) पल या मिनट का साठवां हिस्सा।

धूप घड़ी (स्त्री) सूरज के निकलने से छिपने तक धूप या साये का उतार चढ़ाव बताने वाली बनी हुई जगह जिस पर धूप का साया देख कर वक़्त–शुमारी[1] की जाती है। इसलिए इस जगह को इस्तिलाहन[2] धूप घड़ी कहते है। ([1]समय की गणना, [2]तकनीकी रूप से) तस्वीर–169

रेत घड़ी (स्त्री) शीशे के बाहम[1] जड़े हुए ऐसे दो ज़र्फ़ जिनमें से एक में रेत भरा होता है और दूसरा खाली होता है। दोनों के जोड़ पर एक बारीक सुराख़ होता है जिसमें से रेत एक ज़र्फ़ से दूसरे ज़र्फ़ में गिरता है और एक मुअय्यन[2] वक़्त में खाली हो जाता है। इस अ़मल[3] से वक़्त–शुमारी[4] की जाती है और यह ज़र्फ़ रेत घड़ी कहलाता है। ([1]एक दूसरे में, [2]निश्चित, [3]प्रक्रिया, [4]समय की गणना) देखें तस्वीर पे0–

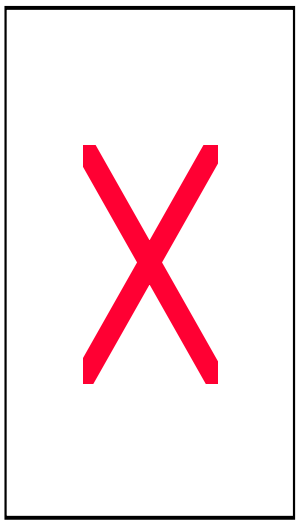

सेकंड (पु0) एक मिनट का साठवां हिस्सा।

सेकंड की सुई (स्त्री) घड़ी के चेहरे पर सेकंड का निशान बताने वाली सुई।

सुई (स्त्री) घंटे या घड़ी के चेहरे पर वक़्त बताने वाला कांटा जो आ़मतौर से तीर की शक़्ल का बना हुआ होता है। हर घंटे और घड़ी के चेहरे पर आमतौर से तीन सुइयाँ होती हैं उनमें जो सबसे बड़ी होती है वह डायल, मिनट के निशान बताती है इसको मिनट की सुई कहते है। दूसरी सुई जो पहली से ज़रा छोटी होती है, घंटे के निशान बताती है उसको घंटे की सुई कहते है और सबसे छोटी सेकंड के निशान बताती है और सेकंड की सुई कहलाती है।

शबे चिराग घड़ी (स्त्री) वह घड़ी जिसके चेहरे पर रेडियम का डायल मुरक़्कब[1] लगा होता है जिसकी वजह से अंधेरे में घंटे, मिनट और सेकंड के निशान दिखायी देते है। ([1]मिश्रण)

फ़नर (पु0) कमानी। घंटे या घड़ी का फौलादी[1] पट्टी का कुंडली नुमा बना हुआ पुर्ज़ा जिसके खुलने की

कुव्वत[2] से घड़ी के पुर्जे हरकत में रहते है जिसको घड़ी का चलना कहते है। आम घंटो में दो फ़नर होते है। एक वह जिसके कुव्वत से घंटा चलता है उसको चाल का फ़नर कहते है और दूसरा वह जिसकी कुव्वत से घंटा बजता है उसको बाज का फ़नर कहते है। इन दोनों फ़नरों के अलावा एक तीसरा फ़नर षि होता है जिसकी कुव्वत से गजर (अलार्म) बजता है इसको गजर का फ़नर कहते है। छोटी घड़ियों में अ़मूमन[3] चाल का एक ही फ़नर होता है। भरना फ़नर की लपेट चुस्त होना। प्रयोग फ़नर ष्रा हुआ है ज़्यादा कोकने से टूट जायेगा। खुलना फ़नर की लपेट ढीली होना। प्रयोग घड़ी के पुर्ज़ो की रफ़्तार से फ़नर आहिस्ता–आहिस्ता खुलता रहता है और कुव्वत–ए–लपक[4] हल्की पड़ जाती है। ([1]लोहे, [2]शक्ति, [3]प्रायः, [4]शक्ति)

कांटा (पु0) देखें **सुई**।

कुत्ता (पु0) फ़नर की लपेट को गिरफ़्त में रखने वाला आहनी[1] छोटा सा टुकड़ा जो फ़नर के कीले से मज़बूती के साथ पैवस्त[2] रहता है जो शायद इसीलिए इस्तिलाहन कुत्ता कहलाता है। ([1]लोहे का, [2]जुड़ा) देखें।

कमानी (स्त्री) देखें **फ़नर**।

कॉक (स्त्री) घंटे या घड़ी के फ़नर की लपेट जो चाबी के जरिये चुस्त की जाती है जिसको इस्तिलाह[1] में कॉक ष्रना कहते है। उतरना फ़नर की लपेट का ढीला होना। भरना, चढ़ना, देना फ़नर की लपेट चुस्त करना, तंग करना। ([1]तकनीकी रूप से)

कीलस (पु0) बटन, घुंडी, लौंग, जैबी या दस्ती घड़ी की कॉक ष्रने वाली चाबी जो घड़ी के साथ अंदर के रुख लगी रहती है और बैरूनी[1] सिरे में एक घुंडी जड़ी होती है जो इस्तिलाह[2] में बटन कहलाती है। ([1]बाहरी, [2]तकनीकी रूप से)
देखें तस्वीर। घड़ी।

गजर (पु0) देखें **जगार**।

गजर का फ़नर (पु0) देखें **फ़नर**।

गजर की सुई (स्त्री) वह सुई जो गजर लगने के वक़्त पर लगाई जाती है। यह सुई अ़मूमन[1] टाईम पीस में होती है। ([1]प्रायः)

गुर्जक/गुर्ज़क (पु0) देखें **चक्कर**।

घड़ी (स्त्री) छोटी साख़्त[1] का वक़्त बताने वाला आलः[2] या मशीन। ([1]बनावट, [2]यन्त्र) देखें तस्वीर।

घड़ियाल (पु0) बजने वाला बड़ा घंटा।

घड़ी साज़ (पु0) घड़ी व घंटे की मरम्मत करने वाला कारीगर।

घंटर (पु0) वक़्त बताने और बाज बजाने वाला बड़ी साख़्त[1] का आलः या मशीन। ([1]बनावट)

घंटा घर (पु0) शारेह[1] आम पर बुर्जी दार मीनार की वज़अ़[2] की इमारत जिसमें ऊपर बुलंदी पर घंटा नसब[3] होता है। ([1]राजमार्ग, [2]आकार, [3]जड़ा)

घन (पु0) हैंकड़ा बाज की मोगरी। (देखें बाज व तस्वीर घंटा)

घन चक्कर (पु0) बाज का कुंडली नुमा बना हुआ तार जिस पर घन की ज़र्ब[1] लगती है। ([1]चोट)
देखें बाज

घुंडी (स्त्री) देखें **कीलस**।

घोड़ी (स्त्री) देखें **दड़ी**।

लाट (स्त्री) **मील**। देखें **चत्तर–1**।

लबलबी (स्त्री) घंटे के लंगर को मुतहर्रिक[1] रखने वाला पुर्ज़ा। ([1]गतिशील) देखें तस्वीर घंटा।

लंगर (पु0) घंटे के पुर्ज़े को हरकत देने वाला और फ़नर की खोल का मुहाफ़िज़[1] पुर्ज़ा। ([1]संरक्षक)
देखें तस्वीर घंटा

लौंग (स्त्री) देखें **कीलस**।

मक्कड़/मकड़ा (पु0) बाज के पुर्ज़ों में का एक पुर्ज़ा जिसकी हरकत से तमाम पुर्ज़े हरकत में आते हैं। देखें बाज व तस्वीर घंटा।

मिनट (पु0) एक घंटे का साठवां हिस्सा।

मिनट की सुई (स्त्री) देखें **सुई**।

मोगरी (स्त्री) देखें **घन**।

मील (स्त्री) देखें **लाट**।

हैकड़ा (पु0) देखें **घन**।

पेशा–ए–चिलमन साज़ी

बद्धी (स्त्री) देखें **चिलमन**। प्रयोग।

बद्धी दार चिलमन (स्त्री) देखें **चिलमन**। प्रयोग।

पटरी की चिलमन (स्त्री) देखें **चिलमन** प्रयोग।

पटिया (पु0) देखें **चिलमन**। प्रयोग।

तरादार तीली (स्त्री) देखें **तीली**। प्रयोग।

तरादार चिलमन (स्त्री) देखें **चिलमन**। प्रयोग।

तीली (स्त्री) बांस की पतली चौकोर और हस्बे–ज़रूरत[1] लम्बी तराशी हुई सींक जो चिलमन, टोकरी और इसी क़िस्म की दूसरी चीज़े बनाने के लिए तैयार की जाती है। तरादार तीली। बांस की छिलकेदार तीली यानी बांस के ऊपर के हिस्से की तीली जो गूदे की तीली की ब–निस्बत[2] ज़्यादा मज़बूत और पाये दार होती है। असल लफ़्ज़[3] तरहदार बमाने खुशनुमा[4] है। दू रंग तीली। बांस के गूदे यानी अंदर के रुख के हिस्से की बनी हुई तीली। ([1]आवश्यकतानुसार, [2]तुलना में, [3]शब्द, [4]सुन्दर)

ठड्डा (पु0) देखें चिलमन। प्रयोग।

चिक (स्त्री) चिलमन। (देखें चिलमन)।

चिलमन (स्त्री) बांस की तीलीयों का बुना हुआ पर्दा जो अद्ना[1] आला[2] क़िस्म का मामूली और खुशवज़अ[3] बनाया जाता है। बुनना, लटकाना, बांधना के साथ बोला जाता है। 1–बद्धी, चिलमन की दरमियानी[4] रंगीन पट्टी। 2–बद्धी दार चिलमन, रंग रंग की पट्टी दार चिलमन या वह चिलमन जिसका दरमियानी हिस्सा किसी क़िस्म का रंगीन हो और बतौर बद्धी मअ़लूम हो। 3–पड़ी की चिलमन, चिपटी तीलीयों की बनी हुई चिलमन। 4–पटिया, चिलमन की मज़बूती और पायदारी[5] के लिए दरमियान में डाली हुई मोटी खपच्ची। 5–तरादार चिलमन, छिलके दार तीली की जिसको तरादार कहते है, चिलमन। 6–ठड्डा। चिलमन का सरबंद बांस की मोटी खपच्ची जो चिलमन के सिरे पर तीलीयों के सरबंद के तौर पर बांधी जायें। 7–दूरंग चिलमन। बांस के गूदे की तीली की बली हुई चिलमन। ([1]तुच्छ, [2]उच्चकोटि, [3]सुन्दर, [4]बीच में, [5]स्थानापन)

चिलमन साज़ (पु0) चिलमन बनाने वाला कारीगर।

दूरंग (पु0) (दूर+अंग) बांस के छिलके के अंदर का हिस्सा जिसकी मामूली काम के लिए तीली बनाई जाती है।

दूरंग तीली (स्त्री) देखें तीली प्रयोग।

दूरंग चिलमन (स्त्री) देखें चिलमन प्रयोग।

डींगरी (स्त्री) बांस की तीलीयां तराशने का चोबी[1] कैंडा या सांचा जो तीली की मोटान के माफ़िक़[2] खांचे कटा हुआ तख्ता होता है। ([1]लकड़ी, [2]अनुसार)

ढीमा (पु0) चिलमन बुनने की डोरी का बड़ा गोला जो किसी पत्थर के टुकड़े पर बना लिया जाता है ताकी वज़न से लटका रहें। फेंकना के साथ बोला जाता है। चिलमन बुनने के सूत के गोले को चिलमन बुनते वक़्त एक तरफ से दूसरी तरफ पलटना ताकि चिलमन की तीलीयों पर डोरी की आँट[1] लगती जाये। प्रयोग अभी ढीमा फेंकना तो जानता नहीं चिलमन क्या बनायेगा। ([1]बल, पेंच)

कतरवा (पु0) चिलमन का बग़ली रुख़ जिस पर गोट सी जाती है और बुनाई से उंगल दो उंगल बाहर निकला रहता है इस्तिलाह[1] में कतरवा कहलाता है। ([1]तकनीकी रूप में)

पेशा–ए–खरादी (ख़राती)

अड्डी (स्त्री) लकड़ी खरादने यानी खरादी काम करते वक़्त औज़ार को सहारे रहने वाली आहनी[1] पट्टी। देखें तस्वीर ख़राद। ([1]लोहे)

बूरना (क्रिया) बेलन वग़ैरा के लिए गोलाई डोलाने को खराद पर लकड़ी की मोटी मोटी छिलाई करना।

बेड़ी (स्त्री) किसी लम्बी लकड़ी या बेलन के तूल[1] में सुराख करते वक़्त नैड़े (लम्बा बरमा) के फले को एक जगह क़ायम रखने वाला गोल सुराखों दार तख्ता जिसकी वजह से नैड़ा (एक खास क़िस्म का बरमा) इधर उधर नहीं हो सकता लगाना, डालना के साथ बोला जाता है। ([1]लम्बाई)

पूड़ (स्त्री) थाप। खरादी पाये का, सुम की वज़अ़[1] का खराद किया हुआ तला टेंक या थाप। देखें तस्वीर खरादी पाया। पे0 ([1]आकार)

तमाचा (पु0) खरादी पाये का बग़ैर खराद किया हुआ ऊपर का सिरा जो पट्टियों की चूलें बिठाने को 4–5 इंच छोड़ दिया जाता है। देखें तस्वीर पाया।

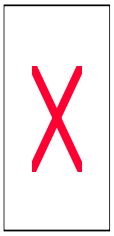

थाप (स्त्री) देखें पूड़।

चड़ी (स्त्री) तख़्ते के क़िस्म की या कोई बहुत छोटी चीज़ को जिसपर कमानी न चढ़े खराद करने के लिए एक छोटा मुआविन[1] बेलन जिसके सिरे पर उस चीज़ को जमा कर काम किया जाये। ([1]सहायक) देखें तस्वीर खराद

चुग्गा (पु0) खराद के कीले की नोंक के निशान जो बेलन के पाये के सिरों पर खराद पर चढ़ने से पड़ जाते है। देखें खरादी पाये।

चोंच (स्त्री) खराद का नुकीला आहनी[1] कीला जो एक मुढडी में तीरबंद जड़ा हुआ कारीगर के बायें हाथ की तरफ रहता है। ([1]लोहे का)

चीरना (पु0) बेलन या पाये के किसी हिस्से में गहराई खरादने के

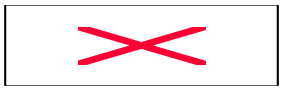

छोटे बड़े धार दार आहनी[1] औज़ार। ([1]लोहे का)

चीरनी (स्त्री) खरादी पाये का खरादा हुआ गहराव जो दो क़िस्म की बनावटों के दरमियान[1] हो। देखें तस्वीर खरादी पाया ([1]मध्य)

ख़र्राद (खराद) (स्त्री) देखें खराद।

ख़रादी (ख़रातीी) (पु0) देखें खरादी।

धुरा (पु0) खराद करने का कोहनी की शक्ल का बना हुआ ठिया जो चोंच के मुकाबले में कारीगर के दायें हाथ की तरफ रहता है। इसमें षि एक नुकीला कीला लगा होता है इसके ऊपर चोंच के दरमियान[1] खराद का काम किया जाता है। ([1]मध्य) देखें तस्वीर खराद

रंगाठा (पु0) लाख के रंग को लकड़ी पर पैवस्त[1] करने

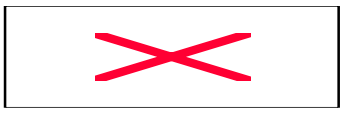

की छोटी चोबी[1] चिफ्ती इसकी रगड़ से लाख लकड़ी पर फैलती और जम जाती है। ([1]चिपकाने का, [2]लकड़ी का)

सुराही (स्त्री) मछली, खरादी पाये का दरमियानी[1] गऊ दुम हिस्सा। देखें तस्वीर खरादी पाये। ([1]मध्य)

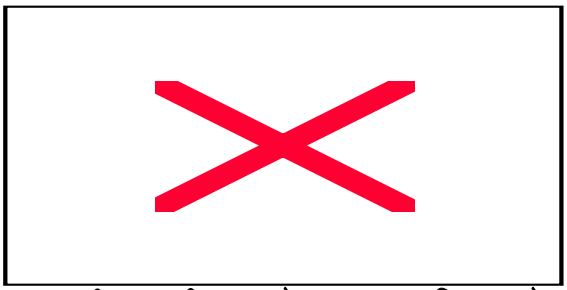

खराद (स्त्री) लकड़ी खरादने का अड्डा जिसपर बेलन की क़िस्म की चीज़े तैयार की जाती है। आमतौर से लकड़ी के गोल सुतून, मेंज़, पलंग वग़ैरा के गोल क़िस्म के पाये तैयार किये जाते है। करना, उतारना के साथ बोला जाता है। (खराद अरबी लफ्ज़[1] खर्रात़ का बिगड़ा हुआ है फ़ारसी में खर्राद लिखा

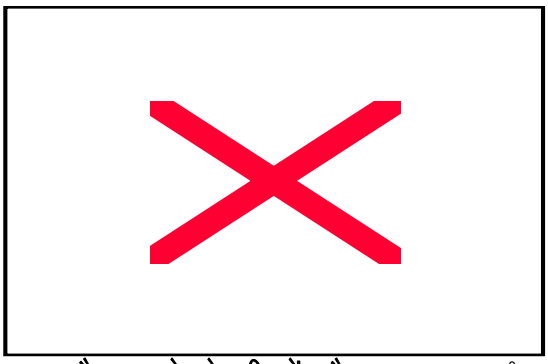

जाता है जो अरबी लफ्ज़ खर्रात़ का मुफ़र्रस[2] है देहली और नवाहे देहली में ख़ैरात़ तलफ्फुज़[3] करते है। क़स्बात और पूरब के इलाक़े में खराद बोलते है। इसलिए फ़ारसी अ़रबी तलफ्फुज़ और मानों से इख्तिलाफ़[4] की वजह से लफ्ज़ खराद को जो आम तौर से कारीगर बोलते है इस्तिलाह[5] में इख्तियार[6] किया गया है। ([1]शब्द, [2]फारसीकरण, [3]उच्चारण, [4]विरोधाभास, [5]तकनीकी रूप से, [6]अनुसरण)

खरादी (ख़रादी) (पु0) खराद का काम करने वाला कारीगर। देखें खराद।

खरादी पाया (पु0) खराद पर तैयार किया हुआ बेलन की शक्ल का पाया जो मेज़, कुर्सी और पलंग के लिए तैयार किया जाता है।

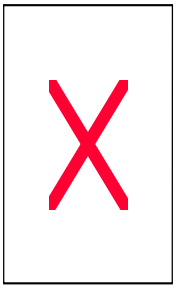

गोला (पु0) लट्टू, मटकी, खरादी पाये में लट्टू की वज़अ[1] की बनी हुई शक्ल। ([1]आकार) देखें तस्वीर खरादी।

लट्टू (पु0) देखें गोला।

लच्छी (स्त्री) निहा (निहानी) खराद पर इब्तिदाई[1] और मोटी छिलाई करने का लम्बे फले का औज़ार। पंजाब में लच्छी और पूरब में निहा कहलाता है जो निहरनी का मुखफ्फ़फ़ है। ([1]प्रारम्भिक, [2]संक्षिप्त रूप)

लकोटा (पु0) (लाख+कोट) लाख के रंग की तह जो खरादी पाये वग़ैरा पर खराद पर चढ़ायी जाये।

माठना (पु0) खराद पर लकड़ी को

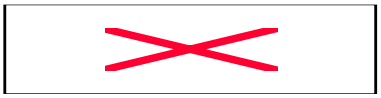

छीलकर साफ और चिकना करना।

मागला या मरगिल्ला (पु0) खराद के अड्डे के धुरे का नुकीला कीला। देखें तस्वीर खराद।

मटकी (स्त्री) देखें गोला।

मछली (स्त्री) देखें **सुराही।**
मरगिल्ला (पु0) देखें **मागला।**
नरैठा/नवड़ा (पु0) **लकड़ी या बांस की लम्बी .....? पे0 174 के बीच में सुराख करने का धारदार मुँह का लम्बा तकला।**
नहा (पु0) देखें **लच्छी।**

पेशा–ए–सिलावट व खटबुना

तमहीद!

अहले[1] हिन्द में बढ़ई का काम तीन गिरोह में तकसीम[2] था एक बार बरदारी और जंग के लिए गाड़ीयां बनाने वाला जो सुतार कहलाता था दूसरा आलात–ए–काश्तकारी[3] तैयार करता था खाती के नाम से मौसूम[4] था तीसरा गिरोह सामान–ए–ख़ानादारी[5] अज़क़िस्म[6] संदूक, तख़त, चौकी, सेज (पलंग, खाट) वग़ैरा की तैयारी का काम अंजाम देता था घरेलू सामान–ए–आसाइश[7] में उस वक़्त की ज़रूरत के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा ज़रूरी सामान संदूक़ तख़त, पलंग वग़ैरा था उस सामान के बनाने वाले कारीगर सिलावट के नाम से मशहूर थे चूंकि खटबुना षि उनका शरीक–ए–कार[8] होता था इसलिए उन दिनों पेशेवरों की इस्तिलाहात[9] एक जगह पेश–ए–सिलावट व खटबुने के उनवान[10] के तहत लिखना मुनासिब हुआ। ([1]भूमिका, [2]विभाजित, [3]कृषि यन्त्र, [4]सम्बोधित, [5]गृह उपयोगी, [6]जैसे, [7]आराम की वस्तुएँ, [8]सहयोगी, [9]तकनीकी शब्दाबली)

उतरावन (स्त्री) देखें मायीन।

अदवान (स्त्री) (संस्कृत अधस) पिंगायत; पखनाइत, औदाऊँ। चारपाई के झिलंगे को टांगने वाली रस्सी जो मायीन और सेरवे के दरमियान[1] डालकर खींच दी जाती है। **डालना, खींचना, तानना** के साथ बोला जाता है। **देखें** तस्वीर पलंग। ([1]मध्य)

अधस (स्त्री) देखें अद्वान। अधस मतरूक[1] और अद्वान मअ़रूफ[2] है। ([1]परित्यक्त, [2]प्रचलित)

आराम कुर्सी (स्त्री) देखें कुर्सी। **प्रयोग**

आड़ गोड़ (पु0) मोटी रस्सी का मज़बूत बंद जो पलंग के दो मुख़ालिफ़ पायों के दरमियान[1] कान (खूंट) निकलने की रोक के लिए बांधा जाये। ([1]मध्य)

अड़वा (पु0) देखें संदूक़। **प्रयोग।**

इक बद्दी झिलंगा (पु0) इक तारा झिलंगा।

अल्मारी (स्त्री) किताबें, कपड़े और दीगर ज़रूरियात की चीज़े रखने के संदूक़ की मानिंद[1] ख़ाना दार बनी हुई जगह। लकड़ी की मुन्तक़िल[2] होने वाली या मकान की दीवार में मुस्तक़िल[3] क़ायम रहने वाली मुख़्तलिफ़[4] वज़अ़[5] की छोटी बड़ी अद्ना[6] और आला बनाई जाती है। जदीद[7] वज़अ़ में लोहे की षि बनाई जाने लगी है। ([1]तरह, [2]स्थानान्तरित, [3]हमेशा, [4]विभिन्न, [5]आकार, [6]तुच्छ, [7]आधुनिक)

- बग़ैर पटों की दराज़दार अल्मारी इस्तिलाहन[1] शष दरा कहलाती है जिसमें कपड़े रखने की चार बड़ी और दो छोटी दराज़े होती है शायद यही वजह–तस्मिया[2] है। ([1]तकनीकी रूप से, [2]नामकरण का कारण)

औदाऊँ (स्त्री) देखें अद्वान।

ऊल (स्त्री) पलंग के पाये की चूल। सिलावट और खटबुनों की इस्तिहालन में चूल कहलाती है। **मसल–**ऊल में चूल।

ऐंठा या ऐंठना (पु0) टिकोली, फेरी, ढेरा, रस्सी बट। बान बट और खटबुनों का बान और रस्सी बटने का चरख़ी की वज़अ़[1] का औज़ार।

- अद्वान के फेरों को बल देने वाला डंडा। रस्सी या इसी क़िस्म की चीज़ को तानने के लिए उसके फेर में लकड़ी का डंडा या इसी क़िस्म की कोई चीज़ डालकर लपेट देने को ऐंठना कहते है। उसी से ऐंठा और ऐंठना इस्मेआल:[2] बना लिया है। ([1]आकृति, [2]यन्त्रों के नाम)

बान (पु0) मूंज। एक क़िस्म की लम्बी पत्ती की घांस की बटी हुई डोरी जो आ़म तौर से चारपाई बुनने और रस्सीयाँ बुनने के काम आती है।

बाध (स्त्री) बान की बटी हुई मोटी रस्सी लेकिन यह लफ़्ज़ आ़म तौर से गाड़ी बान चमड़े की रस्सी के लिए बोलते हैं।

बखेल (स्त्री) दरख़्त के बक्कल के रेशों की बटी हुई रस्सी।

बनबट (पु0) (बान+बटना) बान बटने वाला मज़दूर।

बैंडी (स्त्री) बान का बड़ गोला। खट बुनों की इस्तिलाह[1] में बैंडी कहलाता है जो चारपाई बुनने के लिए बना लिया जाता है। **बनाना** के साथ बोला जाता है। ([1]तकनीकी भाषा)

षभर (पु0) देखें मूँज।
भींच (स्त्री) देखें धाँस।
पाखरी/पालखरी (स्त्री) पलक्डी। **देखें** पड़वाया।
पांयती (स्त्री) पलंग का आख़िरी रुख़ यानी सिरहाने के मुक़ाबिल[1] का रुख़ जिस तरफ पैर फैलाये जाते है। **प्रयोग** पलंग के पायती नौकर बैठा पंखा हिला रहा था। ([1]सामने)
पट्टी (स्त्री) पलंग की बग़ली लकड़ी यानी पलंग के चौखटे की तूल की लकड़ी। (जमअ़[1] पट्टियां) **देखें** तस्वीर पलंग। ([1]बहुवचन)
पड़वाया (पु0) पाखरी, पलक्ड़ी। पलंग को ज़रा ऊँचा करने के लिए पाये के नीचे लगायी जाने वाली टेकन। (जमअ़[1] पड़वाये) अक्सर सरहाने की तरफ से पलंग को ज़रा ऊँचा रखने को लगाये जाते है। **लगाना, रखना, ष्रना** के साथ बोला जाता है। **देखें** तस्वीर पलंग। ([1]बहुवचन)
पखनाइत (स्त्री) अर्दावन, पंगायत (**देखें** अद्वान)
पलका (पु0) पलंग।
कहावत–नाक की नकटी बूजी कान .....? पे0–179, पलका बैठ मंगावे पान।
पलंग (पु0) पलका, चारपाई। चारदासनी, खाट, सेज। रात को लेटने और दिन को बरवक़्त ज़ुरूरत लेटने, बैठने की आरामगाह जो बांस, लकड़ी और लोहे को पायोंदार चौकटे नुमा बनाकर हस्बे–हैसियत[1] बान, सुतली या निवाड़ से बुन ली जाती है। जदीद[2] वज़अ़[3] में निहायत आला और खुशनुमा[4] बनाये जाने लगे है जिनका झिलंगा आहनी[5] जाल का बना हुआ बहुत लपक दार होता है। इसको मसहरी के नाम से मौसूम[6] करते है। चारपाई को पूरब में पलंग और पश्चिम में चारपाई या खाट कहते है लेकिन इस्तिलाहे–आम[7] में अद्ना[8] क़िस्म का पलंग चारपाई और खाट कहलाता है। **देखें** तस्वीर। **जड़ना, सालना** पलंग या चारपाई का चौकटा तैयार करना। **बुनना** पलंग या चारपाई के हौदे पर बांद, सुतली या निवाड़ से लपेट कर सतह बनाना। ([1]सामर्थानुसार, [2]आधुनिक, [3]आकार, [4]सुन्दर, [5]लोहे, [6]सम्बोधित, [7]आमभाषा, [8]मामूली)

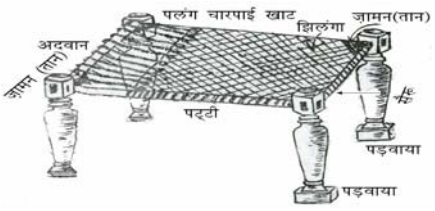

पलंग साज़ (पु0) देखें सिलावट।
पंगायत (स्त्री) देखें अर्दावन।
पीढ़ा (पु0) मुरब्बअ़[1] शक़्ल की छोटी चौकी की वज़अ़[2] पर, पलंग की तरह तैयार की हुई निशस्त गाह[3]। पंजाब में इसका रिवाज घर–घर है और यह लफ़्ज़ भी पंजाबी है अ़मूमन औरतें घर में काम काज में बैठने को इस्तेमाल करती है। पंजाब में दरख़्त को पेड़ और मचान को पीढ़ा कहते हैं। बाज़ मुक़ाम[4] पर मेमारों[5] के बैठने को षे पीढ़ा कहते है। मामूल से छोटा पीढ़ा, पीढ़ी कहलाता है। ([1]चौकोर, [2]तरह, [3]बैठने की जगह, [4]स्थान, [5]राजगीर)
पीढ़ी (स्त्री) इस्मे–तस्ग़ीर। **देखें** पीढ़ा।
फूल दार झिलंगा (पु0) देखें झिलंगा।
फेरी (स्त्री) देखें ऐंठा।
तान (स्त्री) चुग्गा। (**देखें** ज़ामिन)
तिपाई (स्त्री) तीन पायों की छोटी क़िस्म की मेंज़ इस्तिलाहे–आम[1] में हर क़िस्म की छोटी मेंज़ को तिपाई कहते है। ([1]आ़म भाषा)
तख़्त (पु0) पलंग की वज़अ़[1] पर लकड़ी के तख़्तो की बनी हुई निशस्त गाह[2]। छोटे बड़े अद्ना[3] और आ़ला मुख्तलिफ़[4] क़िस्म के बनाये जाते है इसमें बाज़ तकियेदार होते है यानी उनमें कमर लगाने को टेका बना होता है।
- मामूल से छोटे मुरब्बअ़[5] शक्ल के तख़्त को चौकी कहते है। ([1]आकृति, [2]बैठने की जगह, [3]मामूली, [4]विभिन्न, [5]चौकोर)

तिकोली (स्त्री) देखें ऐंठा।
तह बद्दी झिलंगा (पु0) देखें ( ) तह तारा झिलंगा।
तह तारा झिलंगा (पु0) देखें झिलंगा। **प्रयोग**
तकिया (पु0) कुर्सी, तख़्त। मसहरी में कमर लगाकर बैठने को बनी हुई टेक।
जून (स्त्री) घाँस वग़ैरा की बनी हुई मोटी रस्सी। बावर्चियों की इस्तिलाह[1] में बर्तन मांझने की रस्सी या नारियल के रेशों की बनी हुई झोंज को जूना कहते है। ([1]भाषा)
झिलंगा (पु0) पलंग (चारपाई) का बन या सुतली का बना हुआ जाल उर्फ़े–आ़म[1] में बग़ैर खिंचे हुए को जिसमें अद्वान न पड़ी हो या छिदरा और बहुत ढीला

हो, झिलंगा कहते है। **बुनना, तानना** के साथ बोला जाता है। (**देखें** तस्वीर। पलंग–179)

- झिलंगे की बुनाई, एक तारी, दो तारी, सह तारी वग़ैरा (यानी बान की इकहरी, दोहरी, तिहरी वग़ैरा लड़ों से) हस्बे–ज़रूरत[2] की जाती है जिसको इस्तिलाह[3] में इक बद्दी, दो बद्दी, सह बद्दी वग़ैरा–वग़ैरा बुनाई या झिलंगे के नाम से मौसूम[4] करते है।
- चौपड़ का झिलंगा और छड़ी का झिलंगा। ऐसा झिलंगा जिसकी बुनावट में चौकड़ी या खजूर छड़ी के निशान बने हों। **होना, बुनना** पलंग की बुनावट का ढ़ीला हो जाना, बुनावट के बल खराब हो जाना। ([1]आम बोलचाल, [2]आवश्यकतानुसार, [3]तकनीकी रूप से, [4]परिभाषित) **प्रयोग** अदवान टूटने से पलंग झिलंगा हो गया। **प्रयोग** पट्टी सैरवे टूट गये झिलंगा रह गया।

चार बद्दी झिलंगा (पु0) चार तारी झिलंगा। **देखें** झिलंगा। **प्रयोग**।

चारपाई (स्त्री) देखें झिलंगा।

चार तारी (स्त्री) देखें पलंग।

चार तारी झिलंगा (पु0) देखें चार बद्दी झिलंगा।

चार दासी (स्त्री) देखें पलंग।

चंदवा (पु0) देखें संदूक़। **प्रयोग**।

चौकी (स्त्री) देखें तख़त।

चौपड़ का झिलंगा (पु0) देखें झिलंगा। **प्रयोग**।

छप्पर पलंग (पु0) देखें छपर खट।

छपर खट (पु0) छपर पलंग, छत गीरी वाला पलंग यानी वह पलंग जिस पर शबनमी लगाने को चार डंडों के ऊपर चौकटा लगा हो। **देखें** तस्वीर पलंग।

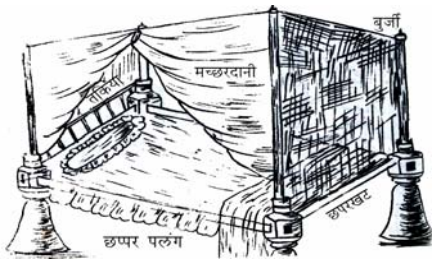

छड़ी का झिलंगा (पु0) देखें झिलंगा। **प्रयोग।**

दो बद्दी झिलंगा (पु0) देखें झिलंगा। **प्रयोग।**

दो तारी झिलंगा (पु0) देखें दो बद्दी झिलंगा।

धाँस (स्त्री) षिंच। चारपाई के पाये की चूल में ठुकी हुई पच्चर जो चूल को पच्ची करने के लिए हस्बे ज़रूरत लगाई जाती है। **लगाना, ठोकना** के साथ बोला जाता है।

ढ़ेरा (पु0) देखें ऐंठना।

रस्सी बट (पु0) बान की रस्सियां बटने वाला मज़दूर।

साल (स्त्री) चारपाई के पाये की चूल यानी वह सुराख़ जो पट्टी सैरवे के सिरे फंसाने को बनाये जायें।

साल्ना (क्रिया) पलंग, तख़त और इसी क़िस्म की दूसरी चीज़ों की जड़ाई करना। उनके अज़्ज़ा[1] के जोड़ मिलाना। ([1]अंगों)

सरहाना (पु0) पलंग का सर की तरफ का रुख़, सदर रुख़।

सिलावट (पु0) पलंग, तख़त और इसी क़िस्म का दूसरा आसाइशी[1] सामान बनाने वाला कारीगर। (**देखें** पेशा–ए–सिलावट की तमहीद) पे0। ([1]आरामदायक)

सिंघासन/सिंहासन (पु0) देखें तख़त। छोटी चौकी जो हिंदुओं में पूजा के लिए मख़सूस[1] होती है जैसे–नमाज़ की चौकी।

सेज (स्त्री) पलंग, मसहरी यह लफ़्ज़[2] अब आम इस्तेमाल में कम आता है। ([1]विशिष्ट, [2]शब्द)

सैरवा (पु0) पलंग के चौकटे की अर्ज़[1] की लकड़ी यानी सरहाने या पायती की लकड़ी। (जमअ़[2] सैरवे) **देखें** तस्वीर पलंग। पे0। ([1]चौड़ाई, [2]बहुवचन)

शष दरा (पु0) देखें संदूक़ और अल्मारी। 2–कपड़े रखने की छह ख़ानों की अल्मारी।

संदूक़ (पु0) कपड़ा, बर्तन व दीगर सामाने ज़रूरियात–ए–ज़िंदगी रखने का लकड़ी, धातु या चमड़े का बना हुआ ढकने दार ख़ाना। छोटा, बड़ा, अद्ना[1], आला पिटारे नुमा और चौकोर हर क़िस्म का बनाया जाता है। मामूल से छोटे को संदूक़्चा और संदूक़्ची कहते है। **1.** अड़वा, संदूक़ के बग़ली पाखे (जमअ़[2] अड़वे) **2.** चंदवा, संदूक़ के ऊपर या नीचे का पटाव (जमअ़[3] पटवे) ([1]तुच्छ, [2]बहुवचन, [3]बहुवचन)

संदूक़्चा (पु0) इस्मे–तस्ग़ीर[1]। **देखें** संदूक़।

संदूक़्ची(स्त्री) इस्मे–तस्ग़ीर, **देखें** संदूक।

ज़ामिन (पु0) तान, चुग्गा। पलंग की पट्टी और सैरवे के जोड़ पर, जिसके दरमियान[2] पाया होता है, जड़ाई को गुनिया में ज़ाविया–क़ाइमा[3] में रखने के लिए जड़ी हुई लकड़ी या लोहे की बनी हुई आड़। (**देखें** तस्वीर पलंग) ([1]संक्षिप्त रूप, [2]मध्य, [3]90°)

कान (पु0) पलंग के कोने का बद्गुनिया पन यानी जब कोना बद्गुनिया हो जाता है (ज़ाविया–क़ाईमा[1] की शक्ल नहीं रहता) तो पलंग के कोने की इस सूरत को इस्तिलाह[2] में कान और कान निकलना कहते है। ([1]90°, [2]तकनीकी रूप से)

कुर्सी (स्त्री) सतह ज़मीन से किसी क़दर ऊँची बनी हुई जगह लेकिन उर्फ़े–आम[1] में ऐसी निशस्त–गाह[2] के लिए बोला जाता है जिस पर एक आदमी पैर लटका कर आराम से बैठ सके। आम तौर से कुर्सी में कमर लगाने को तकिया और कोहनियाँ टिकाने को हत्थियाँ लगी होती है। ऐसी बड़ी कुर्सी जिसपर फैल कर बैठा या लेटा जा सके, आराम कुर्सी कहलाती है। ([1]आम बोलचाल, [2]बैठने की जगह)

कंसाल (पु0) पलंग के पाये का सुराख़।

कूच कट खाट (स्त्री) छोटी खटिया जिसपर पूरे क़द के आदमी के पैर न फैल सकें यानी खाट की लम्बान से बाहर निकल जायें और लेटने में तकलीफ हो।

कूच कट खटिया बत कट जोये।
मरे नहीं तो अध्मरा होये।।

(बात काटने वाली जोरू और पिंडलियां काटने वाली चारपाई अध्मरा कर देती है)

खाट (स्त्री) देखें पलंग।

खट बुना (पु0) पलंग, चारपाई बुनने वाला पेशेवर मज़दूर।

खट साल (पु0) चारपाइयाँ बनाने वाला कारीगर।

खटोला (पु0) इस्में–तस्ग़ीर[1] मामूल से छोटी खाट। (**देखें** खाट)

खटिया (स्त्री) इस्में–तस्ग़ीर[2]। **देखें** खाट। खाट और खटिया एक ही बात है मगर खटिया तहक़ीरी कल्मा[3] है। ([1–2]संक्षिप्त रूप, [3]निन्दात्कम)

खुर्री खाट (स्त्री) बग़ैर बिछौने की खाट, पलंग, चारपाई वग़ैरा।

माचा/माँचा (पु0) ऊँचा और बड़ा गवारू पलंग जो गाँव की चौपाल में आये गये के बैठने को पड़ा रहता है। (लफ़्ज़ मचान से मांचा बना है) (**देखें** मचान। पेंशा नज्जारी)

मानी/मायीं (स्त्री) झिलंगे के अख़ीर में सिरे पर बुनाई के फंदो में पड़ी हुई चौबली मोटी रस्सी जिसमें झिलंगा तानने को अद्वान खींची जाती है। (**देखें** तस्वीर पलंग) मानी सिर्फ बान और सुतली के झिलंगे में होती है।

मुर्ग़ा बेंढी (स्त्री) बान का लम्बोत्रा बैज़वी शक्ल का बना हुआ गोला जिसके सिरों पर बान की अंटी के डोरे जिन पर वह बनाया जाता है। मुर्ग़ की दुम की तरह निकले रहते है। **देखें** बेंढ़ी।

मृग सिंहासन (पु0) देखें तख़्त। ऐसा तख़्त जिनके पायों के सिरों पर हिरन की सूरत बनी हुई हो।

मसहरी (स्त्री) जदीद वज़अ़[1] का तकिये दार खूबसूरत बना हुआ पलंग। **देखें** तस्वीर पलंग। ([1]आधुनिक आकार)

मूंज (स्त्री) षभर। एक क़िस्म की लम्बी रेशे की घाँस जिससे बान बनाया जाता है। बाज़ मुक़ामात[1] पर बान को मजाज़न[2] मूंज कहते है। ([1]स्थानों, [2]लक्षितार्थ)

मूंज, बखौता, (बक्कल) और गंवार।
ज्यूं–ज्यूं कूटो त्यूं–त्यूं सवार।।

मोंढ़ा (पु0) सरकंडे की बनी हुई कुर्सी की वज़अ़[1] की निशस्त–गाह[2]। मामूल से छोटे को मुंढ़िया कहते है।

([1]आकार, [2]बैठने की जगह)

मोंढ़ा तकियेदार

मोंढ़ा तकिये दार (पु0) कुर्सी नुमा बना हुआ मोढ़ा।

मुंढिया (स्त्री) देखें मोढ़ा।

मेज़ (स्त्री) कुर्सी पर बैठकर लिखने, खाने वग़ैरा की चौकी जो अ़मूमन[1] ढाई फिट ऊँची बनाई जाती है। छोटी, बड़ी, अद्ना[2], आला मुख्तलिफ़[3] क़िस्म की मामूली और खुशनुमा[4] बनाई जाती है। ([1]प्रायः, [2]निम्न, [3]विभिन्न, [4]सुन्दर)

निगारी औन (स्त्री) लहरिया दार पड़ी हुई अद्वान जिस तरह नक़्क़ारह की थाप की तानी खिंची हुई होती है। नक़्क़ारे से निगारी बन गया है। इस वज़अ़[1] की अद्वान डालने से झिलंगा जल्दी ढीला नहीं होता। ([1]आकार)

पेशा–ए–फ़र्राशी

उगाल दान (पु0) पान या किसी दूसरी खाई हुई चीज़ का थूक डालने का ज़र्फ़[1] जो फ़र्श पर क़रीने[2] से रखा जाता है। ([1]बर्तन, [2]व्यवस्थित)

आइना बंदी (स्त्री) मकान की आराइश[1] व सजावट जो आइनों और इसी क़िस्म की दूसरी खुशनुमा चीजों से की जाये। **करना** के साथ बोला जाता है। ([1]साज–सज्जा)

बिछौना (पु0) बि स्तरह, ज़मीन, पलंग, तख़्त वग़ैरा पर लेटने बैठने के लिए बिछाने का कपड़ा या कपड़े। लफ़्ज़ बिछौना आमतौर से पलंग पर बिछाने के कपड़ो के लिए के लिए इस्तेमाल होता है।

बिस्तरह (पु0) देखें बिछौना।

बग़ल तकिया (पु0) सोते वक़्त बग़ल में रखने का तकिया। (**देखें** तकिया)

बोरिया (पु0) देखें चटाई।

पा अंदाज़ (पु0) देखें पायदान।

पायदान (पु0) पैर टिकाने की चीज़ और मजाज़न[1] बुर्श की वज़अ़[2] के बने हुए गदैले को कहते है जो पैर साफ़ करने को चौखट की दहलीज़ (कमरे के दरवाज़े) के सामने रखा जाता है। ([1]लक्षितार्थ, [2]प्रकार)

चित्र दिया जा सकता है।

पटा पटी का पर्दा (पु0) तक पोश। आराइशो[1]–नुमाइश का खुश[2] रंग व खुश वज़अ़[3] पर्दा या पर्दे जो कमरो के दरवाज़ो पर निगाह की ओट और खुशनुमाई[4] के लिए टिकाया जाये। ([1]साज–सज्जा, [2]अच्छा, [3]आकृति, [4]सुन्दरता)

पर्दा (पु0) मकान के दरवाज़े की ओट या धूप और बारिश से बचाव के लिए मोटी क़िस्म के कपड़े, टाट या इसी क़िस्म की किसी चीज़ की तैयार की हुई ओट या आसरा। **डालना, लटकना, बांधना, उठाना** के साथ बोला जाता है।

पलंग पोश (पु0) पलंग के बिस्तरे (बिछौने) के ऊपर मैल की हिफ़ाज़त को डालने की चादर।

पीक दान (पु0) थूक या पानी की क़िस्म की कोई मुस्तअ़मिला[1] चीज़ डालने का ज़र्फ़[2]। (**देखें** उगालदान) उगालदान और पीकदान में यह फर्क़ होता है कि उगालदान का सुराख़ बड़ा और पीकदान को तंग बनाया जाता है। ([1]मिश्रित, [2]पात्र)

तक पोश (पु0) देखें पटा पटी का पर्दा।

तकिया (पु0) लेटने में सर और बैठने में कमर को सहारने का टेका जो रुई वग़ैरा का बना लिया जाये, सर रखने का छोटा और अ़मूमन[1] चिपटा बनाया जाता है और कमर को टेका देने का गोल, मोटा और लम्बा होता है। इस को इस्तिलाहे–आम[2] में गऊ तकिया कहते है। **लगाना, रखना** के साथ बोला जाता है। ([1]प्रायः, [2]आम बोलचाल)

तकिया पोश (पु0) तकिये को बालों की चिकनाई और दूसरी क़िस्म की मैल से बचाव का कपड़ा।

टट्टा (पु0) बांस की पतली–पतली खपचार का बोरिये की वज़अ़[1] का बनाया हुआ कमरे दालान वग़ैरा की तह, ज़मीन पर बिछाने का अद्ना[2] क़िस्म का फर्श, दकन में टट्टा और बिहार, बंगाल में बरमा कहलाता है। ([1]तरह, [2]तुच्छ)

जाज़िम (स्त्री) शतरंजी के ऊपर बिछाने का रंगीन बूटे दार छपा हुआ कपड़े का चाँदनी की क़िस्म का फ़र्श, इकहरा और दोहरा दोनों क़िस्म का बनाया जाता है। इस क़िस्म का एक रंग सफेद फ़र्श, इस्तिलाह[1] में चाँदनी कहलाता है। ([1]तकनीकी रूप से)

झाड़न (पु0) मकान का आराइशी[1] सामान वग़ैरा झाड़ने पोछने का कपड़ा। ([1]साज सज्जा)

चांदनी/चान्नी (स्त्री) देखें जाज़िम। **प्रयोग**, दरी वग़ैरा के फर्श पर बिछाने की एक रंग सफ़ेद चादर।

चटाई (स्त्री) बोरिया, खजूर के पत्ते या किसी क़िस्म की घाँस का बना हुआ फ़र्श।

चोब (स्त्री) बादशाह और उमरा[1] के दरबार के हाज़िर बाश मुलाज़िम[2] के हाथ की लकड़ी जो हस्बे हैसियत–ए–दरबार[3] नक़रई[4] या त़लाई[5] होती है। ([1]अमीरों, [2]हर समय उपस्थित रहने वाला (सभासद), [3]दरबार की गहत्ता के अनुकूल, [4]चांदी की, [5]सोने की)

चोब दार (पु0) दरबार में हाज़िर होने वालों की पेश क़दमी[1] करने वाला मुलाज़िम–ए–शाही। ([1]आगे–आगे चलने वाला)

छत गीरी (स्त्री) छत के अंदरूनी हिस्से (सतह) पर कड़ी तख़्ते के नशेबो–फराज़[1] या किसी और क़िस्म की बद नुमाई[2] को छिपाने के लिए बतौर–ए–आराइश[3] ताना हुआ कपड़ा।–(तानना, लगाना) ([1]उतार–चढ़ाव, [2]अभद्रता, [3]साजसज्जा)

दरमा (पु0) देखें टट्टा।

दीवार गीरी (स्त्री) कमरे या दालान में मामूली चीज़े रखने या सजाने को दीवार पर लगाने के लिए लकड़ी या लोहे का बना हुआ टीका।

सिंघारदान/सिंघारमेंज़ (शृंगार दान) (पु0) बनाव सिंघार की चीज़े रखने की मेज़। (**देखें** पेशा–ए–हम्मामी)

सीतल पाटी (स्त्री) (संस्कृत शीतला) बंगाल और आसाम की बनी हुई आला क़िस्म की नर्म चटाई। (**देखें** चटाई)

शत्रंजी (स्त्री) देखें पेशा–ए–दरी बाफ़ी दूसरा हिस्सा तैयारी–ए–लिबास।

फर्राश (पु0) मकान को सजाने और आराइशी[1] सामान को क़रीने से जमाने और उसकी निगहदाश्त[2] करने वाला पेशेवर शख़्स। ([1]साज–सज्जा, [2]देखभाल)

फर्राश ख़ाना (पु0) इमारत की आराइशो–ज़ैबाइश[1] का सामान रखने का ठिकाना। ([1]साज–सज्जा)

फर्राशी पंखा (पु0) क़दीम वज़अ़[1] का छत में लटकाने का बड़ा पंखा जिस को रस्सी के ज़रिये खींच कर हरकत दी जाती है ताकि उसकी हरकत से हवा में हरकत हो। **झलना** के साथ बोला जाता है। ([1]आकार–प्रकार) **प्रयोग** दो पहर के वक़्त कमरे के अंदर फर्राशी पंखा झला जाता है।

क़ालीन (स्त्री) ऊन की गुलदार[1] बनी हुई मसनद। (**देखें** पेशा–ए–क़ालीन बाफ़ी दूसरा हिस्सा तैयारी लिबास) ([1]गुलबूटे)

खूंटी (स्त्री) कपड़े वग़ैरा लटकाने की मुख़्तलिफ़[1] वज़अ़[2] की चोबी[3] या धातु की बनी हुई मेंख[4], मेंखें जो कमरे, गुस्ल ख़ाना[5] वग़ैरा की दीवार या अल्मारी में जड़ दी जाती है। ([1]विभिन्न, [2]आकार, [3]लकड़ी, [4]कीला, [5]स्नानागार)

गऊ तकिया (पु0) देखें तकिया।

गुलाब पाश (पु0) महमानों पर गुलाब छिड़कने का ज़र्फ़[1]। ***(गुलाब पाश का चित्र)*** ([1]पात्र)

गुल तकिया (पु0) सोते में गाल के नीचे रखने का तकिया।

गुलदान (पु0) मुलाक़ात वग़ैरा के कमरे में फूलों का गुलदस्ता रखने का ज़र्फ़[1]। ([1]पात्र)

माही मरातिब (पु0) ख़ास और नामी उमरा[1] का जो दरबार–ए–शाही का अ़तिय्य[2], इमतियाज़ी निशान[3] जो बतौर तम्ग़ा महेल्लात पर लगाया जाता है। ([1]अमीरों, [2]पुरस्कार, [3]स्मृतिचिन्ह)

मच्छर दान (पु0) छपर खट का पर्दा, जो मच्छर, मक्खी की रोक के लिए पलंग, मसेहरी और छपर खट वग़ैरा पर लगाया जाये।

मुदर (स्त्री) आसाम और बर्मा के इ़लाक़े की एक क़िस्म की घाँस की बनी हुई चटाई, जा नमाज़ वग़ैरा।

मसनद (स्त्री) सदर–ए–मजलिस[1] के बैठने का मकान में सदर मुक़ाम पर बिछाने का खुशनुमा व आ़ला क़िस्म का कपड़ा (बिछौना) इस के साथ कमर लगाने और ज़ानों[2] टिकाने को तकिये षे होते है इन सब को मिला कर मसनद–ए–तकिया बोलते है। ([1]सभापति, [2]रानों)

मसनद–ए–तकिया

मसनद–ए–तकिया (पु0) देखें मसनद।

मीर–ए–फ़र्श (पु0) चांदनी, जाज़िम या दीगर फ़र्श के हवा से न उड़ने को लब–ए–फर्श[1] रखा जाने वाला मुख़्तलिफ़[2] क़िस्म का आ़ला व अद्ना[3] पत्थर का बुर्जी या मुगटी नुमा बना हुआ छोटा ठेवा। (थवा) ([1]फर्श के किनारे, [2]विभिन्न, [3]मामूली)

मीर–ए–फर्श

पेशा–ए–मशअ़लची

इक्का/एक शाखा (पु0) देखें शमा दान। **प्रयोग।**

अक्कास दिया (पु0) चन्द्र करंत, सूरज करंत, मामूल से ज़्यादा बुलंद या मीनार पर रौशन होने वाला चिराग जो ख़ास–ख़ास तक़ारीब[1] पर जगह के पत्ते की अ़लामत[2] के तौर पर यानी मुक़ाम[3] की निशान दही को जलाया जाये। ([1]उत्सव, [2]निशानी, [3]स्थान)

आग काड़ी (स्त्री) देखें दीवा सलाई।

एक शाखा (पु0) देखें इक्का।

बत्ती (स्त्री) चिराग़, लैम्प और लालटेन वग़ैरा में जलने वाली रुई की बटी हुई या सूत की बनी हुई हस्बे–ज़रूरत[1] छोटी, गोल चिपटी डोरी या पट्टी की शक्ल की चीज़। **उकसाना** चिराग़ वग़ैरा की बत्ती के जलने वाले सिरे को हस्बे ज़रुरत ऊँचा करना। चिराग के मुँह से जलने के लायक बाहर को निकालना। **काटना** चिराग़ की बत्ती के जले हुए हिस्से को कतर कर साफ करना, बराबर करना। ([1]आवश्यकतानुसार)

बिजली का गोला (पु0) बर्क़ी कुमकुमा, बर्क़ी गोला। कांच का बना हुआ [1]निहायत नाज़ुक [2]हुबाब जिसमें बिजली का रौशन होने वाला तार [3]महफ़ूज़ रहता है। ([1]अत्यधिक, [2]बुलबुला, [3]सुरक्षित)

बर्क़ी कुमकुमा (पु0) देखें बिजली का गोला।

बर्क़ी गोला (पु0) देखें बिजली का गोला।

बुर्क़अ़ फ़ानूस (पु0) फ़ानूस के ऊपर ढकने का [1]निहायत बारीक कपड़े का बना हुआ सर–पोश, जो कीड़े मकोड़े और हवा से [2]हिफ़ाज़त को फानूस या चिराग दान पर ढक दिया जाये। ([1]अत्यधिक, [2]सुरक्षा)

पंज शाखा (पु0) देखें शमा दान। **प्रयोग।**

पंजी (स्त्री) पांच फ़लीते (तेल में तर की हुई मोटी बत्तियां) बवक़्त वाहिद[1] यक्जा[2] जलाने को लोहे का बना हुआ, पंज शाखा जो गैस और बिजली की ईजाद से क़ब्ल[3] तेज़ रौशनी करने के मौक़ा पर इस्तेमाल किया जाता था। (जमअ़[4] पंजियां) ([1]एक समय, [2]एक साथ, [3]पूर्व, [4]बहुवचन)

पंजी वाला (पु0) वह मज़दूर जो किसी जुलूस के साथ रौशन पंजी उठाकर चले।

टिमटिमाना (क्रिया) चिराग़ की लौ का बहुत धीमी और हल्की रौशनी देना वह ख्वाह[1] तेल की कमी से हो या बत्ती की कमी से। **प्रयोग** मंदिर में बुत[2] के सामने एक चिराग़ हर वक़्त टिमटिमाता रहता है। ([1]चाहें, [2]मूर्ति)

टहनी (स्त्री) देखें झाड़। **प्रयोग।**

टीम (स्त्री) चिराग़ की लौ की कजलाई हुई हालत।

झाड़ (पु0) फ़ानूसों का बनाया हुआ दरख़्त। झाड़ असल में घने दरख़्त[1] को कहते है। इसी वजह से घनदार बूटे की शक्ल जमा कर सजाई हुई शमओं के मजमूआ़[2] को इस्तिलाह[3] में छाड़ कहा जाता है। **टहनी** शमा या फ़ानूस। शमा की बिल्लौर या धातु की बनी हुई डंडी, आ़ला और क़ीमती झाड़ो की टहनी या टहनियां अ़मूमन[4] बिल्लौरैन होती है। **क़लम** टहनी के सिरों पर लटकाये जाने वाला खुशनुमा बिल्लौरैन आवेज़ह[5]। (जमअ़[6] क़लमें) ([1]प्रायः, [2]जड़ाऊ, [3]बहुवचन, [4]पेड़, [5]गुच्छे, [6]तकनीकी रूप से)

झूले का लैम्प (पु0) देखें लैम्प।

चिराग़ (पु0) रात के वक़्त रौशनी करने का ज़र्फ़[1]। यह लफ़्ज़ आ़म तौर से मिट्टी के बने हुए प्याले नुमा ज़र्फ़ के लिए जिस को दिहाती ज़बान में दिया और दीवा कहते है मख़सूस[2] है। **बड़ना, ठंडा करना, ख़ामोश करना, गुल करना चिराग़ बुझाना** चूंकि बुझाने का लफ़्ज़ बोलना अ़वाम के ख्याल में एक क़िस्म की बद शगुनी[3] समझा जाता है इसलिए इस मौकअ़ पर मज़कूर–उल–सदर[4] अल्फाज़[5] इस्तेमाल किये जाते है जो कसरत–ए–इस्तेमाल[6] से मुहावरे बल्कि मुहज़्ज़ब[7] अल्फाज़ बन गये है। ([1]पात्र, [2]विशिष्ट, [3]अपशगुन, [4]अपरोक्त, [5]शब्दों, [6]प्रयोग की अधिकता, [7]शिष्ट)

चिराग़ची (पु0) रौशनी करने वाला पेशेवर मज़दूर। चिराग़ची असल में उस शख़्स को कहते है जो मंदिर या इसी क़िस्म के दूसरे मुक़ामात[1] में हर वक़्त चिराग़ रौशन की ख़िदमत अंजाम दे और उस की निगह्बानी[2] रखें। ([1]स्थानों, [2]देख–रेख)

चिराग़ दान (पु0) डेवट। चिराग़ रखने का अड्डा या जगह।

चक़माक़/चक मुक (स्त्री) वह पत्थर जिस में रगड़ से आग की चिंगारी निकले। दीवा सलाई की ईजाद[1] से कब्ल[2] आग सुलगाने और चराग रौशन करने को इस्तेमाल किया जाता था वस्त–ए–हिन्द[3] और दकन के दिहातियो में अब षे इसका रवाज़ है। ([1]आविष्कार, [2]पूर्व, [3]मध्य)

चक मुक (स्त्री) देखें चक़माक़।

चिमनी (स्त्री) मिट्टी के तेल से जलने वाले जदीद[1] ईजाद[2] के लैम्प या लालटेन का नई तर्ज़ का शीशे का फ़ानूस जो मुख़तलिफ[3] शक्ल का हस्बे मतलब छोटा बड़ा बनाया जाता है। **उतारना, चढ़ाना, लगाना** के साथ बोला जाता है। ([1]आधुनिक, [2]अविष्कार, [3]विभिन्न)

चन्द्र करंत (पु0) देखें अक्कास '(आकाश) दया।

छाज (पु0) देखें लैम्प।

छत का लैम्प (पु0) देखें लैम्प।

दिपनी (स्त्री) मामूल से छोटा दीप दान। **देखें** दीप दान।

दो शाखा (पु0) देखें शमा दान। **प्रयोग।**

दिया (पु0) उथले प्याले की शक्ल का मिट्टी का बना हुआ चिराग़, क़सबाती दीवा कहते है और मामूल से छोटा दिव्ला कहलाता है।

पसे मर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किसी ने जला दिया।
उसे आह! दामन–ए–वाद ने सरे शाम ही से बुझा दिया।।

(ज़फर)

दिया सिलाई (स्त्री) आग काड़ी चिराग रौशन करने व आग जलाने की, रगड़ से जल उठने वाले माद्दे[1] से बनी हुई तीली। ([1]धातु)

दीप दान (पु0) डिवट। **देखें** चिराग़ दान।

दीपमाल/दीपमाला (पु0) दीवार या बुर्जी में चिराग़ रखने के क़तार दर क़तार[1] बने हुए मोखे जो अ़मूमन[2] मंदिरो या इस क़िस्म के दूसरे मुक़ामात[3] पर चिरागां यानी बहुत से चिराग़ रौशन करने को बने होते है। ([1]पंक्तिबद्ध, [2]प्रायः, [3]स्थानों)

दीव आसा (पु0) दीव आला, चिराग़ रखने का ताक़।

दीव् आला (पु0) (दीवा+अला) मुख़्तसरन् दीव्ला (**देखें** दीवआसा) लेकिन दीवला आम तौर पर छोटे दिये (चिराग़) को कहते है।

दीवा (पु0) देखें दिया।

ढीवट (पु0) चिराग़दान, दीवा (चिराग़) रखने का अड्डा जो आम तौर से लकड़ी का दो से तीन फुट ऊँचा बना हुआ होता है।

सूरज करंत (पु0) देखें अक्कास दिया।

सह शाखा (पु0) देखें शमादान। **प्रयोग।**

शताबा (पु0) शमा रौशन करने का जलता हुआ फ़लीता।

शुद्दा (पु0) पंजी की क़िस्म का मोम बत्तियाँ जलाने का पंज शाखा जिस का इस्तेमाल पंजी की तरह मगर बेहतर सूरत में किया जाता है। (**देखें** पंजी)

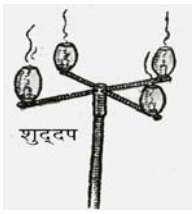

शमअ़दान (पु0) शमअ़ी, शमा (मोमबत्ती) लगाने का हस्बे–ज़ुरूरत[1] ऊँची बनी हुई बैठक। (शमा की बैठक) इक्का–सिर्फ एक बत्ती लगाने का शमादान इसको इस्तिलाहन इक शाखा षि कहते है। इसी तरह दो, तीन और पांच बत्तियों तक का शमादान होता है जो इस्तिलाह[2] में दो शाखा, सह शाखा और पंज शाखा कहलाता है। ([1]आवश्यकतानुसार, [2]तकनीकी रूप से)

शमअ़ी (स्त्री) देखें शमादान। पूरब के बाज़ दिहाती समी कहते है।

तौग़ (स्त्री) देखें मश्अ़ल।

फ़ानूस (पु0) शीशे वग़ैरा का बना हुआ गिलास या कंवल की वज़अ़[1] का शमा पोश जो जदीद[2] वज़अ़ में निहायत[3] खुशरंग[4] और खुश–वज़अ़[5] मुख़्तलिफ[6] शक्लों के बनाये जाते है। ([1]आकार, [2]आधुनिक, [3]अध्यधिक, [4]अच्छा रंग, [5]अच्छे आकार, [6]विभिन्न)

फतील सोज़ (पु0) डिवट की क़िस्म का धातु का बना हुआ फलीते जलाने का चिराग़ दान। उस के सिरे पर पीतल का चिराग जिसके चारो तरफ बत्ती के मुँह बने होते है, लगा होता है। वक़्त वाहिद[1] में हस्बे–ज़ुरूरत[2] कई कई बत्तियाँ रौशन की जाती है। हिन्दू दुकानदारों, महाजनों और व्यापारियो में इसका रवाज जारी है। गद्दी के सामने फ़तील सोज़ हस्बे–रवाज–ए–क़दीम[3] रौशन किया जाता है। बिजली की रौशनी के मुक़ाबले में फ़तील सोज़ जलता हुआ देख कर वजह तहक़ीक़[4] की तो बताया गया कि कभी कभी बिजली की रौशनी एक दम बंद हो जाती है। इसलिए गद्दी की हिफाज़त के लिए फ़तील सोज़ हस्बे–मामूल[5] गद्दी के सामने जलाया जाता है। ([1]एक समय, [2]आवश्यकतानुसार, [3]परम्परागत, [4]खोज, [5]परम्परानुसार)

फ़लीता/फ़तीला (पु0) देखें बत्ती।

क़लम (स्त्री) देखें झाड़। **प्रयोग।**

कजलाना (क्रिया) (काजल+आना) चिराग़ की बत्ती के सिरे पर जली हुई पपड़ी बनना, बत्ती के जलने का काजल पैदा होना।

कजलाई बत्ती (स्त्री) चिराग़ की बत्ती का जला हुआ मुँह जिस पर धुंए की स्याही जम गयी हो।

कल्ला (पु0) मुहरा। लैम्प या लालटेन की बत्ती का घर।

कौकबा (कौकबः) (पु0) बुलंदी[1] पर लटका हुआ गैस या बिजली की रौशनी का हंडा। ([1]ऊँचाई)

गुल (पु0) चिराग़। लैम्प वग़ैरा की बत्ती के जले हुए सिरे पर जमा हुआ काजल (बत्ती की जली हुई नोक) **कतरना, झाड़ना, तोड़ना प्रयोग** बत्ती का गुल नही कतरा इसलिए साफ नही जल रही।

गुलगीर (पु0) चिराग़, लैम्प वग़ैरा की बत्ती का गुल कतरने की कैंची।

ग्लोब (पु0) बुर्क़अ़ फ़ानूस, लैम्प की चिमनी का चीनी या शीशे का सरपोश जो ख़ास ख़ास क़िस्मों के लैम्पों में लगा होता है। **चढ़ाना, लगाना**

गैस का हंडा (पु0) जदीद[1] ईजाद[2] का लैम्प या लालटेन जिसमें मिट्टी के तेल का गैस बन कर जलता है। ([1]आधुनिक, [2]आविष्कार)

लालटेन (स्त्री) मग़रबी[1] ईजाद[2] का चिराग़ दान या चिराग़ घर जो मुख़्तलिफ़[3] शक्ल व सूरत का छोटा बड़ा, अद्ना और आला बनाया जाता है। (अंग्रेजी लफ़्ज़ लैंटर्न से लाल टेन, हिंदुस्तानी बन कर उर्दू का लफ़्ज़[4] हो गया। ([1]पश्चिमी, [2]आविष्कार, [3]विभिन्न, [4]मामूली, [5]शब्द)

लौ (स्त्री) चिराग़ व शमा वग़ैरा की बत्ती का शो़ला। **ˎबढ़ना, बढ़ाना, ऊँची होना, ऊँची करना** चिराग़ के शोले के मामूल से ज़्यादह तेज़ होना, करना। **ˎकम होना, करना, नीची होना** चिराग़ के शोले का मामूल से ज़्यादा धीमा होना, करना।

लौलुन दिया (पु0) क़दीम[1] जोधपुरी ईजाद[2] में एक अ़जीब साख़्त[3] का चिराग़ जिसको उल्टा करने या इधर उधर झुकाने से तेल की डिबिया अपनी अस्ली हालत पर रहती है औंधी नही होती जिसकी वजह से न चिराग़ बुझता है न तेल गिरता है। 1888 ई0 में इस क़िस्म का एक चिराग़ ग्लासगो की नुमाइश में ष्जा गया था। ([1]प्राचीन, [2]आविष्कार, [3]बनावट)

लैम्प (पु0) (अंग्रेज़ी)–जदीद[1] ईजाद[2] का फानूस दार चिराग़। इन में बाज़ छत में लटकाने के बाज़ मेंज़ या फर्श पर रखने के होते है। छत में लटकाने वाला लैम्प इस्तिलाह[3] में छींके का लैम्प कहलाता है जिस के छूले को छींका और सरपोश को छाज कहते है। ([1]आधुनिक, [2]आविष्कार, [3]तकनीकी रूप से)

मिट्टी का तेल (पु0) मअ़दनी[1] तेल। ([1]ख़निज)

मशाल (मशअ़ल) (स्त्री) जलने वाली रुई या मोम की बनी हुई मोटी बत्ती। **प्रयोग** लकड़ियो में आग लगी तो पास लगा हुआ दरख़्त[1] मशाल की तरह जलने लगा। ([1]पेड़)

मशलची/मशअ़लची (पु0) मकानों व इमारत की रौशनी का इंतिज़ाम करने वाला पेशेवर शख़्स।

मुहरा (पु0) देखें कल्ला।

<u>पेशा–ए–आब बरारी</u>

आब बरार (पु0) सक़्क़ा, बहेश्ती[1], पन्हारा। **देखें** पन्हारा। ([1]भिशती)

आबदार खा़ना (पु0) प्याऊ, सबील, पौसाला। **देखें** प्याऊ। (लगाना)

अंधेरी (स्त्री) मुख्या। सक़्क़े के मुँह की नक़ाब। मुसलमानों के घरों में जहाँ औरतें रहती हों। पानी लाने वाला कमेरा (सक़्क़ा) मुँह पर नक़ाब डाल कर अंदर जाता है। इस नक़ाब को इस्तिलाह[1] में अंधेरी कहते है। **ˎडालना** ([1]तकनीकी रूप से)

आखा (पु0) देखें बखाल। **प्रयोग।**

औक (स्त्री) पानी पीने के लिए दोनो हाथों को मिला कर पियाले की शक्ल बनाने को इस्तिलाह[1] में ओक कहते है। **ˎलगाना, बनाना** पानी पीने को दोनो हाथो को मिला कर प्याला सा बनाना। ([1]तकनीकी रूप से)

बाउली (स्त्री) मुस्ततील[1] शक्ल का पुख़्ता[2] कुवां जिस की तह तक पुख़्ता सीढ़िया बनी हो, दकन में हर कुंए की ख़्वाह मुदव्वर[3] शक्ल का हो या मुस्ततील बाउली कहते है और शिमाली[4] हिन्द में सिर्फ मुस्ततील शक्ल वाले को बाउली कहा जाता है। ([1]आयताकार, [2]पक्का, [3]गोलाकार, [4]उत्तरी)

बम्बा (मुमबअ) (पु0) पानी आने की जगह, बहते हुए पानी के लिए बनाई हुई महदूद[1] जगह, वस्त[2] हिन्द में बाज़ मुक़ामात[3] पर नल को भी बम्बा कहते है। ([1]सीमित, [2]मध्य, [3]स्थानों)

ष्ट्टा (पु0) मशक पर लगाने का एक क़िस्म का रौग़न[1] या मसाला। ([1]चिकनाई)

बुझा पानी (पु0) वह पानी जिसमें लोहे या सोने का टुकड़ा आग में सुर्ख़[1] कर के ठंडा किया गया हो और बतौर दवा पिया जाये। ([1]लाल)

ष्श्ती/बहिश्ती (पु0) देखें पनिहारा, सक़्क़े का उर्फ, बाज़ मुक़ामात[1] पर ख़्वाजा कहते है। ([1]स्थानों)

भिश्तन/बहिश्तन (स्त्री) सक़नी। घरों में पानी लाने वाली मुसलमान कमेरन। (भिश्ती की बीवी)।

पाखा (पु0) पखाल के मुँह में लगाने की, लकड़ी की तख़्ती जो पखाल में पानी ष्रते वक़्त उस के मुँह को खुला रखती है।

पाइचा (पु0) दस्तकल्ला। **देखें** मशक। **प्रयोग।**

परतला (पु0) तप्पड़। **देखें** चरसा।

पखाल (स्त्री) (पंख+आल) पानी ष्र कर ले जाने को भैंस या गाय की सालिम[1] खाल का बना हुआ थैला। सक़्क़े

की इस्तिलाह[1] में चमड़े के थैलों की जोड़ी को जो बैल के दायें बायें लटकी रहती है, पखाल कहते है और उस की हर फ़रद को आखा। ([1]समूची, [2]तकनीकी भाषा)

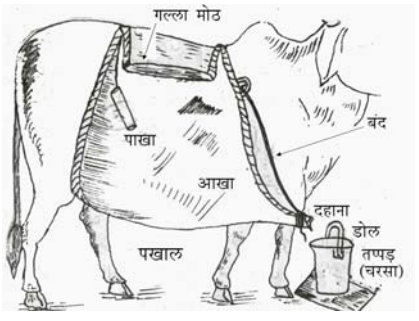

पलहंडा (पु0) तरौंची **देखें** घड़ौंची।

पंहियारा/पनिहारा (पु0) सक़्क़ा, भिश्ती। घरों में पानी लाने वाला कमेरा।

पंहियारी (स्त्री) भिश्तन, सक्क़न, घरों में पानी लाने वाली औ़रत। (पंहियारे की बीवी)।

पूचड़ी (स्त्री) खूंटिया। **देखें** मशक। **प्रयोग।**

पौसाला (पु0) (प्याऊ+साला) सबील, आबदार ख़ाना। **देखें** प्याऊ।

प्याऊ (स्त्री) बर–सरे–राह, राहरूं के पानी पीने पिलाने की बनी हुई जगह।

फुआरा (पु0) देखें फव्वारा।

तप्पड़ (पु0) पर तला। **देखें** चरसा। पखाल या मशक का बड़ा पैबंद।

तल चक (स्त्री) कुंए की स्रोत या स्रोत का रिसाव जो तह पर हो।

तवा (पु0) पखाल या मशक का औसत दर्जे का चमड़े का पैवंद। **चढ़ाना** के साथ बोला जाता है।

टाँकी (स्त्री) मशक या पखाल का मामूली छोटा पैवंद।

जाम दानी (स्त्री) पानी के मटके रखने की जगह। गर्मी के मौसम में रात के वक़्त हवा में पानी के आब ख़ोरे रखने की जगह।

जगत (स्त्री) कुंए के अत्राफ़[1] ऐसी बनी हुई जगह जहाँ चौतरफ से पानी खींचा जाये या चौतरफा पानी खींचने की जगह बनी हुई हो। ([1]चारो तरफ)

जौतिया (पु0) देखें मशक। **प्रयोग।**

झारा (पु0) फव्वारे दार टोंटी वाला, पौदों पर पानी छिड़कने का ज़र्फ़।

झारा

झिरा (पु0) छोटा कच्चा कुंआँ जो नदी नाले के किनारे आर्ज़ी[1] ज़रूरत के लिये। खोद लिया जाये। ([1]अस्थाई)

झिरना (पु0) वह ऊँचा मुक़ाम जहाँ से पानी झिर कर नीचे गिरे या जहाँ से पानी झरता रहे।

झकोला देना/झकोल्ना (क्रिया) नछोल्ना, झोला देना, झूलना। पानी की सतह से डोल को टकराना। पानी में डोल को डुबकियां देना।

झोला देना/झोलना (क्रिया) देखें झकोला देना।

चरख़ी (स्त्री) देखें घिरनी। (गिरनी)।

चरसा (पु0) परतला, तप्पड़। मशक का ज़ेर अंदाज़। मशक के तले बिछाने का चमड़े का चौड़ा टुकड़ा।

चक (स्त्री) कुएं की स्रोत का मुँह।

चौ बच्चा (पु0) कुएं की मेंढ़ के बराबर बना हुआ पानी का हौदा जिस में डोल का गिरा हुआ पानी बह कर जाता है।

छागल (स्त्री) **पीने का पानी रखने को सुराही की क़िस्म का चमड़े का बना हुआ ज़र्फ़। मुख़्तलिफ़[1] क़िस्म के धातु का कुप्पी नुमा ष बनाया जाता है।** ([1]**विभिन्न**)

छिड़काव (पु0) ख़ाक[1] को दबाने या गर्मी में ज़मीन की तपिश दूर करने को पानी छिड़कने का अ़मल[2]। **करना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** बड़े शहरों में हर रोज़ सड़को का छिड़काव किया जाता है। ([1]मिट्टी, [2]क्रिया)

छींट/छींटा (पु0, स्त्री) किसी चीज़ से टक्कर खा कर पानी की उड़ी हुई बूंद या बूंदे, पानी का मुंतशिर[1] क़तरह[2]। **उड़ना, पड़ना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** परनाला के पानी की छींटे दूर तक उड़ती है। **प्रयोग** पेशाब की छींटे पड़ने से कपड़ा गंदा हो जाता है। ([1]विखराव, [2]बूँदें)

हौज़ (पु0) बाग़, ख़ाना बाग़, मकान और ख़ास ज़रूरत के मुक़ामों[1] पर हर वक़्त के इस्तेमाल को हस्बे–ज़रूरत[2] बड़ा और मुख़्तलिफ़[3] शक्ल का पुख़्ता[4] बना हुआ पानी का चौ बच्चा। ([1]स्थानों, [2]आवश्यकतानुसार, [3]विभिन्न, [4]पक्का)

दर्ज़ (स्त्री) मशक की सीवन।

दस्त कल्ला (पु0) देखें पाँइचा।

दम किया हुआ पानी (पु0) वह पानी जिस पर कोई दुआ़ या मंत्र पढ़ कर फूंक दिया गया हो और बतौर दवा इस्तेमाल किया जाये।

दहान बंद (पु0) मशक का मुँह बांधने का तस्मा या डोरी।

दहाना (पु0) मशक का मुँह। **छोड़ना** मशक का मुँह खोलना।

डोल (पु0) **कुएं से पानी निकालने का चमड़े या धातु वग़ैरा का ज़र्फ[1] मामूल से छोटे को डोलची कहते है।** फांसना **डोल को कुएं में पानी की सतह तक पहुँचाना और झकोले से पानी में डुबोना।** ([1]**पात्र**)

चित्रः–पु0–198।

डोलची (स्त्री) देखें **डोल।**

सबील (स्त्री) **आबदार ख़ाना।** देखें **प्याऊ।**

सक़ाबा (पु0) ज़रूरत के लायक पानी जमा रखने की पुख़्ता[1] बनी हुई जगह, घर के ज़रूरी इस्तेमाल के

पानी का ख़ज़ाना जो अ़मूमन[2] गुस्लख़ानों[3] या आ़म इस्तेमाल की जगह बना दिया जाये। ([1]पक्की, [2]प्रायः, [3]स्नानागार)

सक़्क़ा (पु0) भिश्ती। **देखें** पंहियारा।

सक़्क़न/सक़्नी (स्त्री) सक़्क़े (घर में पानी पहुंचाने वाले कमेरे) की औरत।

सोत (स्रोत) (स्त्री) तह ज़मीन यानी ज़मीन के अंदर जज़्ब हुए पानी के झरने की जगह जो गहरा गड़ा खोदने से तह में निकल आती है। **निकलना, आना** के साथ बोला जाता है।

फ़व्वारह/फ़ुवारह (पु0) किसी धातु का बना हुआ बारीक़ सुराख दार मुहरा जो हौज़ के नल या किसी ज़र्फ़ की टोंटी पर पानी के ज़ोर से ऊपर उछलने को लगा दिया जाये। **देखें** झारा।

कांटा (पु0) कुंए के अंदर डूबे हुए डोल निकालने का आहनी आंकड़ा। **डालना** के साथ बोला जाता है।

कन्ना (पु0) डोल के मुँह का किनारा जिस पर मज़बूती को चमड़े की गोट सिली होती है।

कुवां (पु0) देखें बाउली। इक लावा, दो लावा वग़ैरा कुआँ यानी ऐसा कुआँ जिस पर हस्बे–गुंजाइश[1] एक से चार तक लावें चलें और पानी न टूटे। ([1]गुंजाइश के मुताबिक़)

कोठी (स्त्री) गोला। कुएं के अंदरूनी दौर की पुख़्ता चुनाई इस्तिलाह[1] में कोठी कहलाती है। **डालना, गलाना** कोठी बनाकर कुएं के दौर में बिठाना। यह तरीक़ा अ़मूमन[2] कच्चे कुओं में दरख़्त[3] की शाख़ो की या लकड़ी की कोठी डालने का है। ([1]तकनीकी रूप से, [2]प्रायः, [3]पेड़)

खांप (स्त्री) तवा। पखाल या मशक का मामूल से बड़ा पैवंद।

खूंटिया (पु0) देखें पूचड़ी।

गदला पानी (पु0) मिट्टी या किसी दूसरी चीज़ के अज़्ज़ा मिला हुआ पानी। ([1]अंश)

गल्ला (पु0) मूठ। पखाल का पानी ष्रने का मुँह यानी वह ऊपर का मुँह जिससे पखाल में पानी ष्रते है।

चित्र–198

गोला (पु0) देखें कोठी।

घड़ौंची (स्त्री) तरौंची। पलहंढा। जामदानी, पानी के घड़े (मटके) रखने की तिपाई या चौकी।

लब (पु0) मशक के दहाने (मुँह) का ऊपर नीचे का चमड़ा। **खोलना** मशक का दहाना[1]। पानी निकालने को खोलना। ([1]मुंह)

लटकन (पु0) पानी का एक घड़ा रखने की छोटी तिपाई। लटकन असल में पानी का घड़ा रखने के ऐसे छींके को कहते थे जो मौसम–ए–गरमा में खुली जगह में हवा में लटका दिया जाता था और उसमें पानी का मटका या सुराही रख कर झुलाते थे ताकि पानी जल्द ठंडा हो। यह तरीक़ा उमरा[1] के यहाँ मुरव्वज[2] था। बर्फ़ की ईजाद[3] से यह तरीक़ा मतरूक[4] हो गया और अ़वाम एक घड़ा रखने की घड़ौंची को लटकन कहने लगे जो इस मफ़हूम[5] के लिए एक मुस्तक़िल[6] इस्तिलाह[7] बन गयी। ([1]अमीरों, [2]प्रचलित, [3]आविष्कार, [4]परित्यक्त, [5]आशय, [6]वाक़ाइदा, [7]तकनीकी शब्दावली)

लुंगी बंद षई (पु0) सक़्क़ों की बिरादरी का हर एक पेशावर सक़्क़ा। सक़्क़ो की इस्तिलाह[1] में लुंगी बंद षई कहलाता है। ([1]तकनीकी रूप)

मशक (स्त्री) पानी ष्र कर रखने या उठा कर ले जाने को भेड़ या बकरे की पूरी खाल का बना हुआ ज़र्फ़[1]। **भरना, उठाना** के साथ बोला जाता है। **डालना)** मशक का पानी किसी जगह ले जा कर डालना, खाली करना। **प्रयोग** सुबह सवेरे सक़्क़ा एक मशक डाल जाता है तो दिन ष्र को पानी होता है। **उलटना** मशक का पानी खाली करना। **प्रयोग** सक़्क़ा एक पैसा लेकर चौराहे पर मशक उलट देता है। **पाइंचा** दस्त कल्ला। मशक के दहाने[2] के करीब के बाजू जिसमें मशक लटकाने या कंधे पर उठाने के तस्मे के सिरे बांधे जाते है। **पूचड़ी** मशक के पाँइचो के मुक़ाबिल आख़ीर की तरफ चमड़े का सिला हुआ हल्क़ा[3] जिसमें जोतिये का दूसरा सिरा बांधा जाता है। **जोतिया** मशक लटकाने का तस्मे या रस्सी का बंद जिसका एक सिरा पाँइचों से बंधा होता है और दूसरा पूचड़ी से, मशक उठाकर ले जाने में यह बंद (जोतिया) सक़्क़े के कंधे पर रहता है। ([1]पात्र, [2]मुंह, [3]घेरा)

मशकीज़ह (पु0) मामूल से छोटी मशक।

मुखिया (स्त्री) देखें अंधेरी।

मूठ (स्त्री) देखें गल्ला।

निथरा पानी (पु0) वह पानी जिसके रेत, मिट्टी या किसी और चीज़ के ज़र्रात[1] तहे आब[2] हो कर (नीचे बैठ कर) साफ़ पानी ऊपर रह गया हो। ([1]कण, [2]पानी के नीचे)

निछोल्ना (क्रिया) देखें झकोला देना और झोला देना।

नख़ासी/नख़्ख़ासी (पु0) मशक, पखाल और पानी ष्रने के चमड़े के ज़र्फ़[1] अज़ क़िस्म[2] डोल, चरस वग़ैरा बनाने वाले पेशेवर कारीगर को सक़्क़ो की इस्तिलाह[3] में नख़्ख़ाशिये कहते है और यह देहली के सक़्क़ो में मअ़रूफ[4] है। फरहंग आसिफ़िया और बाज़ दीगर लुग़त में नख़्ख़ास के माने चौपायों का बाज़ार यानी वह मंडियाँ जहाँ घोड़ो और दीगर मवेशियो की ख़रीदो–फ़रोख़्त[5] होती हो, लिखे है बावजूद तहक़ीक़[6] के यह बात नही खुली कि डोल व मशक वग़ैरा बनाने वाले पेशेवर नख्ख़ाशिये क्यों कहलाते है। ग़ौर करने से सिर्फ यह बात क़रीन–ए–क़यास[7] मालूम होती है कि चौपायों और मवेशियों की तिजारत के साथ उनकी खालों की ष तिजारत[8] होती होगी और उस वक़्त ष ज़ुरूरत के लिहाज़ से मशकों और पखालों के लिए साबित और उमदा खालों की खरीद व फरोख़्त करने वाले व्यापारी मंडी में खास हैसियत रखते और नख़्ख़ासी के नाम से मअ़रूफ[9] होंगे। मुमकिन है कि यही व्यापारी मशकें और पखालें वग़ैरा बनाने के कारख़ाने ष रखते हों, इसलिए सक़्क़ो में नख़्ख़ाशिये मशहूर हो गये, देहली के सक़्क़ो की बिरादरी में मशक वग़ैरा बनाने वालो के लिए अब तक यह नाम मशहूर है। गो अब यह काम करने वाले बराये नाम रह गये है। ([1]पात्र, [2]जैसे, [3]तकनीकी रूप से, [4]प्रचलित, [5]क्रय–विक्रय, [6]अनुसंधान, [7]ज्ञानगम्य, [8]व्यवसाय, [9]प्रसिद्ध)

पेशा–ए–ख़ाकरोबी

बुहारी (स्त्री) सुहनी। **देखें** झाड़ू। **देना** बुहारी (झाड़ू) से फर्श, सहन वग़ैरा झाड़ना।

बुहारना (क्रिया) फर्श, सहन, ज़मीन वग़ैरा का कूड़ा वग़ैरा झाड़ू (बुहारी) से झाड़ना, साफ करना।

बैत–उल–ख़ला (पु0) टट्टी, संडास। **देखें** पाख़ाना।

भंगिन (स्त्री) मेहतरानी, हलाल खोरी, चौड़ी। ष्गी की बीवी।

ष्गी (पु0) गू, मैला और दीगर[1] क़िस्म की गंदगी साफ करने वाला पेशेवर मज़दूर जिन की हिंदुस्तान (ख़ुसूसन शिमाली[2] हिन्द) में आर्या क़ौम के अहेद–ए–तरक़्क़ी[3] से एक मुस्तक़िल[4] पेशेवर ज़ात बनी हुई है और निहायत[5] ही पस्त हालत में ज़िदगी बसर करती है। मुसलमानों के अ़हेद[6] में बतौर दिल दारी व दिलजोई उनको मेहतर और हलाल ख़ोर का ख़िताब दिया गया और उनकी हालत पर भी तवज्जुह[7] हुई। पंजाब में चौड़ा और कंजर कहते है। ([1]दूसरी, [2]उत्तरी, [3]लगातार, [4]अत्यधिक, [5]काल, [6]कृपा दृष्टि, [7]प्रगतिशीलता)

पाख़ाना/पैख़ाना (पु0) टट्टी, संडास, बैत–उल–ख़ला[1], रफेअ़ हाजत[2] के लिए बनी हुई इमारत या पर्दे की जगह। शिमाली[3] हिंद में आमतौर से पाख़ाना (पैख़ाना) बोला जाता है और दकन में संडास, पंजाब, राजपुताना और बाज़ दीगर इलाक़ो में हिन्दू टट्टी बमाने[4] परदे की जगह कहते है। मजाज़न[5], इंसान के गू से मुराद ली जाती है। **प्रयोग** बच्चा पैख़ाना ष्र रहा है। **प्रयोग** सड़क पर पैख़ाना पड़ा हुआ है। ([1]शौचालय, [2]शौच, [3]उत्तरी, [4]अर्थात, [5]लक्षितार्थ)

पैख़ाना (पु0) गू, इंसान के पेट से ख़ारिज शुदा। फुज़्लः[2]। **देखें** पाख़ाना। **प्रयोग। फिरना, करना, लगना, आना, निकलना** के साथ बोला जाता है। **कमाना** टट्टी या संडास साफ करना। पाख़ाने से गू उठाना। ([1]निकला हुआ, [2]मल)

टट्टी (स्त्री) देखें पाख़ाना।

टिकैना (पु0) ष्गी की माहाना उजरत[1] जो किसी ज़माने में एक टका माहाना के हिसाब से अनाज की फ़सल कटने पर दी जाती थी और रोज़मर्रा के पेट ष्रने को बचा खुचा झूटा खाना। बाज़ मुक़ामात[2] पर अब टिकैने का रवाज है। ([1]मज़दूरी, [2]स्थानों)

ठिकाना (पु0) ष्गी के खिदमत अंजाम देने की लगी बंधी जगह यानी घर या मुहल्ला। **कमाना** ष्गी का अपने ज़िम्मा के घर या घरों के पाख़ाने साफ़ करना या कराना। **लगाना** पाख़ाना कमाने की खिदमत, ज़िम्मा लेना। **टूटना** किसी जगह के पाख़ाना कमाने की ख़िदमत से इलाहिदा[1] हो जाना। **ठिकाना गर्द करना)** एक मुअ़य्यिना[2] मुद्दत[3] के लिए किसी दूसरे ष्गी के हक़ में मुन्तक़िल[4] कर देना। क़दीम[5] ज़माने से यह दस्तूर चला आ रहा है कि ष्गी अपने ठिकाने को बग़ैर उसकी इजाज़त के नही कमा सकता। ([1]अगल होना, [2]निर्धारित, [3]अवधि, [4]स्थानान्तरित, [5]प्राचीन)

ठीकरा (पु0) ज़चगी ख़ाना[1] की आलाइश[2] डालने का मिट्टी का ज़र्फ़[3]। ष्गी का गू उठाने का लोहे वग़ैरा का पत्रा। **उठाना** ज़चगी ख़ाना की आलाइश डालने का बर्तन साफ़ करना। यानी वह बर्तन जिसमें बच्चे की आँओं नाल डाली जाती है, साफ़ करना। ([1]प्रसव गृह, [2]गंदगी, [3]पात्र)

झाड़ू (स्त्री) बुहारी, सुहनी। मकान का कूड़ा वग़ैरा झाड़ने की चीज़। एक ख़ास क़िस्म की घाँस की सींकों, बांस की तीलीयों, खजूर के पत्तों और इसी किस्म की चीज़ों से हस्बे ज़रूरत छोटी बड़ी बना ली जाती है। **मुट्ठा** झाड़ू के सिरों की बंदिश यानी झाड़ू का बंधा हुआ सिरा। **देना** झाड़ू से किसी जगह को साफ करना। **फेरना** तबाही व बरबादी होना।

चूड़ा (पु0) देखें भंगी।

चूड़ी (स्त्री) चूड़े की औरत। **देखें** भंगिन।

हाजत होना (क्रिया) पैख़ाना लगना, हगास की जुरूरत होना।

हलाल खोर (पु0) देखें भंगी।

हलाल ख़ोरी (स्त्री) हलाल ख़ोर की औरत। **देखें** ष्गिन।

ख़ाक रोब (पु0) सड़को या इमारतों का कूड़ा वग़ैरा झाड़ने वाला पेशेवर मज़दूर।

ख़ाक रोबन (स्त्री) ख़ाक रोब की औरत।

दस्त (पु0) पतला, बदहज़मी वग़ैरा का पैख़ाना।

दो वक़्ती (स्त्री) दिन में दूसरी मरतबा यानी शाम को पैख़ाना साफ़ करने की ख़िदमत। **प्रयोग** हलाल खोर कई दिन से दो वक़्ती को नही आ रहा। **कमाना** दिन में दूसरी मरतबा यानी शाम के वक़्त दो बारह पाख़ाना साफ करना।

ढलाव (पु0) मैला वग़ैरा डालने की जगह। **प्रयोग** घर का कूड़ा ढलाव पर डलवा दिया जाता है। **प्रयोग** मजाज़न कूड़े करकट और मैले का ढेर। **प्रयोग** कूड़ा जमा होते होते एक ढलाव लग गया है।

सुक़िल दान (पु0) कूड़ा डालने का ज़र्फ।

संडास (पु0) देखें पाख़ाना।

फ़ील पाया (पु0) पाख़ाने में क़दम्चे के सामने पानी का लोटा रखने को सुतून[1] की वज़अ़[2] की बनी हुई जगह। ([1]खम्भे, [2]आकार)

क़दम्चा (पु0) खुड्डी का पाखा या पाखे जिन पर उक्डू बैठते है।

कचरा (पु0) देखें कूड़ा।

करांची (स्त्री) मैला और कूड़ा वग़ैरा भर कर ले जाने की गाड़ी। हिंदुस्तान के बाज़ मुक़ामात[1] पर सामान भर कर ले जाने की बंद क़िस्म की गाड़ी। हिन्दुस्तान के बाज़ मुक़ामात पर सामान भरकर ले जाने की बंद क़िस्म की गाड़ी करांची कहलाती थी लेकिन देहली और नवाह देहली में मैला और कूड़ा ष्र कर ले जाने वाली गाड़ी के लिए यह लफ़्ज़[2] मख़्सूस[3] हो गया है। ([1]स्थानों, [2]शब्द, [3]विशिष्ट)

कमाना (क्रिया) पैख़ाना साफ करना, गू उठाना। **देखें** पैख़ाना कमाना। **प्रयोग** बारह बजने को आये अभी तक ष्गी कमाने को नही आया।

कमेरा (पु0) भंगी का नौकर या साथी जो किसी मुआव्ज़ा पर उसके साथ काम करे।

कूड़ा (पु0) कचरा, जुरूरियात से खारिज[1] बे मस्रफ़ व बेकार चीज़े, झड़न, छटन। दक्षिण में कूड़े को कचरा कहते है। शिमाली[2] हिन्द में कूड़े के साथ करकट बोला जाता है बमानी कंकड़ मिट्टी मिला हुआ कूड़ा। ([1]प्रयोग किया हुआ, [2]उत्तरी)

कूड़ा करकट (पु0) देखें कूड़ा। **प्रयोग।**

खत्ता (पु0) खाद बनाने की जगह, कूड़ा करकट और मैला वग़ैरा जमा करने का गड्ढ़ा जिन में उसको एक मुक़र्ररिह[1] वक़्त[2] तक दबा कर रखा जाता है ताकि गल सड़ कर मिट्टी बन जाये। ([1]निर्धारित, [2]समय)

खुड्डी (स्त्री) पाख़ाना में क़दमचों के दरमियान की जगह जिन में गू गिर कर जमा होता है।

गू गढ़ैया (स्त्री) मुज़्लः[1] पड़ने और जमा होने की महदूद[2] बनी हुई जगह। ([1]मल, [2]सीमित)

मुट्ठा (पु0) देखें झाड़ू। **प्रयोग।**

मेहतर (पु0) देखें ष्गी।

मेहतरानी (स्त्री) मेहतर की औरत, ष्गिन।

मैला (पु0) पैख़ाना, गू, फ़ुज़्लः गलीज़ चीज़।

हगास (स्त्री) गंवारी बोली में पैख़ाना फिरने की हाजत को हगास कहते है। **लगना** के साथ बोला जाता है।

हगना (क्रिया) पैख़ाना फिरना।

(इति)